सूचीपत्र ।

पितृपुत्रपवित्रात्मनेनमः ।

मुमुक्षुवृत्तान्त

अर्थात् एक हिन्दू यात्री का इतिहास ।

पहिला अध्याय ।

इस अध्याय में यात्री की जन्मभूमि और नगर और पहिली गति वर्णित होती है ।

मैं इस संसार के जंगल में घूमता हुआ एक स्थान पर आ निकला जहां पीपल के पेड़ की घनी घनी डालियों से सुहावनी छांह थी । वहां मैं अपना दुपट्टा बिछाकर लेट गया और ठंडी वायु के बहने से उसी समय मुझ को नींद आ गई । तब मैं स्वप्न देखने लगा । जब जागा तो मैं ने उस स्वप्न को उसी काल एक पुस्तक मे लिख लिया ।

मैं क्या स्वप्न देखता हूं कि पूरब से पश्चिम लों और उत्तर से दक्खिन लों अत्यन्त बसा हुआ एक बहुत बड़ा नगर है जिस का लंबान और चौड़ान सारी पृथिवी की सीमा के समान था । जिस प्रकार कि पृथिवी के अलग अलग देश हैं उसी प्रकार इस नगर के अलग अलग भाग थे । यह नगर देखने में अत्यन्त सुन्दर था और उस के निवासियों के सुख के लिये उस मे नाना प्रकार की सामग्री उपस्थित थी । उस नगर के बिस्तार में उपवन और बाड़ी और खेत और नदी और झील और पर्वत और समभूमि

ऐसी रीति से इधर उधर शोभित थी कि उन की शोभा देखने से मन मोहित हो गया। इस के अधिक इस नगर के निवासियों ने अपने सुखविलास के लिये सुन्दर सुखदायक स्थानों में और नदियों के तीर पर सुघाट और भवन बनाये थे। उस नगर के बहुधा स्थल अत्यन्त फलदायक और उपजाऊ थे और भांति २ का अन्न और फल और अनेक रंग के सुवासनायुक्त फूल और पुष्पभूषित वृक्ष चारों ओर शोभायमान थे। वृक्ष और उपवनों मे चित्र बिचित्र पक्षी मधुरी २ बोली बोल चहचहा रहे थे और पर्वत और चौगानो मे नाना प्रकार के पशु देखने मे सुन्दर अथवा कार्य्य के लिये सफल चारों ओर चरते चुगते मगन हो उछल कूद रहे थे। ऐसा कि जब मै ने पहिले इस नगर पर दृष्टि किई तो अपने मन मे कहा हे परमेश्वर तेरी रचना क्या ही बहुत है। तू ने इन सभो को बुद्धि से बनाया है। पृथिवी तेरे धन से पूर्ण है।

तब मै इस अत्यन्त बड़े सुन्दर नगर को अधिक बिचार से देखने लगा और क्या देखता हूं कि उस के ऊपर गंधक और आग से लदी काली घटा छाई हुई बरसने को सिद्ध थी और नगर के नीचे नरक का एक गढ़ा था। आकाश में बहुधा मेघो का गरजना और बिजुली का कड़कना हुआ करता था। फिर भूचाल आता और पृथिवी कांपती देख पड़ती थी। और कभी २ आग की ज्वाला नीचे से निकलती थी और जो साम्ने पड़ते उन को भस्म कर देती थी। मैं ने यह भी देखा कि बहुधा वह नगर भयंकर शीत और भयानक आंधी से व्याप्त था और इन व्याधियों के कारण रहने के लिये अत्यन्त बुरा देख पड़ा।

तब मै ने मन मे ठाना कि देखूं तो किस प्रकार के लोग इस में बस्ते हैं। जब मैं ने उस के अलग अलग भाग और

चैाक श्रोर गलियो को देखा तो उन को समस्त प्रकार के भिन्न २ जाति के मनुष्यों से भरे हुए देखा । हिन्दू श्रोर चीनिये श्रोर काबुली श्रोर अर्बी श्रोर पारसी श्रोर अंगरेज। जितने अलग अलग देशो के निवासी इस संसार में मिलते है सब के सब इस नगर के अलग अलग भागो में बसे थे । श्रोर इन सब जातों की रीति श्रोर व्यवहार श्रोर भाषा भिन्न भिन्न थी श्रोर उन के स्वरूप श्रोर रंग भी भिन्न भिन्न थे । मैं ने देखा कि वे कभी कभी आपस में झगड़ा श्रोर बखेड़ा करते थे श्रोर उसी रीति से डाह श्रोर द्वेष श्रोर शत्रुता श्रोर संग्राम भी उपजे । फिर भी कितने आपस मे मेल रखते थे श्रोर लेन देन श्रोर व्यापार के लिये नगर के चारो श्रोर घूमते फिरते थे। कितने विद्या श्रोर ज्ञान की खोज मे बड़े उद्योगी थे। श्रोर जिस रीति उन के स्वरूप श्रोर सांसारिक व्यवहार मे अन्तर था उसी रीति उन के धर्म श्रोर चाल में भी था। बहुतेरे तो निरे नास्तिक श्रोर अधर्मी श्रोर सासारिक थे । कितनों का धर्म अत्यन्त घिनैाना श्रोर अपकारी था श्रोर कितनों का भला श्रोर ज्ञानपूर्वक। श्रोर एक बड़े आश्चर्य्य की बात यह थी कि जिन का धर्म भला था उन मे से कितने बहुत बुरी चाल चलते थे श्रोर जिन का धर्म बुरा था वे कभी कभी भले मानुष श्रोर सत् पुरुष सुशील श्रोर बिश्वासी दिखाई दिये। परन्तु इन सब पृथक् पृथक् जातों का मूल स्वभाव श्रोर प्रकृत सिद्ध गुण एकही था। क्योंकि सभो का चैतन्य श्रोर हृदय श्रोर बिवेक एकही भांति का था श्रोर इन की इन्द्रियां श्रोर मन की इच्छा श्रोर स्नेह एकही प्रकार के थे। श्रोर एक प्रत्यक्ष बात में जितने जातिगण उस नगर में बसते थे सब के सब समान थे। क्योंकि उन सभो को क्या बड़े क्या छोटे क्या ज्ञानी क्या मूर्ख क्या धनी क्या कगाल

क्या काले क्या गोरे एक अति बुरा रोग लगा था जो देखने मे कोढ़ की नाईं था। उस रोग के कारण किसी के शरीर मे आरोग्य नहीं था और बहुतेरो की खाल चुटीली और चिन्ह और सड़े हुए घावो से अत्यन्त घिनौनी देख पड़ी। मै यह दशा देख बड़े आश्चर्य्य मे हुआ कि यद्यपि उस नगर के बहुत से लोग कभी कभी अपने मित्रो के कोढ़ को देखके घिन करते थे तथापि अपनी उस अपवित्र घिनौनी दशा से बहुधा निश्चिन्त थे। इसी कारण से सब लोग अपने अपने व्यामोह मे तत्पर रहते और कोई अपने दुःख का उपाय न खोजता था क्योंकि वे यह भावना करते थे कि हम चंगे है। इस लिये वैद्य का खोज नहीं करते थे न उन्हों ने अपने घावो को धोया और न बांधा। यों सुलेमान महाराज की यह बात सच्ची प्रगट हुई कि मनुष्य के संतान के स्वभाव मे जब तक वे जीते रहते वरन मृत्यु लो पागलपन उन में समाया रहता है।

इस पागलपन का प्रसिद्ध लक्षण यह था कि यद्यपि वे लोग अहंकार की माया से ऐसी चाल चलते थे कि मानो हम पवित्र भले चंगे हैं तथापि अपने मन ही मन मे सन्देह और भय मानते थे कि हम को भी जैसा औरो को यह रोग लगा होगा और निकेवल अपने को छल देने से और अपनी आंखों के मूंदने से सुख पाते थे। फिर भी कभी कभी जब किसी विपत्ति और क्लेश के मारे उदास हो गये अथवा मृत्यु की चिन्ता जब उन के मन मे आ गई तब उसी बुरे रोग की चिन्ता भी उन को अत्यन्त व्याकुल कर देती थी क्योंकि ऐसी भयंकर दशा मे वे अपने को छल दे नहीं सकते थे। और इस लिये उन्हों ने अनेक प्रकार का उपाय निकाला जिस्से यह व्याकुलता मिट जावे। परन्तु जब वे इस रोग की औषध के लिये सच्चे परमेश्वर के पास

जाने नही चाहते थे अथवा उस के पास जाने का मार्ग नही जानते थे तो एक एक की मन की भावना जैसी थी उस ने वैसा ही किया। कितने आप को ज्ञानी ठहरायके मूर्ख बन गये और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को बिनाशमान मनुष्य के और पक्षी पशु और कीड़े मकोड़ों के स्वरूप से बदल डाला और उन की मूर्त्तियो को बनाके उन की पूजा किई। कितनों ने स्नान और तपस्या किई। कितनों ने यह समझके कि बिना लोहू बहाये पाप की क्षमा नही हो सकती है मेढ़ों और बकरो और भैंसों को अपनी यज्ञवेदी पर चढ़ाया। और कितनों ने अपने लड़कों को भी न छोड़ा बरन उन का बलिदान अपने देवताओ के साम्ने किया। और अपने को भी अनेक प्रकार का दुःख इस इच्छा से दिया कि हमारा पाप कट जाय और यह अति बुरा रोग हमारे शरीर से मिट जाय।

जब कि मैं इस दशा को देख सोच के सागर में डूब रहा था तो एक मनुष्य कांख में पोथी लिये मेरे समीप आया उस का नाम ज्ञान था। मुझ को कहा कि तू क्या सोचता है। मै ने उत्तर दिया कि महाराज इस नगर को और इस के निवासियों को देख रहा हूं और सोचसागर में डूब रहा हूं। इस नगर का नाम क्या है और इस के निवासियों की कैसी दशा है। और उन को कैसा रोग लगा है। और इस का किस प्रकार अन्त होगा। जो आप के पास ज्ञान हो कृपा करके मुझे बताइये तो मेरे मन का सन्देह जाता रहे।

तब उस ने मुझ से कहा कि इस नगर के दो नाम हैं। एक संसारपुर क्योंकि सारे संसार के मनुष्य इसी में रहते हैं। दूसरा ईश्वरीय क्रोधपुर क्योंकि इस के निवासी पापी होके और सच्चे परमेश्वर को छोड़के उस के क्रोध के तले

पड़े हैं और इसी कारण से यह काली घटा नगर के ऊपर झूम रही है। और सारे निवासियों का यह रोग जो देख पड़ता है सो सचमुच शारीरिक रोग नहीं है मन का रोग है और बहुधा यह मनुष्य की दृष्टि से छिपा रहता है। परन्तु परमेश्वर अन्तर्यामी है और उस की दृष्टि से यह कभी नहीं छिपता है। और अब उस ने ऐसा किया है कि इन के मन का रोग जो पाप है उन के शरीर मे प्रगट होय अर्थात् उन की अंतर्गति प्रत्यक्ष रीति से देख पड़े। इस लिये ये समस्त लोग रोगी और कोढ़ी दृष्ट आते हैं।

तब मैं ने कहा हे नाथ आप ने कृपा करके मुझे नगर का नाम और रोग का समाचार तो बताया। अब एक और बात पूछता हूं कि यह रोग इन लोगों को सदा से हुआ कि वे आरंभ में पवित्र और भले चंगे थे।

तब उस मनुष्य ने अपनी कांख से पोथी निकाली और कहा कि यह पोथी श्रीमुखवचन है और यही पुस्तक है जिसे मसीही अर्थात् ख्रिष्टियान लोग परमेश्वर का वचन अथवा धर्म्मशास्त्र कहते हैं। इस पुस्तक मे संपूर्ण वृत्तान्त लिखा है कि परमेश्वर ने आरंभ मे मनुष्य को पवित्र और शुद्ध और भला चगा उत्पन्न किया। और किस रीति से आदि पुरुष और उस की स्त्री परीक्षा मे पड़के पापी हो गये और इस कारण उन के समस्त सन्तान पापी उत्पन्न होते आये हैं इस का वर्णन भी है। और इस रोग की एक बड़ी औषध का समाचार भी है जिसे परमेश्वर ने आप अवतार लेके ठहराया है। और यह एक ऐसी औषध है कि जो कोई मन और अन्तःकरण से उस पर विश्वास लावे तो निश्चय भला चगा हो जायगा।

तब मैं ने चाहा कि उस औषध का सपूर्ण वृत्तान्त पाऊं

परन्तु पहिले उस मनुष्य से पूछा कि इस नगर में कितने निवासी हैं और नगर के उस भाग का क्या नाम है जो साम्ने देख पड़ता है । उत्तर की ओर बड़े ऊंचे पहाड़ है और उन की चोटियों पर हिम पड़ा है । बीच में बड़ी बड़ी नदियां है और अनेक गृह और मन्दिर बने है ऐसा सूझ पड़ता है कि उस भाग के भी बहुत ही निवासी होंगे । कृपा करके यह भी मुझे बतलाइये ।

तब उस ने कहा कि सारे नगर के निवासी १२० करोड मनुष्य होंगे । और उस भाग का नाम जो साम्ने देख पड़ता है भारतखंड वा हिन्दुस्तान है । उस मे पचीस करोड़ मनुष्य बसे होगे जिन मे चार करोड़ मुसलमान और थोड़े अगरेज आदि है । और मन्दिर जिन्हे तू देखता है हिन्दुओं के देवताओं के मन्दिर है । वे अगणित है परन्तु इस मे क्या आश्चर्य्य है क्योंकि ३३ करोड़ देवते बताते है अर्थात् एक एक हिन्दू के लिये चार चार देवते कल्पे हुए हैं । और हिन्दू अपने रोग से पवित्र होने की आशा मे इन समस्त देवताओ की पूजा बड़े यत्न से करते है और अनेक प्रकार का दुःख भी सहते है । परन्तु सच्चे परमेश्वर को छोड़ किसी को इतनी सामर्थ्य नहीं है कि इस रोग को दूर करे ।

तब मै पूछने लगा कि क्या परमेश्वर की बड़ी औषध का समाचार उन के पास नही है । परन्तु मैं बोलता ही था कि वह मेरी दृष्टि से गुप्त हो गया और मुझ को स्वप्ने ही मे छोड़ गया । यों अकेला होके फिर मै नगर के उसी भाग को जिस में हिन्दू रहते हैं देखने लगा । और मैं ने एक मनुष्य को देखा जो बड़ी धूम धाम से रहता था । उस का नाम संसारी था और वह उस टोले में बड़ा नामी था । उस के यहां बड़ी संपत्ति थी और बहुत से बड़े बड़े गृह और उपवन और कुए और तलाव और फलवान पेड़ों की

अति सुहावनी बाटिका जिन मे सब प्रकार के फल लगे थे। और वह बहुत से दास दासी और गो भैंस बकरी और सोना चांदी का स्वामी था और बहुत से गवैये और नर्तक और सब प्रकार के बाजे भी रखता था ऐसा कि वह उस नगर के बहुत मनुष्यों से बड़ा श्रीमंत था। परन्तु वह बड़ा घमंडी था और अनाथ और रांड़ों पर अन्धेर करता था और अन्याय के धन से उस का घर भरा था।

यद्यपि यह मनुष्य ऐसा घमंडी था और उस के वस्त्र बहुमूल्य और रंगीले चंगीले थे और उस का शरीर सुगंध तेल से मला जाता था तौभी उस कोढ़ रोग के कारण जो उस के चमड़े के भीतर लगा था वह अत्यन्त पोच और घिनौना दिखाई देता था। फिर भी उस नगर के और लोगों के समान यह मनुष्य अपने उस घिनौने रोग से अनजान था। बरन आप को उस रोग से अत्यन्त पवित्र समझता था और जो कोई ऐसा साहस करता कि उस्से उस रोग का बखान करे अथवा उस की औषध की युक्ति उसे बतावे तो उस्से वह निपट अप्रसन्न होता था। परन्तु अपने पड़ोसियों मे इस रोग का चिन्ह देखने को यह मनुष्य अन्धा न था क्योंकि जब किसी के शरीर मे जो इस के नाते मे न थे यह रोग देखता तो बहुत अप्रसन्न होता।

जब लों मैं उस मनुष्य को देख रहा था अपने जी में कहता था कि ऐसा मनुष्य किस रीति से चंगा हो सकता है और अपनी दुर्दशा का स्वरूप इस को क्योंकर जान पड़ेगा। इतने मे ईश्वर ने उस के घराने पर अचानचक एक कठिन बिपत्ति डाली अर्थात् कि उस का एक परम मित्र जो अत्यन्त आत्मीय प्रिय था इस रोग के मारे अकस्मात् मर गया। परन्तु देखो ईश्वर ने उस को जो जीता रहा उस आपत्ति से बड़ा ही परीक्षायुक्त फल पहुंचाया। क्योंकि

उस के कारण वह जो आगे निश्चिन्त और असावधान था अब बड़े सोच बिचार से पवित्रता और शुद्धता का खोज करने लगा ।

पहिले ईश्वर ने अपने पवित्रात्मा की सामर्थ्य से संसारी को उस की अपवित्र और घिनौनी दशा से सज्ञान कर दिया और उस के हिय की आंखे खोली जिस्तें वह अपनी मलीनता को देखे । उस समय उस ने अपने समस्त पापों और कुकर्मों का स्मरण किया और वे उस को भारी बोझ के तुल्य जान पड़े कि वह उठा न सकता था । अब उस को अपने पूर्व सुख से तनिक भी सन्तोष न मिला क्योंकि उसे सूझ पड़ा कि ईश्वर के क्रोध की घटा इस नगर पर छा रही है । फिर उस ने समझा कि पृथिवी भी कांप रही है । तब मै ने उसे चिल्लाते और यह कहते सुना कि हाय मैं अपने बचाव के लिये क्या करूं और किधर भागूं क्योंकि मेरे पापों का बोझ जो मुझ पर पड़ा है सो मुझे नरक मे डुबावेगा ।

इति मुमुक्षुवृत्तान्तवर्णने प्रथमोऽध्यायः ।

दूसरा अध्याय ।

इस अध्याय में एक ब्राह्मण इस यात्री के पास आके उस को चंगा करने का उपाय बतलाता है ।

अब मैं ने स्वप्न मे देखा कि जब संसारी अपने पापों के बोझ के नीचे दबा हुआ एक गली मे पड़ा अपनी शोकार्त्त दशा पर रो रहा था इतने में एक वृद्ध जिस के सिर पर चोटी थी और गले मे जनेऊ और माथे पर तिलक था उस के समीप आया । मै ने उस के स्वरूप से

जाना कि यह ब्राह्मण है बरन उस के हाथ में वेद की पोथी भी थी।

उस ब्राह्मण ने उस मनुष्य से जो पृथिवी पर पड़ा था पूछा कि तेरी क्या दशा है और क्यों इस प्रकार धूल पर पड़ा हुआ चिल्लाके रो रहा है।

संसारी ने उत्तर दिया कि मैं एक बड़ा धनवान मनुष्य हूं और थोड़े दिन हुए कि मै इस नगर मे बड़ा प्रतिष्ठित था। परन्तु अब मै उन पदार्थों से जो आगे मुझे प्रसन्न करते थे कुछ लाभ नही देखता। क्योंकि मै अपने पापों के बोझ के कारण जो इतना भारी है कि मै उठा नही सकता दबा जाता इस हेतु से धूल पर पड़ा हूं। यदि मुझे इस बोझ से छुड़ानेवाला कोई सहायक न मिले तो निश्चय यह मुझे नरक में डुबा देगा। और देखो मेरे संपूर्ण शरीर मे एक अत्यन्त बुरा रोग व्याप्त है ऐसा कि कोई अंग नहीं है जो सड़ न गया हो। मै संपूर्ण अपवित्र और घिनौना हूं और जानता हूं कि ईश्वर मुझे देखके घिनावेगा।

ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि मुझे बता तो कि पहिले तेरे चित्त मे क्योंकर यह समझ आई। क्योंकि तेरे कहने से यह ध्वनि निकलती है कि तू ने उन बातो का सब दिन सोच नही किया।

संसारी ने कहा कि आगे मै ने और लोगो की रीति पर अपनी अवस्था सुख और चैन मे काटी इस के भिन्न और किसी बात पर मन न लगाया योंहीं मेरी अवस्था की धारा मन्द जल प्रवाह की भांति बहकर अदृश्य समुद्र मे मिलने को जाती थी। मै ने कभी अपनी भविष्यत दशा का कुछ सोच बिचार न किया। अन्त को अचानचक मेरे घराने पर अत्यन्त आपदा पड़ी यहां लो कि एक

मेरा निपट ही प्यारा मित्र अकस्मात् मर गया जिस्से मेरा चित्त छिद गया। मै उस आपद को निरखते ही मनुष्य की दशा का भली भाति सोच करने लगा और होते होते मुझ को अपनी दुर्दशा का ज्ञान हुआ। और तब मै ईश्वर की महिमा और उस के गुणों का ध्यान करने लगा। इन्ही बातों का बिचार करते २ मुझ पर यह प्रगट हुआ कि जिस की शक्ति और बुद्धि ऐसी है कि उस ने स्वर्ग और पृथिवी को बनाया निश्चय वह निर्दोष और परिपूर्ण अत्यन्त पवित्र न्यायी ज्ञानी दयावान् पूर्णप्रतापी सर्वज्ञ धर्म्ममय और सर्वव्यापक होगा। और ईश्वर के इन गुणों का बिचार करते २ मैं अपनी अपवित्रता और भ्रष्टता को भली भांति देखने और इसी कारण मै अत्यन्त दुःख के साथ यह कहके रोने लगा कि मै जो अपवित्र और घिनौना और जन्म कर्म से आज्ञाभंगी और ईश्वर से भी अपने को अत्यन्त प्रेम करनेवाला हूं क्योंकर अपने ईश्वर के साम्हने जाने का साहस करूं। और जब मेरी मृत्यु आवेगी और मै इस अस्थिर शरीर को छोडूंगा तो निश्चय मुझे उस के समीप जाना पड़ेगा। अब जो मै उस समय से पहिले अपने पापों के प्रायश्चित्त के लिये कोई युक्ति और सत्य मुक्तिदाता न ठहराऊं और अपने तई पवित्र और निर्मल न करूं तो निश्चय है कि मुझ को सदा नरक में रहने की आज्ञा होगी।

तब मै ने देखा कि संसारी फिर अत्यन्त रो रोके आह मारने लगा। उस ब्राह्मण ने यह कहके उसे भरोसा दिया कि हे मेरे बेटे मन मे ढाढ़स बाध तेरी दशा औरों की दशा से बुरी नहीं क्योंकि वर्त्तमान की जितनी अधमता और अपवित्रता है सब इस शरीर से संबन्ध रखती

है जिस्से तेरा आत्मा जो ईश्वर के आत्मा का एक अंश है मिला है। और इस शरीर संबन्धी दवाव से छुटकारा पाने के कई एक प्रकार हैं। क्या तू निर्जनस्थान मे रहना अथवा शरीर को तपस्या से कष्ट देना किंवा प्रकृति को सर्व वस्तु से रोकना अथवा पूजा पाठ मे चित्त लगाना किस की चाहना रखता है।

संसारी ने ब्राह्मण से जब ये बाते सुनी तो उस ने कुछ ढाढ़स वाघा और उस के शिष्य होने का अभिलाप किया। तब मै ने देखा कि ब्राह्मण एक पेड़ की छाह मे बैठ गया और ससारी भी उस के समीप जा बैठा और वे आपस मे यों बाते करने लगे।

ब्राह्मण ने कहा। ऐसा जान पड़ता है कि तुम ने अब लों अत्यन्त अज्ञानता मे अपना समय बिताया और कभी ईश्वर का नाम भी न पहिचाना। अब तुम उस के तत्व के विषय में प्रमाण लाने का गर्व करते हो।

संसारी ने अपनी आखें नीची किई और अपनी बुद्धि की मन्दता का अंगीकार किया और शिक्षा पाने के लिये अपना अभिलाष प्रगट किया।

ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि सब से बड़ा ब्रह्म है। ब्रह्म और जीव अर्थात् आत्मा एकही है। अनात्मा और आत्मा भिन्न हैं। सृष्टि का तत्व आत्मा नही है अनात्मा है। इस लिये जितने जीव हैं सब के सब वही ब्रह्म हैं। वह संपूर्ण संसार का आत्मा है। और वह जो प्राण तुम में है उसी का एक अंश है। ब्रह्म अविनाशी और कूटस्थ है। यह संसार जो उस की सृष्टि है चंचल और विनाशमान है।

संसारी ने कहा कि मेरी बुद्धि मे यह आता है कि मेरे प्राण और आत्मा और शरीर सब के सब ईश्वर के

रचित हैं और इस अर्थ से ईश्वर का अंश होवे तो होवे। परन्तु मुझे निश्चय है कि मै ईश्वर से भिन्न हू क्योंकि उस का एक भी गुण मुझ में पाया नहीं जाता। वह सर्वज्ञानी है मैं अल्पज्ञानी हूं। वह सर्वशक्तिमान है मै निर्बल हूं। वह पवित्र है मै अपवित्र हूं। यों उस मे और मुझ में समानता नहीं है बरन एक प्रकार की परस्पर बिरुद्धता है। क्योंकि मेरा मन कहता है कि मैं ने उस की आज्ञा को उल्लंघन किया और मेरी इच्छा उस की इच्छा से नहीं मिलती और उस का स्मरण और प्रेम मेरे हृदय मे नहीं रहता है। और आप भी अब कह चुके हैं कि तुम ने ईश्वर का नाम नहीं पहिचाना इस दशा में मै उस का एक अंश किस प्रकार से हो सकूं।

ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि सच बात यह है कि जब प्राण इस बिनाशी शरीर मे आता है तो ईश्वर से जो संपूर्ण भलाई का मूल है भिन्न हो जाता है। और इस संसार के अनेक जन्मान्तरों में भिन्न २ प्रकार की दशा पर जब लों ईश्वर में फिर जा मिले तो उस से भिन्न और दुःखी रहता है परन्तु जब यह यों भ्रमण कर चुके तो अन्त को ईश्वर के आत्मा मे जा मिलता है। यही परमानन्द है जिस के उपार्जन को हम सब अन्तःकरण से चाहते है। इसी आनन्द पाने के अभिलाष मे योगी जन अपने स्वासों को रोकके अपने जीवन भर तपस्या करते है।

संसारी ने उत्तर दिया कि क्या आप का अभिप्राय यह है कि जब आत्मा आदि परब्रह्म का अंश होके उससे भिन्न हुआ और फिर उसी में लीन हो जावे तो उस की जीवावस्था की सज्ञानता नष्ट हो जायगी अर्थात् उस दशा में अपने को परब्रह्म से भिन्न नहीं जानेगा बरन अपनी विभिन्नता का ज्ञान सर्वत्र नष्ट कर देगा।

ब्राह्मण ने कहा हां हमारी धर्मपुस्तकों से यही शिक्षा मिलती है। और हमारे आत्मा को इस संसार से मुक्ति पावने और ईश्वर से लीन हो जाने का यही फल और ऐसाही आनन्द होता है जिस का वर्णन नही हो सकता है। जब एक जन्म मे यह प्राप्ति न हो तो और जन्म मे इस का खोज करना चाहिये तब यह मिले।

तब ससारी ने कहा कि मेरी मूर्खता को क्षमा कीजिये परन्तु मेरी अज्ञान समझ मे ऐसा भासता है कि इस शिक्षा के अनुसार सारी सृष्टि की रचना और विशेष करके मनुष्य की उत्पत्ति एक वृथा और निष्फल कार्य्य ठहरती है जो परब्रह्म के योग्य नहीं। क्योंकि उससे बिपत्ति और पाप और पीडा और मृत्यु को छोड़ और कुछ लाभ नही निकलता है। इस दशा मे जो मनुष्य जाति रची भी न जाती तो और भला होता। क्योंकि जब लों अपनी व्यक्ति से सज्ञान रहता तब लों पीड़ित और अज्ञान और भ्रष्ट रहता। और जब अगणित दुःख उठाय और अनेक जन्म पायके और मौनीय तपस्या करके अन्त को परब्रह्म मे लीन हो जाता तब अपनी व्यक्ति का ज्ञान सर्वत्र नाश कर देता और अपने आनन्द से अज्ञानी और अचेत हो जाता बरन अपने होने का भी ज्ञान उस को नही रहता। इस मे क्या कल्याण है सो मुझ अज्ञान को सूझ नही पड़ता। और ऐसी सृष्टि से जिस का यह व्यवहार है परब्रह्म की बुद्धि और दया और महिमा कैसी प्रगट होती है इस को मै किसी रीति समझ नही सकता हूं।

ब्राह्मण ने कहा ऐसे अनर्थ वचन कहने से अपनी जीभ को रोक। क्या तू उस दशा मे पहुचने को तुच्छ समझता है जिस के लिये पुण्यात्मा योगी बड़े बड़े क्लेश

उठाते और अपनी संपूर्ण इच्छा रोकते और इन्द्रियों को अपने अधीन करके आयु पूरी करते हैं। परन्तु मैं जानता हूं कि तू ने अब लों ऐसे महापुरुषों की पवित्रता और प्रसन्न अवस्था और योग्यता नहीं जानी न उस के बूझने की सामर्थ्य रखता है उन के समीप तो सोना लोहा और पत्थर एक से हैं वे मैत्री और बैर मे मान और अपमान मे शीत और उष्ण में दुःख और सुख मे सदा एक रस रहते हैं।

संसारी ने कहा आप मेरे अपराध को क्षमा कीजिये क्योंकि मैं ने आप को अपना गुरु ठहराया है और मैं आप की शिक्षा से प्रसन्न हू। हां मैं आप के चरणामृत पीने को सिद्ध हूं परन्तु मैं बिन्ती करता हूं कि ईश्वर के गुणो का कुछ और वर्णन कीजिये।

ब्राह्मण तब ब्रह्म की उस दशा का वर्णन करने लगा जब कि वह प्रत्येक युगों और कल्पान्तर में शयन कर और समस्त दशा से निश्चिन्त होके चैन से सुख किया करता है। जब कितेक युग बीत जाते हैं तब वह उठके सृष्टि का प्रारभ करता है। उस ने यह भी वर्णन किया कि जब संपूर्ण जाति के भिन्न २ आत्मा शरीर ग्रहण करते हैं तब उन के लिये भिन्न २ कर्म्म ठहराये जाते हैं और एक एक आत्मा वा स्वभाव का गुण जो कुछ होय सो उसी के भाग के चिन्ह, ठहरते हैं। ऐसा कि उन चिन्हों के देखने से वे जो कुभाग के अधीन हैं भाग्यवानों से भिन्न हो सकते हैं।

तब मै ने देखा कि जब ब्राह्मण यह सारा विषय कह रहा था तो संसारी सुन्ते ही उदास हुआ। और अपने हाथ जोड़े आंखें नीची किये हुए पापमोक्षण के खोजी के निमित्त कोई शांतिदायक बचन सुन्ने की इच्छा से

बड़ी अभिलाषा के संग इस वृत्तान्त को सुनता रहा। परन्तु जो बाते ब्राह्मण ने कही उन मे कोई बात ऐसी न थी जिस्से निश्चय हो कि किस की सहायता से पापों के दण्ड से छुटकारा मिल सकता है अथवा किस प्रकार से उस की अपवित्र प्रकृति पवित्र किई जावे। अंत को उस ने उस ब्राह्मण से कहा। महाराज जो बातें आप ने कहीं उन से ईश्वर के संग मिल जाना अर्थात् संपूर्ण दुःखो से जो इस वियोग की दशा मे हम उठा रहे हैं भली भाति छूट जाना यही तो संपूर्ण धर्म्मों का सार प्रगट होता है। और हमारी बातचीत के प्रारंभ मे आप ने कहा कि उस अंतावस्था को पहुंचने के बहुत से प्रकार हैं अर्थात् निर्जनस्थान मे रहना और शरीर को क्लेश देना प्रकृति को वश करना अथवा पूजापाठ में लगे रहना। मैं प्रसन्न हूं कि अब मुझे क्या करना योग्य है आप मुझ को शिक्षित करे और मुझे निश्चय है कि मै आप का बहुत भला शिष्य निकलूंगा।

ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि ब्रह्म उसी को मिलेगा जो उस के ध्यान मे लगा रहेगा। जो योगी जङ्गल मे अकेला रहता है और सारे दिन ईश्वर के ध्यान मे काटता है और तपस्वी जो बड़ी तपस्या के समय मे ध्यान करता है दोनों इस नियम से एकही सेवा करते हैं और उन को एकही प्रकार का फल मिलेगा। अर्थात् कि दोनों अपने जीवन का अवश्य व्यवहार करके अपना संपूर्ण प्रेम ब्रह्म ही पर लगाये रहे और किसी प्रकार के पापों से कलङ्कित न होवें जैसा कमल का पत्ता जल मे रहके उस्से कलङ्कित नहीं होता।

संसारी ने कहा कि तब तो केवल ब्रह्म का भजन करना मुझे आवश्यक है।

ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि यह बात तुम्हारी समझ में आ जावे कि हम लोग ब्रह्म को निष्केवल आत्मिक समझके नहीं परन्तु किसी आकार के साथ मिलाके उस की पूजा करते हैं। सारा संसार उसी की ज्योति से भरपूर है इस लिये जिस को बड़ी सामर्थ्य मिली है अथवा जिस में विशेष करके परब्रह्म की शक्ति प्रगट होती है ऐसे प्राणी की भी पूजा करनी हम को योग्य है। हमारे पुराणों में लिखा है कि जब ब्रह्म ने संसार की सृष्टि करने की इच्छा किई तो उस ने अपने तईं भिन्न भिन्न रूप में प्रगट किया। उन में से जो बड़े और विशेष रूप हैं सो शिव विष्णु और ब्रह्मा है। और उन्ही तीन बड़े बड़े देवताओ मे से अत्यन्त छोटे छोटे देवते निकले हैं जिन की पूजा हम सब करते है और ये देवते ब्रह्म के कई एक गुणों की समता रखते है। जैसे कि उस के गुण संसार के सृष्टि स्थिति संहार मे देख पड़ते हैं उन्ही गुणों की हम लोगों ने भिन्न भिन्न प्रतिमा बनाई हैं। इस लिये कि पूजा करनेवाले का मन उन में लगे और उन के गुणों का भली भांति ध्यान कर सकें।

संसारी ने कहा कि क्या ये देवते मुझ को मेरे पापो के बुरे फल से बचा सकते है। क्योंकि मैं एक पापी हूं जिस के ऊपर मृत्यु की आज्ञा दिई गई है और मै ऐसे मनुष्य की खोज मे हूं जो मेरी रक्षा करने को सामर्थी हो और मेरे बचाने को अङ्गीकार करे।

ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि हमारा मत यह है कि एक एक इन छोटे देवताओं में से अपने पूजको को अनन्त दुःखों से बचाने को सामर्थी है परन्तु इस नियम से कि वे अपना संपूर्ण बिश्वास उन पर रखे। जो कोई संसार के पदार्थ की चाह करे तो उसी देवता से जिस का विशेष

कार्य्य देने दिलाने का है विज्ञप्ति करे । अब हम बहुत बाते न करेंगे क्योंकि मै ने इतनी बाते कही हैं कि तुम उस धर्म के वृत्तान्त को जो तुम्हारे बाप दादों का धर्म था भली भांति जान सको । मेरे पीछे चले आओ मैं तुम्हारे पापों का बोझ उतारने की युक्ति ठहराऊंगा और तुम्हे एक युक्ति भी बताऊंगा जिस्से तुम अपने गुप्त रोग से पवित्र हो जाओ ।

तब ब्राह्मण वहा से चला और संसारी उस के पीछे हो लिया परन्तु वह ऐसा धीरे धीरे चलता था कि मानो भारी बोझ लिये हुए है । निदान वह एक बड़ी नदी के तीर आया जिस के तट पर बहुत से शिवालय और मन्दिर बने थे । और उन के साम्ने पत्थर की सीढ़ियां क्रम क्रम से नदी के तीर लो बनी थी और उन सीढ़ियों की दोनों ओर बड़ के पेड लगे थे जिन की छाह तले यात्री लोग बैठके पूजा करते थे ।

ब्राह्मण ने ससारी से कहा । इस पवित्र नदी का नाम गंगा है यह एक देवी है और हिमाचल की बेटी है । जो कोई हृदय से इस का ध्यान करे यद्यपि सैकड़ों कोस इस पुण्यदायक नदी से दूर रहता हो तौभी वह अपने पापों से छुटकारा पाता और बैकुंठ मे जाने के योग्य हो जाता है । ३५ लाख तीर्थों के स्थान है सब इसी गंगा से सबंध रखते हैं और जो इस का दर्शन करे अथवा इस मे स्नान करे उस मनुष्य को संपूर्ण तीर्थों का फल मिलता है । कैसाही भारी पाप होय गोहत्या और ब्रह्महत्या अथवा मद्यपान सब गगा मे स्नान करने से धोया जाता है ।

तब ब्राह्मण ने संसारी को आज्ञा किई कि गंगा जी मे चढ़ाने के लिये धूप दीप अच्छत और मिठाई कपड़ा और फूलो की माला ले आ सो वह लाया । तब उसे

बताया कि इस समस्त सामग्री को सब देवता और मछली घड़ियाल मेंडक पनियासांप जोक घोघा सीपी प्रभृति जलचरो को पुकार पुकारके उन के निमित्त नदी में अर्पण कर। इस के उपरान्त और पूजा की रीतें को कराय ब्राह्मण संसारी को गंगा के तीर पर छोड़के थोड़ी वेर लो किसी ओर चला गया।

परन्तु मैं संसारी को देखताही रहा और क्या देखता हूं कि वह गंगा के तीर पर उन्ही पेड़ो की छाह तले रहने लगा और प्रतिदिन नाभिपर्यन्त जल मे खड़ा होके पूजा पाठ को यत्न और नेम से किया करता और समय समय में मज्जनपूर्वक स्नान भी करता था। योगियों और सन्यासियो को जो गंगा में स्नान करने को आते दान भी देता था और उस ब्राह्मण को भी बहुत सी गुरु-दक्षिणा देके प्रसन्न करता था।

इति मुमुक्षुवृत्तान्तव्याख्याने द्वितीयोऽध्यायः।

तीसरा अध्याय।

इस अध्याय में ब्राह्मण के प्रथम उपाय से यात्री अपना मनोरथ न पायके उस्से और शिक्षा लेता है।

तब मै अपने स्वप्ने मे बड़े यत्न से देखता रहा कि क्या संसारी की उदासी और क्लेश कुछ घटता जाता है कि नही अथवा उस के स्वरूप मे शान्ति का नवीन बल वा सन्तोष का कोई चिह्न देख पड़ता है किम्वा उस की रोग से चंगा होने की आशा संपूर्ण होती है कि नही। परन्तु ऐसे कल्याण का कोई लक्षण मेरी दृष्टि में नहीं आया वरन उस का मुख आगे से भी अति शोकित और

उदासीन देख पड़ा। तब मेरे मन मे सन्देह आया कि क्या जाने उस ब्राह्मण का उपाय यद्यपि उस ने उस का ऐसा वर्णन किया था तथापि वृथा और निष्फल ठहरा है। इतने मे वही ब्राह्मण उस दुःखी के पास आके पूछने लगा कि अब तुम्हारी क्या दशा है और गंगा देवी के पुण्यप्रताप से तुम्हारा कैसा कल्याण हुआ।

संसारी ने उत्तर दिया कि हे गुरु जी मैं निराश हो गया हू क्योंकि गंगा के पवित्र जल से अब लों मुझ को कोई मानसिक लाभ प्राप्त नही हुआ और बड़ा सन्देह भी है कि कभी कुछ न होगा।

तब ब्राह्मण ने कहा। बड़ा आश्चर्य्य है क्योंकि मेरी परीक्षित बात है कि सैकड़ो मनुष्यो ने जिन के अपराध तुम्हारे अपराधो से बड़े थे और जिन का रोग तुम्हारे कोढ से अत्यन्त घिनौना और निरौषध देख पड़ा जब मेरे कहने से गंगास्नान किया तो तुरन्त अपने को पवित्र और भला चंगा समझके हर्षित हो चले गये। तुम अपने को भला चंगा क्यो नहीं जानते हो।

तब संसारी ने कहा। मै औरो की गति नही जानता परन्तु अपने विषय मे यह जानता हू कि मेरी मूर्खता के कारण मेरे घाव सड़के बसाते हैं मुझ को ऐसा देख पड़ता है कि परमेश्वर के बाण मुझ मे लग रहे हैं और उस का हाथ मुझ को दबाये डालता है। इस लिये मैं निर्बल और क्लेशित हू और अपने मन की बेकली के मारे चिल्लाता हू। ऐसी दशा मे गंगाजल मेरा उपकार क्या करेगा और मै अपने को पवित्र भला चंगा कैसे समझूं।

तब ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि भाई मैं इस प्रकार की बात अच्छी रीति से समझ नही सकता हूं। परमेश्वर के बाण क्या बस्तु हैं और वह किस प्रकार से तुम को

दबाये डालता है । क्या तुम माया के बश में होके परब्रह्म का बिचार और कार्य्य जान सकते हो । मेरी शिक्षा क्यों नही मानते हो ये पाप जिन का वृत्तान्त तुम कहते हो सब के सब माया के कारण से हैं और उन के लिये ऐसा पीड़ित और शोकित होना ज्ञानी को योग्य नही है । जब तुम माया से छूटोगे तब तुम पाप और पुण्य दोनों को एक ही जानोगे क्योंकि दोनो का मूल एक ही है परब्रह्म दोनो को एक ही जानता है । इस लिये तुम को भी चाहिये कि ज्ञान के बल से अपने शोक और चिन्ता को दबा देओ और ज्ञानी की रीति पाप और पुण्य दोनों को एक ही बस्तु समझो ।

तब मैं ने देखा कि ब्राह्मण की इस शिक्षा से संसारी अत्यन्त व्याकुल हुआ और महा शंका का रूप बनके बोल उठा कि आप ऐसी शिक्षा को ज्ञान की शिक्षा कहते हैं मेरी अज्ञान समझ मे तो यह नास्तिक का मत देख पडता है । मेरे निरादर और तुच्छ वाक्य की क्षमा कीजिये परन्तु ऐसी बात सुन्ने से अत्यन्त भय और सन्देह मेरे मन मे आ गया है । जो पाप और पुण्य को एक ही कहता है सो रात और दिन को भी एक ही कहेगा और बैकुंठ नरक को एक ही मानेगा तो ब्रह्म मे लीन होना और माया के बश मे रहना ये दोनो भी क्यों एक ही न होगे । जो सच और मिथ्या को एक ही बतलाता है मैं उस की शिक्षा सत्य कैसे मानूं । यह तो अनहोनी बात है क्योंकि अपनी ही शिक्षा के अनुसार वह मिथ्या बोलता है और ऐसा शिक्षक जो उन्मत्त न हो तो निःसन्देह वह एक अत्यन्त बड़ा पाखण्डी होगा । तब वह हाथ जोड़ प्रणाम कर बोला कि नहीं नहीं गुरु जी ऐसी बात मुझ दुःखी को मत सुनाइये क्योंकि यह

तो ठट्ठा के तुल्य समझ पड़ती है। मेरा मन मुझ मे साक्षी देता है कि परमेश्वर पवित्र है और मनुष्य की भावना के अधीन नही है और मै पापी हूं और जब लो अग्नि और जल का मेल न होवे तब लो पाप और पुण्य का भी मेल नहीं हो सकता।

तब ब्राह्मण के मुख पर अप्रसन्नता के चिह्न दिखलाई दिये और अहंकार के बश हो वह कहने लगा कि भला यह तो बड़ा पण्डित हो गया वेद और शास्त्रो को भी पढा होगा तो किस लिये हम को अपना गुरु ठहराया। बतला तो यह उपदेश जो तू ने कहा है किस शास्त्र में लिखा है जिसते मै भी पढूं। जितने शास्त्र हम ने देखे हैं फिर भी इस प्रकार का ज्ञान किसी मे नही पाया। परन्तु शास्त्र का मूल ज्ञान जो हम ने तुम को बतलाया केवल ऐसे लोगो के लिये है जो उस के अधिकारी हैं और ऐसा देख पड़ता है कि तुम इस ज्ञान के योग्य नही हो।

तब संसारी ने उत्तर दिया। क्या आप सत्य कहते है कि यह शिक्षा शास्त्र मे लिखी है तो वही शास्त्र होगा जिस मे जीव के ईश्वरीय अंश होने का और ब्रह्म मे लीन होने का और आवागमन का बर्णन है। जो मै सच कहूं तो आप इस को बुरा न मानिये परन्तु जब से मै ने आप की शिक्षा सुनी तब से मेरे शोकित मन मे सैकड़ो सन्देह बढ़ते जाते हैं कि ऐसी शिक्षा किस प्रकार से परमेश्वर का ज्ञान हो सकती है। क्योंकि जिस रीति से मै जानता हूं कि मेरा आत्मा आप के आत्मा से भिन्न है उसी रीति मुझे निश्चय है कि मेरा आत्मा ईश्वर का अंश कधी न हुआ न है न होवेगा। और जो आप कहे कि तुम्हारा आत्मा मेरा आत्मा भिन्न नहीं दोनो एक ही

है तो हम चाहते हैं कि इस का दृढ़ प्रमाण भी लाइये आप के केवल कहने से यह सच्चा नहीं ठहरेगा। परन्तु इस का प्रमाण हो नहीं सकता है जैसे जो कोई कहे कि दो और दो के जोडने से पाच लब्ध होता है इस मे चाहे जितने प्रमाण वह लावे परन्तु कोई बुद्धिमान यह बात नही मानेगा क्योंकि यह अनुभवसिद्ध और प्रत्यक्ष प्रमाण है कि दो और दोके जोडने से चार लब्ध होता है। वैसे ही प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि आप का आत्मा और मेरा आत्मा भिन्न है और जो इस को न माने अथवा इस के प्रमाण के लिये प्रश्न करे सो प्रमाण का स्वरूप नही जानता है क्योंकि अपनी प्रकृति के मूलतत्व को झुठलाता है और ऐसा करके प्रमाण की जड़ को भी उखाड़ डालता है।

फिर अनेक जन्मों के विषय मे जो आप ने वर्णन किया मुझ को बड़ा सन्देह है कि किस प्रमाण से निश्चय हो सकता है। क्योंकि इस जन्म से पहिले किसी जन्म का तनिक ज्ञान मुझे नही है और किस पाप का दण्ड मै इस जन्म मे भोग करता हूं सो भी मै नहीं जानता हूं जिसते मैं पछताऊं और छूटने का उपाय रचूं। सो ऐसी अज्ञानता की दशा का दण्ड मुझे क्या गुणदायक है। जब पिता अपने पुत्र को दण्ड देता है तो उस को बतलाता है कि इस अपराध के कारण दण्ड हुआ जिसतें वह पछताके आगे को उससे अलग रहे। इसी रीति मै जानता हूं कि जो दण्ड मै अभी भोगता हूं सो इसी जन्म के पाप का दण्ड होगा क्योंकि उस पाप से तो अधिक भासता ही नही और किसी और जन्म का पाप मै नही जानता हू जिसते उस्से पछताऊं। और यह शिक्षा जो आप ने बतलाई है कि पाप और पुण्य दोनों एक ही हैं

उस के सुन्ने से भी मेरा जी थर्थराता है ऐसा न होवे कि इस भावना पर चलके मैं नरक मे पड़ूं। हाय वह शास्त्र पर जिस मे इस भाति की शिक्षा लिखी है परमेश्वर का बचन कैसे हो सकता है। आप कृपा करके मुझे इस का प्रमाण बतलाइये।

तब ब्राह्मण क्रोधित होके कहने लगा कि क्या मैं ने सच नही कहा कि यह बड़ा पण्डित हो गया अब तो शास्त्र का अपमान करता है। परन्तु हम यह नहीं समझते कि किस लिये तू ने हम को अपना गुरु ठहराया क्या यह भले शिष्य का व्यवहार है जिस का प्रण तुम ने पहिले दिया तुम्हारी इच्छा हो तो मै तुम्हे इसी दशा मे छोड़ जाऊं।

इस बात के सुनते ही संसारी निराश हो धरती पर गिरा और बिलाप करके रो रो और चिल्ला २ के कहने लगा। हे महाराज मुझ अधम पापी को अनाथ मत छोड़िये आप के बिना मेरा सहायक कोई नही है मै आप की शिक्षा मानूंगा जो मार्ग आप हमारे लिये बतलाइयेगा उसी मार्ग पर मै चलूंगा।

तब ब्राह्मण फिर प्रसन्न हुआ क्योकि मुझ को स्वप्ने मे ऐसा देख पड़ा कि यद्यपि वह क्रोध का रूप बना था तथापि अपने मन मे नही चाहता था कि ऐसे निराश और खेदित शिष्य को त्यागे। परन्तु उस ने अपनी प्रसन्नता प्रगट नही दिखलाई तनिक अहंकार के ढब से कहने लगा कि तुम्हारी दशा से ज्ञात होता है कि तुम्हारे पापो की अधिकाई के कारण गंगा ने तुम को पवित्र करने मे अंगीकार न किया। अब हम तुम्हारे लिये दूसरे देवता का भजन बतलावेगे हमारे पीछे चले आओ।

तब उस को उन देवालयों में ले गया जो नदी के तीर पर बने थे और मैं ने स्वप्न में देखा कि उन मन्दिरों के चौक बड़े चौड़े थे और तेतीस करोड़ देवताओं की मूर्त्ति उन मे थी ।

ब्राह्मण ने कहा कि इन्ही के सहारे से परब्रह्म ने जगत का पसारा है । उन मे से कई एक मूर्त्ति पेड़ों के नीचे रक्खी थीं और कितनी तो उन छोटे छोटे मन्दिरो मे जो एक २ देवता के नाम पर नियुक्त किये गये थे धरी रहीं ।

तब ब्राह्मण संसारी को उन सब मन्दिरों में ले गया और बहुत से देवताओ का नाम उसे बतलाया । फिर उस ने उन देवताओं की कथा और चरित्र उस्से कहे कि अमुक अमुक देवता ने ऐसा ऐसा बड़ा कर्म किया और उन के प्रसिद्ध कर्मों के चित्र भी पृथक् पृथक् मन्दिरों पर भीतों मे लिखे हुए दिखलाये । और देखो कि उन देवताओं के चित्र बड़े भयानक और डरावने थे । किसी के बहुत से सिर और भुजा थी और अनेको के सिर बनपशु और पक्षी और जन्तु के तुल्य और किसी की मछली की सी पूंछ थी । और पूजा के लिये अलग अलग पत्थर की चौकी रक्खी थीं उन मे ये सब देवते स्थापित थे । और एक एक मन्दिर के प्रकाश करने के निमित्त काली भीतों के ऊपर जालों में एक एक दीया जलता था ।

जब ब्राह्मण ने संसारी को इन बड़े बड़े देवताओं को दिखलाया तो उस को बतलाया कि किस्से कौन सा फल मांगना चाहिये । और मै ने सुना कि उस ने ब्रह्मा विष्णु महेश इन्द्र सरस्वती लक्ष्मी दुर्गा और बहुत से देवताओं का नाम लिया और कहा कि इन्हीं के प्रसन्न हुए से संसार के फल अर्थात् संतति संपत्ति बल राज्य आरोग्य प्रभृति मिलते हैं । और मैं ने बहुतों को उन देवताओं

के स्थान मे पूजा करते और उन से संसार का फल मांगते देखा और बहुत थोड़े ऐसे भी थे जिन्हों ने संसार के सुख को छोड़ और कुछ मागा हो ।

तब ब्राह्मण ने संसारी को बतलाया कि इन देवताओं मे से तुम एक को पूजा करने के लिये अपना इष्टदेवता ठहराओ और माला लेके उसी का नाम जपो और उस की मूर्त्ति पर अपना ध्यान लगाओ । जो ऐसा न करोगे तो केवल उस का नाम ही जपने से कुछ फल न होगा परन्तु ध्यान लगाके करो तो ईश्वर का नाम अग्नि के समान है जिस के उच्चारण से सब पाप भस्म हो जाते हैं । और देवताओ की स्तुति करने के कई एक प्रकार भी बतलाये और कहा कि स्तुति करने से देवते प्रसन्न होते और स्तुति करनेवालो का मनोभिलाष पूरा करते हैं । विशेष करके यह कहा कि अपने इष्टदेवता पर अपने सारे मन से विश्वास लाना अवश्य है ।

तब ससारी ने कहा । हे महाराज आप ने मुझ अज्ञानी के लिये एक बडा कठिन काम ठहराया है । मै किस प्रकार से जानू कि तेतीस कोटि देवताओ मे से किस को अपना इष्टदेवता ठहराना मुझ पापी को उचित है । जो मै अज्ञानता के कारण इस भारी विषय मे भूल करूं तो क्या जाने ३२ करोड़ ९९ लाख ९९ सहस्र ९ सौ ९९ देवते जो रह जायेगे मुझ कुभागी से अप्रसन्न होके रूठ जाये तो क्या मेरा इष्टदेवता मुझ को उन सभो के क्रोध से बचा सकेगा । अथवा वह देवता जिस का मै शरणागत हूगा कदाचित् वह भी मुझ से अप्रसन्न होके मुझ बेबस को बडे कष्ट मे डाल दे तो मै क्या करूं । आप कृपा करके इस सन्देह के जाल से मेरा छुटकारा कीजिये ।

ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि अपने मन मे किसी बात

की चिन्ता मत कर देवते तो ऐसे नहीं हैं जैसे तुम समझते हो वे सब के सब एक ही है और एक ही परब्रह्म के प्रकाश हैं। ज्ञानी के लिये उन की पूजा करना अवश्य नहीं है क्योंकि वह परब्रह्म का ध्यान करता है। परन्तु अज्ञानी जो परब्रह्म का ध्यान करने को समर्थ नहीं होता देवताओं की सहायता से उस को भजता है। और जब कि देवते भी अदृश्य हैं तो प्रतिमा की सहायता से उन की भी पूजा करता है। सो जैसी तुम्हारी भावना हो तुम एक को अपना इष्टदेवता ठहराओ और उस की प्रतिमा पर विश्वासमय मन से ध्यान करो और उस का नाम जपो। तुम्हारे ही विश्वास और भावना के बल से वह तुम्हारा इष्टदेवता बन जायगा। परन्तु तुम क्षत्री हो इस लिये तुम को उचित है कि विष्णु के किसी अवतार पर अपना मन स्थिर करो क्योंकि शास्त्र मे लिखा है।

विप्राणा देवतं शंभुः क्षत्रियाणां तु माधवः।
वैश्याना तु भवेद्ब्रह्मा शूद्राणां गणनायक इति मनुः।

अर्थात् कि ब्राह्मणों का महादेव इष्टदेवता है क्षत्रियों का विष्णु इष्टदेवता है वैश्यो का ब्रह्मा इष्टदेवता है शूद्रों का गणेश इष्टदेवता है। श्री भागवत मे भी यह श्लोक है कि

मुमुक्षवो घोररूपान् हित्वा भूतपतीनथ।
नारायणकलाः शान्ता भजन्ति ह्यनसूयव॰।

अर्थात् मुक्ति की इच्छा करनेवाले द्वेषरहित हो भयानक रूप भूतो के स्वामी देवताओ को छोड़ निश्चय के संग नारायण के दयावान् अंश अर्थात् अवतारो को भजते हैं।

तब मैं ने स्वप्न मे देखा कि ब्राह्मण की इन बातो से संसारी का मुख कुछ थोड़ा सा आनन्दित दिखलाई दिया

और ऐसा सूझ पड़ा कि उस के मन में मुक्ति का सत्य मार्ग पाने की आशा से तनिक धीरता प्राप्त भई थी। परन्तु जब वह ब्राह्मण पर अपनी संतुष्टि का वर्णन करता ही था इतने में एक मनुष्य जो समीप खड़ा था साम्ने आया। उस के हाथ मे दण्ड और कमंडलु था और माथे पर भस्म का त्रिपुण्ड तिलक था और उस के समस्त बाल मुड़े हुए थे और एक धोती को छोड़ जो लाल मिट्टी से रंगी थी उस के शरीर में कोई और वस्त्र न था। वह गाते गाते यह कहता साम्ने आया कि

विष्णुदर्शनमात्रेण शिवद्रोहः प्रजायते ॥
शिवद्रोहान्न सन्देहो नरकं यांति दारुणम् ॥
तस्मान्न विष्णुनामापि न वक्तव्यं कदाचन ॥

अर्थात् विष्णु के दर्शन ही करने से शिव को क्रोध उत्पन्न होता है शिव के क्रोध से निश्चय करके भयंकर नरक को जाते हैं इस कारण से विष्णु का नाम भी कभी नहीं कहना चाहिये। तब ब्राह्मण की ओर देखके पुकारा कि हे ब्राह्मण तू इस को विष्णु का भजन क्यों बतलाता है जो विष्णु का दर्शन करता है सो नरक मे डाला जाता है।

इतनी बातें सुनते ही ब्राह्मण ने कहा कि हे भाई ऐसी द्वेष की बात मत कहो क्योंकि उसी पुराण अर्थात् पद्मपुराण में एक यह भी श्लोक है कि

वासुदेवं परित्यज्य योन्यदेव मुपासते ॥
तृषितो जाह्नवीतीरे कूप खनति दुर्मतिः ॥

अर्थात् नारायण को छोड़के जो दूसरे देवता का भजन करता है वह ऐसा है जैसा कोई प्यासा मूर्ख जल के लिये गंगा के तट में कुए को खोदे। और श्री भागवत मे भी लिखा है

भवव्रतधरा ये च ये च तान् समनुव्रता ॥
पाखण्डिनस्ते भवन्तु सच्छास्त्रपरिपन्थिनः ॥

अर्थात् जो महादेव को प्रसन्न करने के लिये नियम अर्थात् तपस्या करते हैं और जो नियमवालों के पीछे लगे हैं वे भी सच्चे शास्त्र के वैरी और विरुद्ध मतावलम्बी होवें । परन्तु द्वेष करने से कुछ बन नहीं पड़ता हम तुम दोनों जानते हैं कि सब के सब एक ही हैं और हम सभों की अभिलाषा एक ही है । जो हम इस रीति से आपस में द्वेष करें तो साधारण लोग हमारी बात नहीं मानेंगे तब कैसी दशा होगी ।

तब मैं ने देखा कि जब लों ब्राह्मण इस प्रकार की बात से उस दंडी को समझाता मनाता रहा तब लों संसारी अत्यन्त व्याकुलता मे पड़ा रहा । अन्त को जब दंडी चला गया तब ब्राह्मण संसारी के समीप आके कहने लगा कि हे मित्र तुम उस पाखंडी की बात मत मानो हमारी शिक्षा पर चलो अपने मन मे किसी बात की चिन्ता मत करो । श्री नारायण के किसी रूप पर अपने मन का बिश्वास रक्खो और उस के भजन में तत्पर रहो तब तुम्हारा भला होगा ।

तब संसारी ने कहा कि हे गुरु जी मैं आप की शिक्षा मानता हूं और तुम्हारी आज्ञा के अनुसार रामचन्द्र को अपना इष्टदेवता ठहराता हूं क्योंकि उस के चरित्र में ऐसा कलंक दृष्टि नहीं पड़ता है जैसे कृष्ण अरु और अवतारों में सूझ पड़ता है । सो आप कृपा करके हमे बतलाइये कि हम किस प्रकार और किस प्रमाण से रामचन्द्र पर मन का बिश्वास लावे ।

ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि तुम ऐसा मत कहो कि

किसी अवतार मे कलङ्क वा दोष है यह तो नहीं हो सकता है क्योंकि सामर्थी को दोष नहीं लगता है। परन्तु जो तुम्हारी भावना रामचन्द्र के भजन करने को हो तो तुम उस को ईश्वर परब्रह्म का रूप समझके उस का भजन करो और उस का नाम जपो और जैसा तुम्हारा विश्वास है तैसा तुम्हारा कल्याण होगा।

तब संसारी ने कहा कि मै कैसे जानूं कि वह परब्रह्म का रूप है क्योंकि बिना प्रमाण और साक्षी के मै बिश्वास नही ला सकता हूं और आप कहते हैं कि पूरा दृढ़ विश्वास अवश्य है।

ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि हां अवश्य है परन्तु बिश्वास मन की बात है और जो तुम्हारे मन मे नही है तो मैं उसे तुम्हे दे नहीं सकता हूं। तुम ने अब अपनी भावना बतलाई कि रामचन्द्र को अपना इष्टदेवता ठहराता हूं। भला यह तो उस की प्रतिमा है अब तुम निश्चय करके जानो कि रामचन्द्र जो परब्रह्म का रूप है इस मे व्याप्त है तो तुम्हारे लिये ऐसा ही हो जायगा। बिश्वास से सब कुछ हो सकता है।

तब संसारी ने कहा। मै जानता हूं कि पत्थर पर बिश्वास लाने से कि रूपा है वह हमारे लिये रूपा नहीं बनेगा। और अगिले काल मे मै बिश्वास लाया था कि कोढी नहीं हू फिर भी अब लो कोढी बना रहा हूं। सृष्टि की कोई बस्तु मेरे मन की भावना वा बिश्वास के अधीन नही है। जो मै विष पर बिश्वास लाके कि भोजन है उसे खा जाऊं तो क्या वह हमारे लिये भोजन बनेगा। तो मै किस प्रकार से निश्चय करके जानू कि इस पत्थर मे रामचन्द्र व्याप्त है अथवा यह कि रामचन्द्र आप परब्रह्म का रूप है।

ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि इस प्रमाण से निश्चय करना चाहिये अर्थात् कि शास्त्रों मे ऐसा ही लिखा है ।

तब मै ने देखा कि संसारी फिर व्याकुल होके निवेदन करने लगा कि हे गुरु मेरा अपराध क्षमा कीजिये परन्तु सन्देह के कारण मेरा मन अत्यन्त शोकित और पीड़ित हो गया है । मै क्या करूं निःसन्देह मेरे लिये नरक सिद्ध है । क्योंकि जिस शास्त्र मे ऐसी कठिन बात लिखी है जैसा आप ने बतलाई है मै उस को परमेश्वर का बचन कैसे जानूं । ऐसा सूझ पड़ता है कि शास्त्र की शिक्षा के अनुसार सृष्टि तो सृष्टि नही है परब्रह्म का अंश और माया है परब्रह्म भी आप परब्रह्म नही रहा क्योंकि मेरे मन की भावना के अधीन हो गया और फिर भी मैं उस का अंश हूं । पाप और पुण्य एक ही हैं सामर्थी को दोष नही लगता अर्थात् जिस को भला करने की वही सामर्थ्य हो यद्यपि वह बुरा भी करे तथापि उस को कुछ दोष नही । परन्तु मुझ को ऐसा देख पड़ता है कि उसी सामर्थ्य के हेतु से उस का दोष अत्यन्त अधिक हो गया जो इतनी सामर्थ्य न होती तो इतना दोष भी न होता । और अब आप कहते हैं कि जो तुम निष्केवल विश्वास लाओ तो सब कुछ हो जायगा । सो अब आप को उचित है कि ऐसे विश्वास के लिये एक दृढ़ नेव डालिये जिस पर विश्वास स्थिर और अटल रहे क्योंकि मेरा मन और विवेक प्रकृति से ऐसे उत्पन्न हुए हैं कि बिना प्रमाण के विश्वास नही ला सकता हूं । इस लिये कृपा करके बतलाइये कि किस प्रमाण से जाना जाता है कि यह शास्त्र जिस मे ऐसी शिक्षा है परमेश्वर का बचन है ।

ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि सावधान हो शास्त्र का अपमान मत करो जैसा आगे किया नही तो मै अभी तुम

को त्याग देता हूं। मै ऐसी अधर्म की बात किस रीति से सह सकता हू। परन्तु यदि तुम अपना सन्देह दूर करने और बिश्वास लाने चाहते हो तो मै तुम्हे बतलाता हूं कि परम्परा की बात से जाना जाता है कि शास्त्र परमेश्वर का बचन है। वेद तो ब्रह्मा के मुख से निकले महाभारत और रामायण जितने पुराण और जितने शास्त्र हैं सब के सब ईश्वरीय बाणी हैं और परम्परा से सिद्ध और सत्पुरुष उन को मानते आये हैं। उन पर सन्देह करना बड़ा पाखण्ड है सन्देह करने से तुम्हारे मन का अभिलाष कभी पूरा नही होगा। इस लिये तुम ऐसा मत करो परन्तु हमारी शिक्षा मानो रामचन्द्र पर मन से बिश्वास लाके उस का भजन करो तो तुम्हारा भला होगा। यह कहके ब्राह्मण कुछ वेर लों निराले में चला गया।

इति मुमुक्षुवृत्तान्ते तृतीयोऽध्यायः।

चौथा अध्याय।

इस अध्याय में यात्री ब्राह्मण की नई शिक्षा पर चलने में बड़ा यत्न करता है और निराले में होके अपने मन का विचार प्रगट करता है।

तब मैं स्वप्न मे संसारी को बड़े यत्न से देखने लगा कि अब क्या करेगा। क्या देखता हूं कि ब्राह्मण के कहने के अनुसार उस ने रामचन्द्र को अपना इष्टदेवता ठहराया कि उस का भजन करे और उस ने उस का नाम करोड़ों वेर जपा और लाखों बार स्तोत्रो का भी पाठ किया और बहुत से और काम भी किये। उसे जो करने की आज्ञा थी उस्से अधिक कर्म किये यहां लो कि उस ने

अपनी संपूर्ण वस्तु और बहुमूल्य पदार्थ जो कुछ उस के पास थे लाके उस देवता के आगे भेंट कर दिया। फिर दिन प्रतिदिन अखण्ड दीप धूप नैवेद्य फूल फल चढ़ाता था। परन्तु इस पर भी उस के पापों का बोझ कुछ हलका न हुआ वरन इस के बिरुद्ध उसे और भी दबाये डालता रहा और इस समय मे उस के कोढ़ का रोग और भी बढ़ गया। अब यों हुआ कि जब वह अपने देवता के साम्ने पड़ा हुआ था अपने चित्त मे सोच करके और यह कहके बिलाप करने लगा।

हाय हाय मेरी कैसी गति हो गई अपने बचाव और मुक्ति के लिये मैं क्या करूं। गुरु की शिक्षा से अब लों मैं ने तनिक भी सन्तुष्टि नहीं पाई। मेरा पाप कट नहीं गया मेरा कोढ़ दूर नहीं हुआ मेरा मन शुद्ध और पवित्र नहीं भया। मेरी मुक्ति नहीं हुई और उस के होने का भी कोई लक्षण देख नही पड़ता। इस का क्या कारण है। गुरु तो कहता है कि बिना बिश्वास लाये कुछ नही हो सकता परन्तु वह बिश्वास के लिये कोई प्रमाण नहीं देता और बिना प्रमाण से बिश्वास कैसे हो सकता है। वह तो कहता है कि ये देवते परब्रह्म के रूप हैं परन्तु उन के विषय मे ऐसा चरित्र और कार्य्य बतलाता है कि जो कोई मनुष्य ऐसा कार्य्य करता तो सत्पुरुष और मान्य धर्म्मी मनुष्य की रीति उस का आदर भी करना अत्यन्त कठिन होता। तो मैं कैसे बिश्वास लाऊं कि ऐसे कार्य्य करनेवाले परब्रह्म के रूप होके पूजा के योग्य हैं अथवा मेरा निस्तार कर सकते हैं।

फिर गुरु कहता है कि ये देवते सामर्थी हैं और इस लिये उन को दोष नही लगता परन्तु इस का भी क्या प्रमाण है। यदि सामर्थी थे तो अपना कार्य्य पराये

बलात्कार वा बरबस्ती से नही परन्तु अपनी ही इच्छा से किया होगा। सो ऐसी स्वतन्त्रता का यह गुण नही है कि पाप का दोष मिटावे और इस प्रकार से उन का दोष कैसे मिट सके। और किसी न्यायस्थान मे अपराध के लिये सामर्थ्य का उत्तर नही चलता वरन सामर्थ्य के कारण अपराध अधिक गिना जाता है।

फिर भी गुरु कहता है कि तेरे बिश्वास लाने से और तेरे मन की भावना के बल से ये देवते तेरे लिये परब्रह्म के रूप बनेगे। क्या मेरे मन की भावना अपवित्र को पवित्र कर सकती है और यह भी जब मेरा मन आप अपवित्र है। यदि ऐसा हो तो अपने को मै आप पवित्र क्यो नही कर सकता हू और इन की पूजा करनी मुझे क्या अवश्य है। परन्तु मै जानता हूं कि मन की भावना से अपने को पवित्र नहीं कर सकता हूं तो मेरे बिश्वास लाने से ये देवते पवित्र परब्रह्म के रूप कैसे बनेगे।

हाय कि मैं परब्रह्म को कहां पाऊं जिसते मैं उस के आसन लो जाता। क्योकि मुझे निश्चय है कि एक परब्रह्म तो है और गुरु भी यह मानता है परन्तु वह उस का ऐसा बर्णन करता है जिसे मै ग्रहण नही कर सकता हूं। मुझे निश्चय है कि सारी सृष्टि का सृजनहार सर्बसामर्थी सर्बज्ञानी और स्वाधीन होगा। और उस ने मेरे मन और बिवेक पर बुरे भले का भेद उस रीति से स्थापन किया जो किसी प्रकार से मिटने का नही। इस बात से प्रगट होता है कि वह आप भला और पुण्यात्मा और निर्दोषी धर्ममय होगा। नही तो किस लिये मुझ को ऐसी स्वभाविक प्रकृति दिई है और किस लिये इसी संसार मे भी पाप का दण्ड और पुण्य का फल देता है।

इसी प्रकृति की साक्षी से मैं जानता हूं कि मै पापी

अपराधी अपवित्र हूं और इसी कारण से मेरे मन मे भय और व्याकुलता समा गई है । क्योंकि मै किसी पन्थ के नही देखता हूं जिस पर चलके अपनी अपवित्रता से पवित्र हो जाऊं और जब लों यह न होवे परब्रह्म के सन्मुख जाने का मुझे साहस नही है । क्योंकि वह मेरे समान मनुष्य नही कि उसे उत्तर देऊं और हम आपस में बादानुबाद करें । हाय कि हमारे मध्य में कोई मध्यस्थ होता जो अपना हाथ दोनों पर धरे और जिस की प्रार्थना से वह अपना राजदण्ड मुझ पर से दूर करे और उस का भय मुझे न डरावे । तब मैं कहता जब उस से नहीं डरता परन्तु मेरी ऐसी दशा नहीं है । क्योंकि ये देवते तो आप पवित्र नहीं सो मुझ अपवित्र के किस रीति से पवित्र परब्रह्म से मिलावे । यह कहके संसारी फिर अत्यन्त रोने लगा । इतने में ब्राह्मण उस के पास फिर आय पहुंचा ।

आते ही उस ने पूछा कि तू क्यों रोता है क्या तुझ के इस देवता की पूजा पाठ करने से कुछ फल न मिला। संसारी ने साहस करके उत्तर में अपना सब अभिप्राय ब्राह्मण पर प्रगट किया और उन देवताओं के मुक्ति देने मे जितने सन्देह उस के चित्त में समाये थे संपूर्ण बर्णन किये।

यह सुनके ब्राह्मण के अत्यन्त क्रोध आया और उस ने कहा अब मुझे निश्चय हुआ कि तेरे भाग्य मे नरक ही लिखा है अथवा तू अनेक जन्म पर्य्यन्त भ्रमण करता रहेगा । क्या जाने इसी जगत मे तेरा जन्म होता रहेगा और तू किसी नीच जाति अथवा किसी अपवित्र बनचर वा कीड़े का जन्म पावेगा ।

इन बातो के सुनते ही संसारी अत्यन्त डर गया और उस ब्राह्मण के चरणो पर गिरके चूमने लगा और बोला कि मुझ पर दया करो और मुझे बचाओ ।

तब ब्राह्मण ने उसे उठाया और कहा कि अब मुझ को निश्चय हुआ कि तू ने असंख्य पाप किये हैं जो तू अपने पापों के प्रायश्चित्त के लिये मरने से पहिले बड़े बड़े शरीरी कष्ट न उठावे तो तुझे मृत्यु के पीछे आग मे तप्त करे हुए कोयले खाने पड़ेंगे अथवा जिस मे काटनेवाले कीड़े और सांप रहते हैं उस कुंड में तू डाला जायगा।

इन बातों के सुन्ने से उस भयभीत मनुष्य ने उत्तर दिया कि इस बुरी दशा के भुगतने से शरीरी कष्ट कितने ही भारी होवें उन के उठाने को मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि जो मैं अपने पापों के बोझ से छूटने के लिये कोई उपाय इसी जन्म मे न पाऊं तो वह मुझे घोर नरक में डुबा देगा और मेरे शरीर का कोढ़ भी दिन दिन बढ़ता जाता है।

ब्राह्मण ने कहा कि मैं ने पहिले तुझे बताया कि यह अपवित्रता जिस के मिटने की तू अभिलाषा करता है केवल इन्द्रियों के बलात्कार से शरीर मे व्याप्त है और उस से छुटकारा पाने के लिये संपूर्ण इन्द्रियों को वश करना अवश्य है।

संसारी ने ब्राह्मण से पूछा कि किस प्रकार से यह करना चाहिये। ब्राह्मण ने कहा कि तू ने सामान्य रीति से पूजा किई है और उस से कुछ फल प्राप्त न हुआ अब मैं तुझे तपस्या करने की युक्ति कुछ बतलाता हूं।

संसारी ने कहा कि किसी प्रकार के कष्ट होवें मैं उन के उठाने मे प्रसन्न हूं क्योंकि कोई शरीरी कष्ट जिस के उठाने की आज्ञा मुझ को हो इस दुःख के तुल्य न होगा जो मेरे चित्त मे बहुत दिनों से है।

ब्राह्मण ने उस से कहा कि उठ और मेरे पीछे चला आ। तब वह उस को मन्दिर के चौक के बाहर होके

नगर की उस ओर ले गया जहां अधिक बस्ती न थी। वहां जाके उस दुर्भाग्य शिष्य को लोहे की जूतियां पहिनाईं जिन मे लोहे की कीलें लगी थी उन्हे पहिनके चलने से उस के पैर छिद गये। फिर ब्राह्मण ने उस के कपड़े उतरवाये और एक मोटा कम्बल उसे ओढ़ने को दिया और आज्ञा किई कि विष्णु का प्रसिद्ध रूप जगन्नाथ के तीर्थ करने को जा। वहां निश्चय तुझ को तेरा अभिलाष मिलेगा अर्थात् पापों के बोझ से छुटकारा पावेगा। यह कहके ब्राह्मण तो चला गया।

तब मै ने देखा कि जब संसारी ने फिर अपने को निराले मे पाया तो जैसा आगे किया था तैसा अपने मन मे सोच और विलाप करके कहने लगा कि गुरु तो क्रोधित होके चला गया है और मुझे आज्ञा दिई है कि जगन्नाथ के तीर्थ को जा। अब तो मेरी बहुत संपत्ति गल गई क्योंकि जितनी मेरी सामर्थ्य थी मै ने गुरु को दान दक्षिणा दिया है। जो इस युक्ति से मेरे मन का अभिलाष मिल गया होता तो मैं अपनी संपत्ति के लिये तनिक सोच नहीं करता क्योंकि जब लों मेरे प्राण की मुक्ति न हो तो धन संपत्ति से मुझे क्या लाभ हो सकता। परन्तु यह आश्चर्य्य की बात है कि जब लों मै दान करता रहा तब लों गुरु मेरे सन्देह को निवारण करता और सन्ताप का कष्ट हटायके मुझे अपने पास रखता और धीरज देता रहा। परन्तु अब जो इतना दे नही सकता हूं इस कारण दूर दूर के तीर्थों का भ्रमण बतलाता है। मै ऐसा जानता हू कि फिर मुझ से भेंट न करेगा। भला मुझ को यह निश्चय ज्ञान हो गया है कि उस की शिक्षा से मेरे शोक और चिन्ता का औषध नहीं मिलता बरन यह भी प्रत्यक्ष सूझ पड़ता है कि वह मेरे मन की दशा को अच्छी रीति

से नहीं समझता है। परन्तु मेरी रक्षा अब कहा से होगी जो आशा मेरे हृदय मे थी सो भी सर्वथा मिट गई है। आः दुर्गति मनुष्य जो मैं हूं कौन मुझे इस मृत्यु के शरीर से निस्तार करेगा।

यह कहके संसारी भूमि पर गिरके रोने लगा और इसी दशा मे कुछ बिलम्ब लों पड़ा रहा। कभी कभी पुकारता चिल्लाता था कि मुक्ति के लिये मै क्या करू कौन मुझे बचावेगा और फिर भूमि पर पड़ा रहा। यह भी मै ने ध्यान करके देखा कि मन के शोक और पीड़ा के मारे वह मर भी जायगा। निदान उस को कुछ थोड़ा सा धीरज आया और वह सोचने लगा कि अब क्या किया चाहिये जगन्नाथ के तीर्थ करने से क्या जाने कुछ बन पड़े कि नहीं। परमेश्वर तो सर्वव्यापी है और उस के दर्शन के लिये वहा जाना कुछ अवश्य नही परन्तु जो गुरु ने कहा कि अब शरीर का कष्ट उठाना चाहिये कदाचित् इस मे मेरे मन का चैन मिले। क्योंकि मै ने भी इस की परीक्षा किई है कि शरीर के कष्ट से कभी २ आत्मा का कुशल होता है। भला जो हो सो हो मैं इसी रीति से वहां जाऊंगा। देखा चाहिये कि शरीर को कष्ट देने से और जगन्नाथ के दर्शन से मेरा अभिलाष कुछ प्राप्त होगा कि नही। यह कहके ससारी बड़ी पीड़ा और कष्ट उठायके और अत्यन्त दुर्बल होके जितना शीघ्र हो सका जगन्नाथ की यात्रा को चला।

इति मुमुक्षुवृत्तान्ते चतुर्थोऽध्यायः।

पांचवां अध्याय ।

इस अध्याय में यह वर्णन है कि यात्री जगन्नाथ का तीर्थ करके क्या फल प्राप्त करता है ।

थोड़ी देर पीछे मैं ने फिर संसारी का देखा कि वह एक स्थान पर पहुंचा जहा बहुत ही यात्री एकट्ठे थे उन के साथ उसी समय यह भी जा मिला । और देखा कि ये सकल यात्री बहुधा मैले कुचैले और देखने मे कुढंग और कुरूप थे । कई एक तो नंगे और प्रत्येक अपने शरीर मे कीचड़ पोते हुए थे । और वे जब चले जाते थे तो कई एक अयोग्य चाल चलते और देवपूजन के बहुत से प्रकारो पर नाचते कूदते और मृतको की खोपड़ियो मे मधु भर भरके पीते और गांजे की दम लगाते और मतवाले होके ऐसा चिल्लाय चिल्लायके गाते कि उन के उस कठोर आलाप का प्रतिशब्द वायु मे से निकलता था । ऐसा करते हुए अन्त को वे एक भयानक जंगल के समीप पहुंचे । वह ऐसी भूमि थी कि जहां घास अथवा हरियाली का कही चिह्न नही और न पीने को कही पानी का सोता मिलता । मै ने ऐसे भयानक पदार्थ वहा देखे कि मारे डरके मेरा लोहू शरीर ही मे सूख गया ।

एक स्थान पर बहुत से मनुष्य उत्तम धर्म प्राप्त करने के लिये कई एक प्रकार के अत्यन्त कष्ट उठाते थे इस इच्छा से कि लोग हमारा यश गावें । अरु और लोगों को भी शिक्षा देते थे कि इसी रीति तपस्या करो । एक मैले कुचैले से मन्दिर मे एक डरावनी मूर्त्ति किसी देवते की थी जिस के साम्हने मनुष्य का बलिदान हुआ और उस का धड़ पड़ा था । और एक दूसरे देवते के साम्हने भी एक

लोथ पड़ी थी उस पर एक योगी बैठा हुआ जप कर रहा था । फिर मैं ने एक मनुष्य को देखा जो बहुत काल से एक ही स्थान पर खड़ा था । कभी तो सूर्य्य की ज्योति और दो पहर की धूप और ग्रीष्म ऋतु की तपन उस पर पड़ती और कभी बरसात की आपत्ति और जाड़े का क्लेश उठाता । और उस की दाढ़ी और नख अत्यन्त बढ़ गये थे उस का शरीर सूख गया था और जटाओ से माथा तक छिपा हुआ था । जिस मे चिड़ियो ने अपने घोसले लगाये थे । इस से थोड़ी दूर पर एक और था जो पांच अग्नियों की तपस्या करता था । और भी बहुत से थे जो एक स्थान पर स्थिर नहीं रहते थे पर इधर उधर चलते फिरते थे और उन का संपूर्ण स्वरूप भयानक था । बहुत उन मे उर्द्धबाहु थे कि जिन के हाथ सिर पर धरे धरे सूख गये थे और नख बढ़के हथेली तक आ गये थे । कितनो ने अपनी जटा पैर तक बढ़ाय रक्खी थी और अपने शरीरो मे भस्म मला हुआ था वही उन का पहिनाव था । कितनों को मैं ने देखा कि लोहे के कांटे अपनी पीठ मे छेदके ऊपर लटके हुए थे और कितनो ने गोदनियो से अपनी जीभे छेद रक्खी थीं । बहुत सी रांड़े अपने पतियो की लोथ लेके सती होती थी उन की किलकिलाहट और बाजों की घमघमाहट से संपूर्ण जगल शब्दायमान हो रहा था ।

तब मैं ने यात्रियों को देखा कि संसारी भी उन के पीछे पीछे पैरो से लोहू बहते हुए चला जाता था । और यह भी देखा कि ज्यो ज्यो वे आगे बढ़े त्यों त्यो उन का समस्त मार्ग मृतको की हड्डियो से ढपा था इस पर मै ने अत्यन्त आश्चर्य्य किया ।

तब चारो ओर के यात्री एकट्ठे होके एक बड़े समूह

हो गये और संसारी भी उन के संग था । जाते जाते वे एक स्थान पर पहुंचे जहां समुद्र के समीप वस्ती थी । उस की चारों ओर वन बारी और तलाव भी थे और बीच मे कितने सहस्र घर पत्थर के बने थे । मध्य की गली उत्तर दक्षिण लेके बड़ी लम्बी चैाड़ी थी और उस की दोनों ओर मठों की डेवढ़ियां और वृक्षों की पंक्ति देख पड़ी । इस बड़ी गली में बहुत से सन्यासी और बैरागी इधर उधर चलते फिरते थे और बनिये ब्योपारी अपने अपने हाटों में ब्योपार करते बड़ा शब्द कर रहे थे । उस गली के दक्षिण सिरे पर एक बड़ा चैागान ऊंची भीत से घिरा हुआ था और भीत के अन्दर सो एक मन्दिर जिन में से एक तो एक सो पैंतीस हाथ बहुतेरे पचास हाथ ऊंचे थे । गली के सन्मुख भीत में एक बड़ा फाटक बना था मैं ने सुना कि उस का नाम सिंहद्वार है । इस के अन्दर पत्थर की सीढ़ी देख पड़ी और सीढ़ी के ऊपर एक और भीत से दूसरा चैागान घिरा था । जब यात्रियों ने उन मन्दिरों को देखा तो बड़ी प्रसन्नता से चिल्लाये कि जय जगन्नाथ की जय जगन्नाथ जी की हरिबोल हरिबोल ।

अब ज्यों सब यात्री इस घेरे के फाटक पर पहुंचे तो मैं ने स्वप्न मे देखा कि वहां की भूमि पर मनुष्यों की लोथ पड़ी थी और मार्ग मनुष्यों की शुभ्र शुभ्र हड्डियो से चूना कूटा सा पक्का बन रहा था । और वहां का वायु भी मनुष्यों की दुर्गन्धि से जिन्हे जंगली कुत्ते और गिद्ध और गीदड़ खाय रहे थे भरा हुआ था और बाघ प्रभृति वनचर चिंघाड़ मार रहे थे । बहुत से मगर और घड़ियालो को देखा कि एक झील के तीर अपने स्वभाव के अनुसार मुख फैलाये हुए प्रतिक्षण मांस को ताक रहे थे । और देखो जब यात्रियों का समूह उस के समीप पहुंचा तो मैं ने

बहुतेरी स्त्रियों को देखा कि अपने बच्चो को उन मासा-हारी जीवों के मुख मे डाल दिया । और तरुण बेटो को देखा कि अपने बूढ़े मा बापो को झील में ढकेल दिया जिस्से वे जल के जीवों के भोजन हो जावे ।

जब कि मैं उन का व्यवहार बड़े डर और आश्चर्य के साथ देख रहा था अचानक उस घेरे के फाटक खुल गये और एक बड़ा ही ऊंचा रथ उस मे से निकला । उस मे बहुत देवताओं की मूर्त्त थी उस के पहियों की गिडगिड़ा-हट इस धूमधड़क्के से हुई कि मानो भूकम्प आया वह रथ जगन्नाथ जी का था । और जब उस यात्रियों के समूह ने रथ को देखा फिर बड़े शब्द से चिल्लाये कई एक तो उस का रस्सा पकड़के खींचने लगे और बहुतेरे दौड़के उस के साम्हने भूमि पर गिर गये जिस्से उस के नीचे दबकर मर जावे जितनो ने ऐसा किया क्षणमात्र मे मर गये । यही दशा जो मैं ने स्वप्न में देखी अगले काल मे निरन्तर होती रही अर्थात् यात्री लोग अपने को उस रथ के पहियो तले दबाके मर जाते थे और स्त्री लोग अपने बच्चो को मगरमच्छ के मुख में फेकती थीं और अनेक प्रकार से उस देवता की पूजा में मनुष्य मारे जाते थे परन्तु मैं ने सुना है कि इन दिनो मे ऐसा नहीं होता है क्योंकि सरकार अङ्गरेज़ के राज्य मे समस्त प्रकार की हत्या करनी वर्जित है । फिर भी इन दिनो में प्रतिवर्ष अगणित यात्री लोग रोग के मारे मर जाते हैं और कभी कभी जगन्नाथ के तीर्थ में अत्यन्त भयकर मरी होती है और मल और लोथो की अधिकाई से दुर्गन्ध चारो ओर फैली रहती है ।

तब मै उस रथ को ज्यो ज्यो वह समीप आया बड़े यत्न से निरखने लगा और देखा कि तीन रथ थे और एक एक रथ मे एक एक बड़ी कुडौल मूर्त्ति धरी थी । सब से बड़ा

रथ तीस हाथ ऊंचा था और उस के सोलह पहिये थे एक एक पहिये का व्यास पांच हाथ और रथ के ऊपर एक मंच पचीस हाथ चैाकोण इस रथ मे एक काली मूर्त्ति चार हाथ ऊंची खड़ी थी मैं ने सुना कि यह जगन्नाथ हैं। दूसरा रथ पहिले रथ से कुछ छोटा था और उस के चैादह पहिये थे इस मे पीले रंग की मूर्त्ति साढ़े तीन हाथ ऊंची थी इस का नाम बलभद्र । तीसरा रथ इस से भी छोटा और उस के बारह पहिये इस मे एक श्वेत रंग की मूर्त्ति तीन हाथ ऊंची थी इस का नाम सुभद्रा था । जगन्नाथ बलभद्र की दोनें भुजा उन के कानें से निकलके फैली थी परन्तु सुभद्रा की कोई भुजा न थी । तीनो के मुख बहुत बड़े और अत्यन्त कुडौल थे और उन की देह पर लम्बे लम्बे कपड़ों का पहिनावा था ।

तब मै ने उन यात्रियों के समूह का देखा कि अत्यन्त बड़ी भीड़ हो गई हैं । और सिंहद्वार के सन्मुख लोग ऐसे घने २ थे कि एक दूसरे को दबाता कुचलता था । सारे मठों और मन्दिरों और गृहों के छप्परों पर और पेड़ों की डालियों में अगणित जन चढ़े थे जो बड़े यत्न से रथों की ओर देख रहे थे। एक रथ के साम्हने एक पंडा खड़ा होके उस मूर्त्ति की स्तुति करता कराता था और दोहा चैापाई सुनाके कभी कभी उस सारी भीड़ से गवाता था । उस कबिता को सुन मै तो बड़ा लज्जित हो गया और मै ने देखा कि संसारी ने भी जब उस का अर्थ समझ लिया तो बड़ा व्याकुल और दुःखी देख पड़ा। परन्तु सैकड़ों सहस्रों स्त्रियां जो उस भीड़ मे थीं पंडे की बात सुनके अत्यन्त प्रसन्न हुई और छाती पर भुजा लपेटके और आंखे चमकायके पुकारने लगी कि वाह कैसी भली बात है कैसी सुन्दर कबिता हैं। यह दशा देख मै निपट उदास और

महा आश्चर्य्यित हुआ और अपने मन में सोचा कि इन स्त्रियों का पातिव्रत्य किस रीति से निष्कलंक रहेगा। क्योंकि उस कविता का अर्थ लज्जाकर और लम्पटता-सूचक भी था।

इसी कविता के गवाने से पंडे लोग यात्रियों को उभारते रहे कि रथों को खींच आगे बढ़ावें और जिस समय थक जाने के कारण रस्सा को छोड़ खड़े हो गये तो फिर इसी रीति से उन को उसकाया। क्रम क्रम से तीनों रथ आगे बढ़ गये।

तब मैं ने देखा कि ससारी पीछे रहके और उस मोहित भीड़ से भिन्न होके खड़ा है। वह बहुत दुर्बल हो गया था और उस के मुख में व्याकुलता और पीड़ा के चिह्न ऐसे दिखाई दिये कि मानो वह सिर्री होनेवाला है। उस के पांव जूती के कीलों से बहुत घायल हो गये थे और उस के सारे स्वरूप में शरीरी कष्ट उठाने के लक्षण प्रसिद्ध थे। परन्तु ऐसा सूझ पड़ा कि उस ने अपने मन का चैन नहीं पाया था और इतना कष्ट उठाने से मुक्ति के विषय मे उस को तनिक भी लाभ प्राप्त नहीं हुआ था क्योंकि जब मैं देख ही रहा था तो अपने पांवों से जूती उतारके आगे की रीति पर कहने लगा।

हाय मुझ अधम दरिद्री पर मेरे क्लेश का अन्त कब होगा। जो मै मर जाता और नष्ट होता तो बहुत भला होता। परन्तु मरने के पीछे क्या होगा इसी से मै डरता हू। बड़ा बड़ा कष्ट मैं ने उठाया है और मन खोलके अपने शरीर को दुःख दिया है परन्तु इस से पाप नहीं कटा और मैं जानता हूं कि कभी नहीं कटेगा। कष्ट उठाने मे क्या गुण है जो मलिन मन को पवित्र कर सके। यह तो नहीं हो सकता। आगे इस मार्ग पर नही चलूगा।

यह बुरी दशा देख दण्डी कहने लगा कि हे भाई विष्णु के भजन से और जगन्नाथ के दर्शन से तुम को यही लाभ हुआ । देखो ४५ पृष्ठ ।

और जगन्नाथ के दर्शन से मेरा क्या लाभ हुआ कौन मान सकता है कि वह कुडौल मूर्त्ति परमेश्वर अथवा उस का रूप है। वह तो चल नही सकती कुछ जानती भी नही कुछ देखती भी नहीं कुछ सुनती भी नही। जो वह सुन सकती तो निश्चय है कि उस कविता की लंपट और अशुद्ध वात से वह लज्जित हो जाती। क्या पवित्र परमेश्वर की सेवा इस रीति से हो सकती है अथवा किसी का अन्तःकरण इस प्रकार से सुधरेगा कभी नही हो सकता। मुझे निश्चय है कि मुक्ति का सत्य मार्ग यह नही है परमेश्वर की ओर से नही आया और परमेश्वर के समीप नही पहुंचावेगा।

अव मै क्या करूं। ऐसी संगत से जो यहां मिली है निर्जनस्थान में रहना वहुत भला होता। परन्तु निर्जनस्थान मे भी मेरी मुक्ति कैसे हो सकती है और वहां सत्य मार्ग का ज्ञान कौन वतलावेगा। परमेश्वर तो वहां है और यहां भी है क्योंकि समस्त स्थानों में उपस्थित है और सर्वज्ञानी भी है और मेरी यही दशा देखता होगा। भला तो जो मै इसी स्थान मे और इसी समय प्रार्थना और विन्ती करके उस को पुकारता तो क्या वह न सुनता निःसन्देह वह सुनेगा। परन्तु क्या जाने प्रसन्न होगा कि नहीं ऐसे पापी की वात से क्योंकर प्रसन्न होगा। उस को पुकारने से मै निपट डरता हूं ऐसा न हो कि वह मुझे नाश करे फिर भी इस को छोड़ मेरे लिये और किसी प्रकार का आसरा नही है। जो हो सो हो मै उस को पुकारूंगा जो नाश करे तो मैं नष्ट हो जाऊंगा। फिर भी मै उस पर आसरा रखूंगा क्योंकि निश्चय है कि यदि वह मुझे न वचावे तो मेरे लिये कोई और वचानेवाला नही हो सकता।

तब मैं ने देखा कि संसारी भूमि पर गिरके बहुत गिड़गिड़ाके और प्रार्थना करके परमेश्वर को पुकारने लगा कि हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर मुझ पापी को बचा हे परमेश्वर मुक्ति का सत्य मार्ग मुझ पर प्रगट कर। इस रीति से कभी कभी प्रार्थना और बिन्ती करता कभी कभी रोता सिसकता कभी चुपका कभी सांस मारता हुआ बहुत बेर लों भूमि पर पड़ा रहा। अन्त को वही दण्डी जो पहिले ब्राह्मण को मिला था उस के समीप आया।

संसारी की यह बुरी दशा देख दण्डी कहने लगा कि हे भाई तुम्हारा कैसा रूप बन गया। विष्णु के भजन से और जगन्नाथ के दर्शन से तुम को यही लाभ हुआ। देखो तो वह ब्राह्मण जो तुम्हारा गुरु था कैसा छली निकला। मै तुम को सत्य मार्ग बतलाने चाहता था परन्तु उस ब्राह्मण ने मुझ को रोका। अब मेरी बात सुनो। जैसा उस ब्राह्मण से कहा तैसा अब तुम को बतलाता हूं कि विष्णु के दर्शन से मुक्ति प्राप्त नहीं होती है नरक होता है। क्योंकि उस के दर्शन करने से शिव जो महेश है क्रोधित होता है और शिव के क्रोध से निःसन्देह नरक होगा। इस लिये विष्णु का अथवा उस के किसी रूप का नाम भी लेना नहीं चाहिये और यह बात शास्त्र में लिखी है।

तब संसारी यह बात सुन भूमि पर से उठ खड़ा हो दण्डी को देख कहने लगा। यह बात शास्त्र में लिखी है भला उस ब्राह्मण की बात भी शास्त्र में लिखी है और ये दोनों बाते आपस मे बिरुद्ध हैं सो दोनों की दोनों सत्य नहीं हो सकती हैं। मै क्योंकर जानूं कि उन्हों मे कौन बात सत्य है और कौन बात झूठ है क्या जाने दोनो झूठ हैं।

तब दण्डी ने कहा कौन बात झूठ है तुम इस प्रकार से जान सकते हो कि तुम ने ब्राह्मण की बात परख लिई है और अब वह झूठी ठहरी । उस ने कहा कि विष्णु तारणहार है और तुम ने उस का भजन किया अब तुम्हारा निस्तार कहा हुआ । इस रीति से हमारी बात सत्य ठहरती क्योंकि आगे से हम ने ऐसा ही कहा था अब हमारी दूसरी बात मानो । शिव का भजन करो वही मुक्तिदाता है वह तो सर्वव्यापी है परन्तु निज स्थानों मे भी विशेष रीति से प्रकाशित होता है । उस का एक प्रसिद्ध मन्दिर काशी जी मे है जिस का नाम बिश्वेश्वर तुम उस तीर्थ को जाओ उस का दर्शन करो । अथवा बारह प्रसिद्ध लिंगो में से एक का दर्शन करो जैसा कि केदारनाथ जो हिमालय पर्बतो मे है । वह एक बड़ा पवित्रस्थान है और वहां शङ्कराचार्य्य जी का मोक्ष हुआ मैं तो वहा गया और गोरीकुंड मे स्नान किया और महेश के लिंग का दर्शन कर आया हूं । सारा संसार उस तीर्थ को जाता है और मुक्ति पदार्थ पाता है ।

तब मै ने देखा कि संसारी के मुख के स्वरूप में आगे से कुछ भेद हो गया है और ऐसा सूझ पड़ा कि जब से परमेश्वर की प्रार्थना किई थी तब से उस को कुछ अधिक साहस और भरोसा हो गया था क्योंकि आगे की रीति निरास और निस्सहाय देखाई नही दिया । इस के अनुसार जब उस दण्डी की बात सुन चुका था तब धीरज और नियम के संग इस प्रकार से उस का उत्तर दिया ।

यह बात जो तुम कहते हो कि उस ब्राह्मण की शिक्षा वृथा और निष्फल ठहरी सो ठीक है हम ने उस को परख लिया है और वह सत्य नही निकली । परन्तु उस की शिक्षा भी शास्त्रीय है सो जब शिक्षा ऐसी तो शास्त्र कैसा

क्या परमेश्वर के वचन मे मिथ्या और वृथा बात हो सकती है। भला तुम्हारे कहने के अनुसार तुम्हारी शिक्षा भी उन्ही शास्त्रो की है सो मै उस को कैसे मानूं निःसन्देह उसी प्रकार की होगी जैसी उस ब्राह्मण की थी। ऐसी शिक्षा पर मै नही चलूंगा क्योंकि उस के मिथ्यार्थ और नाशक गुण प्रकाशित हुए। अब से मै सत्य मार्ग और सत्य ज्ञान की खोज मे हूं परमेश्वर मुझ अधम पापी अज्ञान पर दया करे और अपने मार्ग पर चलावे क्योंकि उस को छोड़ मेरा कोई सहायक नही है।

इतनी बात सुनते ही उस दण्डी ने संसारी से बहुत सी कठोर बाते कही परन्तु संसारी ने उस पर तनिक भी ध्यान नही किया। दूसरी ओर फिरके धीरे धीरे चला गया क्योंकि घावो के कारण उस के पांव अत्यन्त पीड़ित हो रहे थे। चलते २ लोगो से पूछने लगा कि कही कोई वैद्य है जो मेरे पाव की औषध कर सकता है। और जब लोगों ने बतलाया कि हा बस्ती की उस ओर को एक बड़ा प्रसिद्ध वैद्य है भला मनुष्य भी है परन्तु मुसलमान है वह तुम्हारे पांव की औषध करेगा तब संसारी उस की खोज में उस ओर को चला।

जब वह पांव के दुःख के मारे हौले हौले आगे बढ़ा जाता था तो मार्ग के एक स्थान पर कितने लोगो को एकट्ठे देखा और उन के मध्य मे थोड़े ऊंचे पर एक गोरा सा मनुष्य फिरङ्गी का रूप उन को कुछ समाचार सुनाता और उपदेश करता था। जब संसारी समीप पहुंचा तो लोगो से पूछने लगा कि यह कौन है क्या करता है। लोगो ने कहा कि यह क्रिस्तान पादरी है और हम को क्रिस्तान करने चाहता है। तब संसारी ने कहा कि धिक्कार क्रिस्तानो पर जो गोमास खाते और मदिरा पीते

हैं। यह कहके शीघ्रता से आगे बढ़ने लगा ते। उस गोरे का एक वचन अकस्मात् उस के कान तक पहुंचा कि मुक्ति का सत्य मार्ग यही है जैसा प्रभु ने कहा है समस्त लोगो जो थके और बड़े बोझ से दबे हो मेरे पास आओ कि मै तुम्हे सुख दूंगा। यह बचन सुनते ही संसारी कुछ और सुन्ने के लिये निःसहाय रुक गया और सुनते सुनते उस को ज्ञान हुआ कि यह पादरी एक बड़े मुक्तिदाता का समाचार बतलाता है और उस का नाम प्रभु यीशु मसीह और परमेश्वर का पुत्र और सत्य अवतार बखान करता है। और उस के चरित्र ऐसे थे कि जब इस संसार मे था तो कोढ़ियों को पावन किया और मृतकों को जिलाया और समस्त रोगियों पर दया करके उन को अपने बचन से चंगा किया। और अन्त को मनुष्य के पाप के प्रायश्चित्त के लिये उन की सन्ती अपनी प्रसन्नता से अपना प्राण समर्पण करके मर गया और तीसरे दिन जो उठा अर्थात् मृत्युञ्जय हुआ। और अब उस के नाम पर विश्वास लाने से मुक्ति और पापमोक्षण का समाचार सारे देशो मे प्रचारा जाता है। ऐसी ऐसी बातों से उस पादरी का उपदेश समाप्त हुआ और दूसरा मनुष्य जो उस के संग था सब लोगो मे जो पढ़ सकते थे छोटी पुस्तकों को बांटने लगा। तब संसारी को शोक हुआ कि मै और सवेरे नही आया जिसते इस प्रकार की शिक्षा का समस्त वृत्तान्त सुनता। क्योंकि वह पादरी यद्यपि बड़ा चेष्टित और उद्योगी देख पड़ा तथापि दया और नम्रता के चिह्न उस के मुख मे दिखलाई दिये। अन्त को संसारी ने भी एक छोटी पुस्तक ले लिई और बड़ा आश्चर्यित होके और उस समाचार पर बड़ा ध्यान करके उस मुसलमान वैद्य के खोज मे चला गया।

इति मुमुक्षुवृत्तान्ते पञ्चमोऽध्यायः।

छठा अध्याय।

इस अध्याय में संसारी वैद्य के पास जायके मुक्ति के मार्ग का कुछ और समाचार पाता है।

तब मैं ने देखा कि संसारी चलते चलते सारे घरो को देखता भालता कि वह वैद्य जिस का बखान सुना था किस घर मे रहता है। अन्त को एक बड़ी कोठी के पास आया जिस के साम्हने पक्की भीत बनी थी भीत के फाटक से बहुत लोग आते जाते थे। जब संसारी समीप आया तो उस के भीतर बहुत और लोगो को देखा जो अपनी २ बारी पर अपने २ रोग की औषध पाने के आसरा से बैठे थे। कोठी के आंगन मे नीम के दो बड़े पेड़ लगे थे जिन की छाया से उन लोगों को जो बैठे थे धूप से बड़ी सुखदायक आड़ थी संसारी भी उन के पास जा बैठा। फाटक के साम्हने कोठी के द्वार पर एक डेवढ़ी बनी थी और उस मे कितने भले मनुष्य बैठे थे। उस की दिवाल में दो चार ताके बने थे जिन पर अगणित डिबियां और सीसिया अनेक प्रकार की औषध से भरी हुई रक्खी थी उसी डेवढ़ी मे वह प्रसिद्ध वैद्य आसन पर बैठा था। और संसारी ने देखा कि वृद्ध का रूप श्वेत बाल लम्बी दाढ़ी दयाशीलमुख सुशील और आदरमान है। जब कोई रोगी उस के पास आता तो बड़ी नम्रता के संग उस की नाड़ी देखता उस के रोग की गति पूछता फिर अपनी पुस्तको को पढ़ २ के और औषध का वृत्तान्त लिखके उस को दे देता। यह दशा देख ससारी के मन में दृढ़ आसरा उपजा कि अब मेरे पाव की औषध हो जायगी हाय कि मेरे मन की औषध भी इसी रीति से

होा सकती । जब उस की बारी हुई तो बैद्य के पास आ अपना पाव दिखला हाथ जोड़ कहने लगा कि हे नाथ आप तो बड़े बिद्यावान हैं आप का नाम सुनके अपने पाव की औाषध के लिये आप के पास आया हू ।

तब बैद्य ने उस के पाव देखके कहा कि आः बहुत घायल है यह किस रीति से हुआ । संसारी ने कहा कि एक ब्राह्मण ने लोहे की जूतियां जिन मे कील पड़ी थी तपस्या के लिये मुझे पहिनायके आज्ञा दिई कि जगन्नाथ की यात्रा को जाओ । औार उस ने मुझे भरोसा दिलाया कि ऐसे शरीरी कष्ट उठाने से तू अपने पाप के बोझ से औार अपने मन की मलिनता से छुटकारा पावेगा । सो मैं ने इसी आसरा से उस की आज्ञा मानी । बड़ी २ दूर से आया हूं औार अत्यन्त बड़ा कष्ट उठाया है औार जगन्नाथ का दर्शन भी किया है परन्तु वह कल्याण जिस का बर्णन ब्राह्मण ने किया मुझ को प्राप्त नहीं हुआ । इस के बिरुद्ध मेरा बोझ अधिक भारी हो गया मेरे मन का रोग आगे से अत्यन्त कठिन औार दुःखदायक भया औार मेरे पाव को यही दशा हुई जो आप देखते हैं ।

तब मैं ने सुना कि वह बैद्य औार उस के कितने संगी जो चारों ओार बैठे थे थोड़ा सा हंसने लगे । औार एक ने ससारी से कहा कि जो लोहे की कील पर चलता है तो उस के पाव घायल क्योंकर न होवे परन्तु इस प्रकार के दुःख से मन को क्या लाभ होगा यह बात मैं समझ नही सकता हूं । अरे भाई जिस का दर्शन तुम ने किया है वह कैसा था मै ने सुना है कि वह एक मूर्त्ति कुडोल अन्धी बहरी गूंगी है । क्या तुम जानते हो कि सर्वसामर्थी परमेश्वर ऐसा है अथवा ऐसों की पूजा करने से किसी की परमगति होगी । कभी नही जो ऐसों की पूजा करते

हैं हमारा आचार्य्य कहता है कि वे नरक मे डाले जाते हैं।

तब संसारी ने कहा कि अब तो मैं भी ऐसा ही जानता हूं कि ये देवते मुझ को बचाय नहीं सकते। परन्तु मुक्ति के और किसी मार्ग का ज्ञान मुझ को नहीं है इस दशा मे मै क्या करू।

तब मैं ने देखा कि उस वैद्य ने बड़ी दया और नम्रता के संग संसारी को इस रीति से उत्तर दिया कि परमेश्वर पर और हमारे आचार्य्य पर बिश्वास लाओ तब तुम मुक्ति पाओगे।

संसारी ने कहा। जो आप का आचार्य्य मुझे बचाय सकता है तो मैं बड़े आनन्द से इन देवताओ को छोड़के उस पर बिश्वास लाऊगा। परन्तु मैं नही जानता वह कौन है अथवा मैं किस रीति से उस को प्रसन्न करूं।

वैद्य ने उत्तर दिया कि जो तुम अपने देवताओं और वृथा रीतो को छोड़ने पर प्रसन्न हो तो मै तुम को अपने धर्मवेत्ता के पास भेज दूंगा जो तुम्हारे लिये हमारे धर्म का सब वृत्तान्त कहेगा और यो तुम अपने पाप के बोझ से और अपने मन की मलिनता से मुक्ति पाओगे। परन्तु पहिले चाहिये कि तुम्हारे पाव की औषध हो जावे सो तुम थोड़े दिन यहा रहो जब लो पांव भले चंगे न होवे। तब मैं तुम्हारे लिये उस धर्मवेत्ता के नाम पर एक पत्र लिखूंगा और निश्चय वह तुम को मुक्ति का सत्य मार्ग बतलावेगा।

वैद्य की इन दयावन्त बातो से संसारी अत्यन्त आनन्दित हुआ और उस का बड़ा धन्य माना। फिर अपने पांव की औषध लेके पाव धोने और औषध लगाने की आज्ञा पायके बिदा हुआ।

तब मैं ने देखा कि संसारी वहां से चलके एक धर्मशाला में जो निकट थी थोड़े दिनों के लिये जा टिका। जैसी उस ने वैद्य से आज्ञा पाई थी तैसा किया अपने पांव धो धोके और मलम लगायके बिश्राम किया और कभी २ वैद्य के पास जाके और अपना पांव दिखलायके जैसा अवश्य था नई औषध पाई। इतने में जब वह धर्मशाला पर बिश्राम कर रहा था तब वह छोटी पुस्तक जो उस ने क्रिस्तान पादरी से लिई थी उस के चित्त में आई और वह उस को पढ़ने लगा। यह पुस्तक पाप की बुराई के वर्णन में लिखी गई थी और उस में इस प्रकार का वृत्तान्त था कि पाप केवल कर्म की बात नहीं है परन्तु विशेष करके मन और अन्तःकरण की बात है ऐसा कि जिस के मन में कुचिन्ता है यद्यपि वह कुकर्म भी न करे तथापि वह पापी ठहरता है। फिर यह भी वर्णन हुआ कि पाप के कारण मनुष्य की गति अत्यन्त बुरी हो गई है क्योंकि पाप करके मनुष्य ने अपने को सच्चे परमेश्वर से भिन्न और बिरुद्ध कर डाला है और अपने स्वभाव को भी भ्रष्ट किया है। यहां लों कि परमेश्वर के पवित्र गुण उस को भयानक और डरावने देख पड़ते हैं और इस कारण से वह उस का सत्य ज्ञान अपने मन में रखने नहीं चाहता है। यों सच्चे परमेश्वर को बिसरायके उस्से बहुत दूर भटक जाता है और अन्त को अपने लिये देवताओं को रचता है जो उस के पापी स्वभाव के समान होवें। इस रीति से बुरे भले का बिवेक भी बिगाड़ डालता है और पाप के वश में आ जाता है और किसी प्रकार से अपने को इस बुरी दशा से बचा नहीं सकता है। क्योंकि उस का मन बिगड़ गया है और यद्यपि वह पाप का फल भुगतना नहीं चाहता है तथापि पाप

ही पर ऐसा मोहित हो गया कि उस का छोड़ने पर प्रसन्न नहीं है।

इस प्रकार का वृत्तान्त पढ़ पढ़के संसारी का मन छिद गया और उस के। निश्चय हुआ कि यह सत्य ज्ञान है यही मेरी दशा है। यों ध्यान करते २ उस के पाप का बोझ ऐसा भारी हो गया और उस के रोग की पीड़ा यहां लो बढ़ गई कि वह किसी रीति से सह नहीं सका। परन्तु एक बात से उस के। तनिक सत्य आसरा भी होने लगा क्योंकि उस छोटी पुस्तक मे यह भी लिखा था कि कोई मनुष्य अपनी प्रकृतिमात्र से अपनी बुरी दशा के। नहीं जानता है केवल परमेश्वर के अनुग्रह से पवित्रात्मा के जताने से इस का ज्ञान पाता है। और जब पवित्र-आत्मा किसी के। यह ज्ञान देता है इस का तात्पर्य्य यह है कि उस मनुष्य के। उस बुरी दशा से निकालके बचावे। और इस का वर्णन भी था कि परमेश्वर ने पापी मनुष्य पर दया करके उस के। पाप से बचाने के लिये एक बड़ा उपाय स्थापन किया है अर्थात् एक बड़े मुक्तिदाता के द्वारा प्रायश्चित्त करवाया है। और उस मुक्तिदाता का नाम यही था जो क्रिस्तान पादरी ने कहा था अर्थात् प्रभु यीशु मसीह। इन बातों पर सोचके संसारी के। यही आसरा हुआ कि निःसन्देह मैं अपनी बुरी दशा के। कुछ तो जानता हूं और इस कारण से अत्यन्त दुःखी और शोकित हूं। सो यदि यह बात पवित्रात्मा के जताने से हुई तो यह भरोसा है कि यही पवित्रात्मा मुक्ति के लिये जो और ज्ञान चाहिये क्रम क्रम से मुझे बतलावेगा और उस बड़े मुक्तिदाता के पास मेरी अगवाई करेगा।

तब मैं ने देखा कि संसारी इस भरोसे से धीरज करके थोड़े दिन उस धर्मशाला मे रहा जब लो उस के पाव

भले चंगे न हुए । कभी २ आगे की रीति परमेश्वर से यह कहके प्रार्थना करता रहा कि हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर मुझ पापी को बचा हे परमेश्वर अपना सत्य मार्ग मुझ पर प्रगट कर । अन्त को जब अच्छा हो गया था तब उस दयावन्त वैद्य से महम्मदी धर्मवेत्ता के नाम पर चिट्ठी पाकर और उस की कृपा को देख उस का बड़ा धन्य मान जगन्नाथ की बस्ती को छोड नगर के उस भाग की ओर चला गया कि जिस मे महम्मदी लोग रहते थे। जब वहां पहुचा तो लोगो से पूछने लगा कि महम्मदी धर्मवेत्ता किस घर मे रहता है क्योकि मै उस्से शिक्षा पाने की इच्छा रखता हूं । ऐसी बात उस हिन्दू के मुख से सुनके सब लोग आश्चर्य्यित हुए और उन्हो ने यह कहके कि यह हमारे धर्म का उपदेश ग्रहण करना चाहता है और उस के संग होके उस को धर्मवेत्ता के घर पर पहुं-चाया । उस समय वह महम्मदी धर्मवेत्ता अपने गृह के डेवढ़ी मे गद्दी पर बैठा था और बहुत से मनुष्य उस जाति के उस के आसपास बैठे थे । वह अपने सिर पर एक तिपेचा बाधे था और उस की श्वेत दाढ़ी नाभी तक लंबी लटकती थी और एक बहुमूल्य गद्दी पर कुरान उस के साम्हने धरा था ।

जब वे संसारी को उस के समीप लाये तो उस ने अवज्ञा दृष्टि से उस को देखा परन्तु जब उस वैद्य की चिट्ठी से जो संसारी ने उस को दिई ज्ञान पाया कि यह मूर्त्तिपूजा छोड़के महम्मदी धर्म अङ्गीकार करने चाहता है तब मन में सोचा कि मै इसे प्रसन्नतापूर्वक शिक्षा देऊंगा और उसे इस बात पर आशीर्बाद दिया कि तुम ने सच्चा धर्म्म अङ्गीकार करने की इच्छा किई और ईश्वर के सच्चे दूत पर विश्वास किया ।

तब उस ने संसारी को आज्ञा किई कि भूमि पर बैठ जा और उस्से उस का नाम और उस की अवस्था तथा शिक्षा पाने का प्रकार और उस के बापदादो का धर्म पूछने लगा। जब संसारी से सब वर्णन सुन चुका तो यों कहने लगा।

हे बेटे तेरे वर्णन से ज्ञान हुआ कि अज्ञानता का अंधेरा तेरे हृदय मे छाय रहा है। इस लिये ईश्वर के संदेशों का जो उस ने सृष्टि के प्रारम्भ से मनुष्यो के पास भेजे हैं तुझ से जैसे किसी बालक से वर्णन करना चाहिये।

संसारी ने जब यह सुना तो भूमि पर सिर झुकायके उस को प्रणाम किया और उस के चरण को चूमा तब धर्मवेत्ता उस्से यो कहने लगा।

हे संसारी तुझे यह ज्ञान हो कि ईश्वर एक है और उस महा अविनाशी ईश्वर ने अपने धर्मप्रवर्त्तक आचार्य्यों के हाथ समय २ में मनुष्यों की मुक्ति के लिये संदेशे भेजे अर्थात् आदम और सेत और नूह और अविरहाम और इस्माएल और मूसा और दाऊद और श्रीयुत ईसा मसीह पीछे हमारे मतप्रवर्त्तक महम्मद के हाथ। इन सब आचार्य्यो ने अपने २ समय में ईश्वर की आज्ञा और उस की प्रसन्नता को सब मनुष्यों पर प्रगट किया है परन्तु वे पवित्र पुस्तके जो उन को दिई गई थी बहुधा नाश हो गईं इस कारण से उन का अभिप्राय कोई नही जानता। परन्तु चार पुस्तके परम्परा से मनुष्यो को मिली हैं अर्थात् तौरेत और ज़बूर और इंजील और कुरान और अगली तीन पुस्तको में हमारे आचार्य्य के आने की आगमवाणी दिई गई थी। परन्तु उन अधर्मी यहूदियों और ईसाइयो ने जिन के पास ये पुस्तके थी उन आगमवाणियों को उन मे से निकाल डाला। अब केवल दो एक बात हमारे

मतप्रवर्त्तक आचार्य्य के विषय की उन में पाई जाती हैं जैसा यह कि श्रीयुत ईसा ने कहा है कि मै एक शान्तिदायक तुम्हारे पास भेजूंगा । परन्तु चैाथी पवित्र पुस्तक जिस प्रकार की जब्राएल के हाथ से हमारे आचार्य्य को दिई गई थी वह अब तक उसी प्रकार बच रही । जो तू मुक्ति चाहता है तो उस पुस्तक पर विश्वास ला और उस के। अङ्गीकार कर ।

संसारी ने उत्तर दिया कि हे मेरे स्वामी मैं उसे अङ्गीकार करने के प्रसन्न हूं और ईश्वर से यह प्रार्थना करता हू कि ईश्वर मुझ के। ऐसी शिक्षा करे कि जो उस मे लिखी हैं मै उन वाता के। निश्चय समझूं ।

संसारी के इस उत्तर से धर्मवेत्ता प्रसन्न हो उस के। और भी शिक्षित करने लगा जिसते वह महम्मदी धर्म के। अङ्गीकार करने के योग्य हो जावे ।

धर्म्मवेत्ता ने कहा हे शिष्य जो हमारे मतप्रवर्त्तक अर्थात् महम्मद से पहिले जितने आचार्य्य पृथिवी पर उतरे हैं सभो ने मनुष्यजाति के। कुशल और मुक्ति का संदेशा पहुंचाया और विशेष करके श्रीयुत ईसा धर्मस्तंभ एक २ मनुष्य के। जो उन के पास आता पापो का मोक्ष और कुशल का संदेशा देते थे । परन्तु उन मन्दभाग्य मूर्त्तिपूजको और यहूदियो ने उन की वाते के। न माना निदान उस पिछले धर्मप्रवर्त्तक के। उन्हो ने बड़े कष्ट के साथ मार डाला । इस लिये ईश्वर ने मनुष्यजाति की ऐसी उद्दताई देखके हमारे मतप्रवर्त्तक अर्थात् महम्मद के। भेजा कि उन उद्दते के। खड्ग के बल से अपने आधीन करके ईश्वर की ओर तत्पर करे । और अब हम भी इस वात के। ईश्वर की आज्ञा और धर्म का पहिला काम समझके जैसा हमारे मतप्रवर्त्तक के अनुचरों के योग्य है

खड्ग के बल से सब नास्तिकों और मूर्त्तिपूजकों और यहूदियों और ईसाइयों को सच्चे धर्म की ओर उद्यत करते हैं और अपने सामर्थ्य भर बरबस्ती करके मनुष्यजाति को बुराई की ओर से फिराते हैं।

संसारी ने उत्तर दिया कि जो कुछ आप ने वर्णन किया इससे जाना जाता है कि आप की समझ में ईश्वर मनुष्यजाति पर क्रुद्ध है। और सचमुच हम से अप्रसन्न तो होगा क्योंकि हम सब के सब पापी हैं और वह संपूर्ण गुणों से परिपूर्ण है तो वह अत्यन्त पवित्र और निर्मल भी होगा। परन्तु जब यह दशा है तो मैं जो अपने को सब पापियों का प्रधान समझता हूं क्योंकर उससे मिल सकूं और अपने पापों से मुक्ति पाऊं। क्या मुक्ति की कोई युक्ति वा उपाय आप की धर्मपुस्तक में मिलता है।

धर्म्मवेत्ता ने कहा क्या तुम यह अंगीकार करने पर प्रसन्न हो कि ईश्वर एक है और महम्मद उस का प्रेरित दूत है।

ससारी ने कहा कि मै साहस करके आप से यह बात पूछता हू कि इस अगीकार से और पापियो की मुक्ति से क्या सम्बन्ध है और क्या मै यह अंगीकार करने से परलोक मे कुशल पाने का आसरा रख सकूंगा। क्योकि मै एक पापी हूं जिस पर मृत्यु की आज्ञा दिई गई है और मै अपार दुःख के खटके मे हूं। मैं अभी अपने पापों के बोझ से दबा जाता हू और इस दशा मे मै ऐसे रक्षक को ढूढ़ता हूं जो मुझे प्रलय के समय तक भी न छोड़े।

तब मै ने स्वप्न मे देखा कि धर्म्मवेत्ता और उस के शिष्यो ने इस बात को सुन संसारी को मूर्ख समझके उस की निन्दा किई तौभी धर्म्मवेत्ता ने इस के उत्तर का यह

प्रत्युत्तर दिया । तू यह बात जान्ने चाहता है कि सच्चे धर्म को स्वीकार करने से मरने के पीछे मुझ को क्या फल प्राप्त होगा । इस लिये पहिले तुझे यह समझना चाहिये कि जो मनुष्य की लोथ समाधि मे रखी जाती है तो एक देवदूत आके उसे चिताता है कि काली २ और डरौनी मूर्त्ति के दो देवदूत तेरे पास आते हैं। वे पहुंचते ही लोथ को उठाके बिठलाते है और उससे धर्म और ईश्वर की अद्वैतता और महम्मद की मतप्रवर्त्तकता के लिये प्रश्न करते हैं । जो उस ने योग्य उत्तर दिया तो उस को चैन से रहने देते हैं और स्वर्ग का वायु उसे आनन्दित करता रहता है । और जो उस ने ठीक उत्तर न दिया तो वे उस की खोपड़ी पर लोहे की गदा से मारते हैं और वह पीड़ा के मारे ऐसे बल से चिल्लाता है कि उस की चिल्लाहट मनुष्य और पशुओ को छोड़ सब जीवधारी सुनते है । तब पृथिवी उस को चारों ओर से दबाती और विषधर जीव पुनरुत्थान तक उस को काटा करते हैं। धर्म्मवेत्ता ने पूछा कि हे संसारी अब मुझे बता क्या ऐसी दशा मे सच्चा धर्म्म तुझे कुछ फल न देवेगा जब कि समाधि में ऐसी भयानक परीक्षा करने लगेगे ।

तब मै ने जाना कि संसारी इन बातों को सुनके अत्यन्त डरा और कांपने लगा तौभी वह प्रश्न करने से न रुका और पूछने लगा कि जो लोग महम्मद के धर्म्म पर निश्चय करते हैं दूसरे लोक में उन की क्या दशा होगी ।

धर्म्मवेत्ता ने उत्तर दिया कि हे संसारी तू जान कि उस दिन सब मनुष्यों और पशुओ के शरीर उठाये जायेगे और मनुष्यो के शरीर और उन के प्राण फिर एकट्ठे होंगे और उस दिन के आने से पहिले बड़े २ आश्चर्य्य के चिन्ह

दिखाई देगे। अन्त में नरसिंघा फूंका जायगा जिस का भयानक शब्द धरती आकाश मे भर जायगा और पिछले नरसिंघा के शब्द से एक २ निज शरीर समाधि में से निकलेगा और अपने प्राण के साथ मिल जायगा। वह बड़ी और भयानक सभा का दिन जब सब लोग पूर्णप्रतापी न्यायकर्त्ता ईश्वर के साम्हने उपस्थित किये जायेंगे सो सहस्र बर्ष तक रहेगा। तब श्रीयुत ईसा संसार के न्याय करने का आवेगे और मूर्त्तिपूजकों के नरक की आग मे डालेगे जिस मे से फिर वे कभी निकल न सकेंगे परन्तु सब धर्म्मी लोग हमारे मतप्रवर्त्तक के पास भेजे जायेगे वह ईश्वर से उन के लिये बिन्ती करेगा। धर्म्म-वेत्ता ने यह भी कहा कि तब सब लोग एकट्ठे होकर कितने कहते हैं कि सहस्र बर्ष कितने कहते हैं कि पचास सहस्र बर्ष तक आकाश की ओर देखा करेंगे परन्तु वहां से उन को कुछ समाचार न मिलेगे। इतने मे धर्म्मियों अधर्म्मियों दोनों को अत्यन्त दुःख होगा परन्तु अधर्म्मियों का दुःख अधिक भयानक ठहरेगा।

अब मै ने स्वप्न मे देखा कि संसारी ने जब न्याय के दिन के ऐसे भयानक समाचार सुने तो वह अपने मन मे उदास हुआ और उस के कांधे का बोझ उसे और भी दबाये डालता था और उस के शरीर का कोढ़ और भी प्रगट हुआ परन्तु वह कुछ न बोला।

तब धर्म्मवेत्ता फिर वर्णन करने लगा कि जब सब मनुष्य एकट्ठे होके उस ठहराये हुए समय तक तड़पते रहेंगे तब ईश्वर उन का न्याय करने को प्रगट होगा और देवदूत उन को चारों ओर से घेरे रहेंगे और एक एक मनुष्य का धर्मपत्र जिस मे सभों के कर्म जो उन के रक्षक देवदूतों ने लिख रक्खे हैं अपने साथ लेके आवेगे। तब

एक एक मनुष्य को अपने अपने कामों का लेखा ईश्वर को देना होगा अर्थात् किस ने अपनी अवस्था को किस काम में काटा और किस ने द्रव्य किस प्रकार एकट्ठा किया और किस काम में उसे व्यय किया और अपने शरीर को किस काम मे तत्पर रक्खा और अपनी बुद्धि के बल को और अपनी विद्या को किस काम में व्यय किया ।

संसारी ने कहा जो ऐसा होगा तो हम सब के सब नष्ट हुए क्योंकि किस के कर्म ऐसे है जो ऐसी घोर परीक्षा में ठहर सकें ।

धर्म्मवेत्ता ने उत्तर दिया कि सावधान हो तेरे कर्म्म उस प्रकार के होवे जो उस परीक्षा मे ठहरें क्योंकि इस में कुछ सन्देह नहीं कि ये सब बाते योंही होगी जैसा मैं ने वर्णन किया। क्योंकि इस धर्म्मपुस्तक मे जो मेरे साम्हने धरी है ये सब बाते लिखी है और इस को जब्राईल देवदूत हमारे आचार्य्य के पास लाया ।

संसारी ने यह सुनके ठण्ढी सास भरी फिर सिर नीचे करके धर्म्मवेत्ता की बाते सुनता रहा। वह यों बर्णन करता गया कि उस महा सभा के दिन एक बड़ी तुला खड़ी किई जायगी जिस मे एक एक मनुष्य के कर्म्म तोले जायेंगे और वे लोग जिन के भले कर्म्म बुरे कर्म्मों से तोल मे बढ़ जायेगे मुक्ति पावेगे ।

तब संसारी ने कहा कि ऐसी दशा में मुझ पर अवश्य अपार कष्ट की आज्ञा दिई जायगी क्योंकि मै अपने पापो का बोझ अभी नहीं उठा सकता हूं। अब मुझे बतलाइये कि इस के पीछे क्या होगा ।

धर्म्मवेत्ता ने उत्तर दिया कि जब यह परीक्षा हो चुकेगी तो वे पुण्यवान् जो स्वर्ग मे जाने के योग्य हैं दहिना मार्ग लेगे और जिन को नरक की आज्ञा होगी वे बांयां

मार्ग पकड़ेगे। परन्तु दोनो को सरात के पुल पर जो नरक के बीचों बीच बना है उतरना होगा इस पुल को बाढ़ बाल से भी सूक्ष्म और खड्ग की धार से भी अति तीक्ष्ण है। तब भले कर्म्मवाले उस पर से सुख से उतर जायेगे परन्तु बुरे कर्म्मवालों के पैर कांपेगे और वे नरक मे जिस का प्रज्वलित मुख उन को लेने के लिये पसारा जायगा सिरके बल गिरेगे।

संसारी ने पूछा क्या वे सब दिन नरक मे पड़े रहेगे।

धर्म्मवेत्ता ने उत्तर दिया कि उन मे से जो सरात के पुल मे से गिर पड़ेगे जितने बिश्वासी तो थे परन्तु किसी २ बातो मे पापी हैं इस कारण से वे उस नरक में जो सात नरको मे पहिला नरक है जाते है वहा कई एक दिन तक अपने पापो के भोग के लिये कष्ट उठाकर अन्त को प्रसन्नता की दशा मे आते है। परन्तु शेष जो सच्चे धर्म्मवाले नही केवल नाम ही के मुसलमान है वे सातवे नरक मे जाते हैं वहा से कभी नही निकल सकते।

तब मै ने स्वप्न में देखा कि जब संसारी ने सुना कि धर्म्मी लोगो को भी अत्यन्त और असह्य कष्ट उठाने पड़ेगे फिर यह भी सुना कि एक २ की मुक्ति उस के भले कर्म्मो के आधीन है तो अत्यन्त डरके और उदास होके कहने लगा कि जो सब बाते योंही हैं तो मेरी मुक्ति क्योंकर हो सकेगी।

तब धर्म्मवेत्ता ने उत्तर दिया कि जो तू मूर्त्तिपूजा को छोड़के मुसलमान होने का अभिलाषी है तो मै बताऊंगा कि तुझे क्या करना योग्य है। उस ने तब उसे समझाया कि हमारे धर्म्म मे स्नान करना और हाथ पैर मुख दात धोना दिन भर मे पाच बार ईश्वर का स्मरण और भजन करना और बर्जित वस्तु अर्थात् शूकर से घिन करना

और दान देना और व्रत करना इससे भी अधिक जो जो धर्म्म के कर्म्म हैं उन को करना होता है ।

संसारी ने कहा कि मैं ने ऐसे काम बहुत किये हैं बरन जो आप ने आज्ञा किई उससे भी अधिक मै ने किये हैं । आप तो केवल शूकर के मास को न खाने की आज्ञा देते हैं परन्तु मैं ने तो लड़कपन से सब मांस को भी वर्जित किया है । मैं ने बड़े २ व्रत भी किये हैं और देह को बड़ी पवित्रता से रहा हूं परन्तु ऐसे ऊपरी कामो से मुझ को कुछ फल न हुआ । मैं अपने पाप के कोढ़ से किसी प्रकार से पवित्र न हुआ और न मेरे पाप का बोझ पूजा करने और व्रत करने से हलका हुआ । इन से कुछ मेरे पिछले पाप नहीं कट सकते हैं क्योंकि जितने पुण्य मैं करूं फिर भी उस कर्त्तव्य से अधिक न होगा जो इस समय मे उचित है । मुझ को ऐसा ज्ञान होता है कि मनुष्य की दशा संसार मे इस प्रकार की है कि उस के लिये एक ऐसा बड़ा प्रायश्चित्त चाहिये जिसे कोई मनुष्य नहीं करने सकेगा अर्थात् पाप से पवित्र करने का एक ऐसा प्रायश्चित्त जो संपूर्ण सृष्टि से भी नहीं हो सकता ।

धर्म्मवेत्ता ने उत्तर दिया कि तुम्हारा अनुमान यह है कि हमारे पवित्र धर्म्म से तुम्हारे मनोभिलाष पूरे नही हो सकते । इस कारण से तुम हमारे मान्य आचार्य्य पर भी निश्चय नही ला सकते कि वह ईश्वर और तुम्हारे बीच पापों की क्षमा करने के लिये सहायक ठहरे और तुम हमारी पवित्र व्यवस्था और पुण्य रीतों को अपने पवित्र करने के लिये न्यून ठहराते हो ।

तब मैं ने देखा कि धर्म्मवेत्ता अत्यन्त क्रुद्ध होके उससे पूछने लगा कि क्योंकर तू ऐसा साहस कर सकता है जो इस प्रकरण में तर्क करे अथवा हमारे मान्य आचार्य्य और

पवित्र धर्म के माहात्म्य मे सन्देह करे। और धर्म्मवेत्ता के शिष्य भी उस बेबस प्रश्नकर्त्ता को तिरस्कृत करने लगे।

जब संसारी ने अपनी बातो से उन लोगो को अप्रसन्न देखा तो बडी दीनता से कहने लगा कि महाराज मेरी इच्छा नहीं थी कि आप लोगो को दुःख देऊं। मेरा अपराध क्षमा कीजिये मै तो अज्ञान हूं और आप की शिक्षा झट मेरे समझने मे नहीं आती है। आप की आज्ञा हो तो इस समय चला जाऊं और आप की बातो पर भली भांति ध्यान करके किसी दूसरे समय जब आप को अवकाश हो आप के पास आऊंगा तो परमेश्वर के अनुग्रह से और आप की कृपा से मेरा सन्देह दूर हो जायगा। यह कहके संसारी चला गया।

इति मुमुक्षुवृत्तान्ते षष्ठोऽध्यायः।

सातवां अध्याय।

इस अध्याय में संसारी महम्मदी धर्म का जितना और समाचार और वृत्तान्त चाहिये था पायके उस्से सन्तुष्ट नहीं होता है।

तब मैं ने देखा कि जब संसारी धर्म्मवेत्ता से बिदा हुआ तो उस बस्ती के बाहर एकान्त मे चला गया और आगे की रीति बडा शोच और ध्यान करने लगा। परन्तु उस समय बहुधा चुपचाप बैठ रहा और अपना बिचार ऐसा नही सुनाया कि यह कैसा शोच करता है कोई दूसरा जन अच्छी रीति समझ सके। केवल दो एक बार मन की जलन के मारे पुकारने लगा कि मुक्ति के लिये क्या करूं और सत्य मार्ग कैसे जानूं तो फिर अपने को रोकके उस छोटी पुस्तक को जो किरिस्तान पादरी से

पाई थी पढने लगा और ऐसा सूझ पड़ा कि कभी २ बड़े उद्योग और यत्न से प्रार्थना भी करता है । अन्त को जब साझ होने लगी तो रात के टिकाव की खोज के लिये बस्ती मे चला गया । उस समय ससारी ने देखा कि उस बस्ती के बहुत से लोग सूर्य्य अस्त होने पर बाहर निकलके घरतो पर शतरञ्जी और चटाइया बिछायके मुख पश्चिम की ओर करके घुटने टेकके भजन करते है । और ऐसा सूझ पड़ा कि अपना मन भजन पर बहुत स्थिर करते हैं क्योंकि बार २ दण्डवत अष्टांग प्रणाम करके किसी ओर को अपनी आख नही फैलाते हैं । यह दशा देख संसारी ने कहा कि ये लोग तो नि:सन्देह बड़े धर्म्मी होगे । फिर आगे बढ़के एक सराय मे रात का टिकाव अपने लिये ठहराया । जब खाना खा चुका और अपने वर्त्तन को शुद्ध कर लिया तो सोने को लेट गया परन्तु उस सराय में ऐसी धूमधाम मची थी कि वह सो नही सका और चारों ओर की बातचीत से उस को ज्ञान हो गया कि कलके दिन महम्मदियो का एक बड़ा पर्व्व होगा । यह बात सुनके ससारी ने अपने मन मे ठाना कि बड़े भोर उठके धर्म्मवेत्ता के यहा जाना चाहिये नही तो इस पर्व्व के कारण शिक्षा पाने का अवकाश नही होगा ।

दूसरे दिन ससारी बड़े तड़के उठके धर्म्मवेत्ता के यहां चला गया और दण्डवत प्रणाम करके पहिले दिन की अयोग्य बात का क्षमा मांगके कहने लगा कि जो आप को इस समय अवकाश हो तो कृपा करके दास के दो एक प्रश्न सुन उन का उत्तर दीजिये फिर आप को कष्ट नही होगा ।

धर्म्मवेत्ता ने कहा भला अब क्या पूछना है ।

ससारी ने कहा कि जो शिक्षा आप हम को दे चुके

हैं उन की कितनी बातें बहुत ही ग्रहण योग्य और यथार्थ देख पड़ती हैं। जैसे यह कि एक ही परमेश्वर है और वह सर्वत्र पवित्र और निर्दोषी है और न्यायी होके पापियों को दण्ड देनेवाला है मेरा मन साक्षी देता है कि यह बात सत्य है। परन्तु आप की शिक्षा में एक बात रह गई जो मेरे अन्धे मन पर अब लों प्रकाशित नहीं हुई सो यह है कि जब परमेश्वर न्यायी होके पाप का दण्ड देनेवाला है तो पापी जन उस दण्ड से छूटने की आशा किस प्रकार से रख सकते हैं। आप ने तो ऐसा कहा था कि पूर्व्वकाल में एक अर्थात् श्रीयुत ईसा मनुष्य के पापमोक्षण और कुशल का उपदेश करने को परमेश्वर की ओर से आया परन्तु जब मूर्त्तिपूजकों और यहूदियों ने उस को मार डाला तब आप का धर्म्मप्रवर्त्तक खड्ग लेके आया कि बलात्कार से मनुष्य को बुराई की ओर से फिरावे। सो आप का अभिप्राय क्या यह है कि जो उपाय परमेश्वर ने पहिले श्रीयुत ईसा को भेजके ठहराया सो निष्फल वृथा ठहरा और इस कारण बलात्कार का उपाय ठहराना प्रयोजन था। क्योंकि जो ऐसा हो तो मेरे मन के दो बड़े सन्देह हैं एक तो यह है कि परमेश्वर का कोई उपाय जो उस ने सचमुच ठहराया है किस रीति से निष्फल और वृथा निकले क्योंकि वह सर्व्वज्ञानी और सर्व्वसामर्थी है। और दूसरा यह कि मनुष्य जो दया के आकर्षण से पाप की ओर से फिराया न जावे तो बलात्कार और बरबस्ती से क्योंकर फिराया जायगा क्योंकि क्रूरता से मेरा मन अधिक व्याकुल और अविश्वासी हो जाता है और निरास होके पाप में और भी डूब जाता। फिर एक और बात यह है सो आप दया करके सुनिये कि हम ने एक छोटी पुस्तक किरिस्तान पादरी

से पाई है जिस मे लिखा है कि यही श्रीयुत ईसा अर्थात् प्रभु ईसा मसीह अब लों भी परमेश्वर की ओर से पाप का मोक्ष करनेवाला है और इसी लिये वह मारा भी गया जिसतें पाप का प्रायश्चित्त करे। हम ने तो बालकपन से किरिस्तानों को म्लेछ और नास्तिक समझा है और अब भी उन की दशा नही जानते हैं परन्तु आप की बात और उन की बात इस में मिलती है कि वही प्रभु पूर्वकाल मे परमेश्वर की ओर से मोक्ष करनेवाला था। सो आप कृपा करके बतलाइये कि वह किस कारण से इन दिनों मे भी मुक्तिदाता नही है जैसे किरिस्तान लोग कहते हैं।

तब मै ने देखा कि जब संसारी ये बाते कह रहा था तब धर्म्मवेत्ता का मुख क्रमक्रम अधिक व्याकुल और क्रोधित होता गया। निदान अपने को रोक नहीं सका और अत्यन्त झड़प से संसारी को झड़कके कहने लगा कि अरे चंडाल यहां से निकल जा हम पर और हमारे पवित्र धर्म और आचार्य्य पर ठट्ठा करने को आया है। जो किरिस्तानों का धर्म तुझ को प्रसन्न होता है तो उन के पास जाके भ्रष्ट हो। तुम्हारे लिये भला है कि किरिस्तानों का राज इस देश मे हो गया नहीं तो खड्ग लेके हम तुम को तुरन्त ठीक कर लेते।

धर्म्मवेत्ता का ऐसा क्रोध देख और उस की यह क्रूर और कठिन बात सुन संसारी निपट डर गया और झट पट वहां से भाग निकला।

अब मैं क्या देखता हूं कि जब संसारी धर्म्मवेत्ता के घर से चलके थोड़ी दूर निकल आया तो उस ने एक गली मे मनुष्यों का एक बड़ा समूह देखा जो ताजिया लिये बाजे गाजे बजाते हुए बावलो की नाईं उछलते कूदते

और हसन हुसैन हसन हुसैन कहते हुए चले जाते थे। उन के पीछे एक और भीड़ मनुष्यों की आई जो हाथों से खड्ग फरी और गदाओं को नचाते हुए चले जाते थे उन के पीछे और भी ताजिये कांधों पर उठाये हुए बहुत से मनुष्य चले जाते थे। तब संसारी ठहर गया क्योंकि भीड़ के मारे वह आगे न जा सका और अपने कांधे के बोझ के कारण जो अत्यन्त भारी था उदासी के मारे गली की एक ओर धरती में बैठ गया और यह चाहता था कि जब भीड़ छंटे और हुल्लड़ घटे तो आगे बढ़े। परन्तु लोगों का आना जाना सायंकाल तक भी न घटा फिर सायंकाल को और भी रोला धौला होने लगा क्योंकि सारी गलियां मनुष्यों से भरी रहीं जो उन को भला लगता था वही करते थे ऐसा कि संपूर्ण नगर अपवित्रता से भरा था।

तब संसारी को समाचार पाने की बड़ी इच्छा हुई कि ऐसे कामों से इन लोगों का क्या अभिलाष है और वह इधर उधर देखने लगा कि कोई इन कामों का प्रयोजन वर्णन करे। निदान उस ने देखा कि थोड़ी दूर पर एक भिक्षुक खड़ा है तब साहस करके उससे पूछा।

भिक्षुक ने उत्तर दिया कि हे मित्र अब तक तू कहां था क्योंकि तेरे डौल से जाना जाता है कि तू मुहर्रम के पर्व से अनजान है। क्या तू नहीं जानता कि ये लोग जो एकट्ठे हैं हसन हुसैन की मृत्यु के स्मरण के लिये शोक करते हैं।

तब संसारी ने पूछा कि ये कौन थे।

भिक्षुक ने उत्तर दिया कि हे मूर्ख तू नहीं जानता कि ये हमारे धर्मप्रवर्त्तक की बेटी फातेमः के जो अली की स्त्री थी बेटे हैं। और वही बड़े न्याय के दिन एक हाथ में अपने मारे हुए बेटे का सिर और दूसरे हाथ में अपने

बिष दिये हुए बेटे का हृत्पिण्ड लेकर ईश्वर के सिंहासन के साम्हने आवेगी और उन दोनो के प्रायश्चित्तवाली मृत्यु के कारण से उन के मतावलम्बियों के लिये अवैया कष्ट से छुटकारा चाहेगी।

तब मैं ने स्वप्न मे देखा कि जब संसारी ने ये बाते सुनी तो अत्यन्त प्रसन्न होके कहने लगा कि क्या तुम यह प्रमाणिक कर सकते हो कि जिन्हों ने इस संसार मे उन का अनुसरण किया है उन लोगो का पाप मोक्ष होवेगा और वे इन की मृत्यु के सहाय से सब दिन प्रसन्नता मे रहेंगे।

भिक्षुक ने कहा कि मै निश्चय प्रामाण्य कर सकता हूं।

संसारी ने कहा कि यह बड़े आश्चर्य्य की बात है क्यो-कि मैं अभी तुम्हारे इमाम अर्थात् धर्म्मवेत्ता के पास बैठा था उस ने इस बात का कुछ बर्णान नही किया।

भिक्षुक ने कहा। यह मैं नही कह सकता हू कि कुरान में इस का वर्णान है वा नहीं परन्तु मै जानता हू कि यह बात सच्ची है।

संसारी ने कहा तो तुम्हारे प्रमाण कहा रहे।

भिक्षुक ने कहा यह कथा हमारे बाप दादो से चली आई है और निश्चय करके सत्य है।

संसारी ने कहा जो यही दशा है तो हिन्दुओ के इतिहास भी उन के देवताओं के प्रकरण में जो वे कहते हैं सच होगे।

भिक्षुक ने कहा हे नास्तिक क्या तू हमारे मतप्रवर्त्तक के पोतो को हिन्दुओ के देवताओ से समान करता है।

संसारी ने कहा मै समता नही करता मै तो केवल सत्य जान्ने की अभिलाषा रखता हूं। सो अब बतलाइये कि आप कौन सी साक्षी से इन कहानियो पर भरोसा

रखते हैं और इस भरोसे से आप का निस्तार क्योंकर हो सकेगा।

भिक्षुक ने उत्तर दिया कि हमारे पास इतिहासों से अधिक और भी हेतु हैं अर्थात् प्राचीन समय से इन वार्त्ताओं के स्मरण के लिये ये पवित्र चलन ठहराये गये हैं।

संसारी ने कहा। इस प्रकार के हेतु तो ब्राह्मण लोग भी अपने देवताओं के प्रकरण मे लाते है। कई एक कहते हैं कि देवपूजा का चलन तो संसार के प्रारंभ ही से होता आया है और बहुत से हेतु हैं जिन से यह निश्चय हो सकता है कि देवपूजा सनातन से चली हुई है।

तब भिक्षुक क्रुद्ध होके संसारी की ओर देखने लगा। तौभी वह अपने क्रोध को रोकके पूछने लगा कि जिन वृत्तान्तों को तू ने अपनी आंखों से नही देखा उन को निश्चय करने के लिये तू कौन सी साक्षी को योग्य जानता है।

संसारी ने उत्तर दिया कि मै तो अनभिज्ञ हूं और चर्चा करना भी नही जानता। फिर भी बिना विद्या पढ़े अपनी बुद्धि की शिक्षा से मैं जान सकता हूं कि यद्यपि हिन्दू देवताओं की कहानियां परम्परा की बात से और प्राचीन रीतों से भी संयुक्त हैं तथापि निश्चय करके सच नही हो सकती हैं। इसी प्रकार पर यदि परम्परा की बातों और पुरानी रीतों के अधिक और कोई हेतु तुम्हारे पास न हो जिस्से हसन हुसैन की कहानी सिद्ध ठहरे तो मुक्ति के विषय तुम्हारी आसा वृथा होगी मानो तुम एक नेव पर भरोसा रखते हो जो ठीक उपयोग के समय तुम को धोखा देवे। जो गंगा का भ्रमण करना चाहता है उस को चाहिये कि जिस नाव पर वह चढ़े पहिले उस की दृढ़ता की भांति २ परीक्षा करे। सो कितना

अधिक अवश्य है कि भवसागर के पार जाने के लिये एक दृढ और स्थिर उपाय ठहरावे ।

भिक्षुक ने पूछा क्या तुम उन कुलीन मनुष्यों के होने के विषय मे सन्देह करते हो ।

ससारी ने उत्तर दिया मै नही कहता हूं कि ये लोग नही हुए वह कथा जो तुम ने उन के होने के विषय में कही उस मे सन्देह नही है । परन्तु वह बात जो तुम ने उन के मतावलम्बियों की मुक्ति के विषय कही इस मे मुझे कुछ सशय है । अब कृपा करके बताइये आप के मतप्रवर्त्तक के पोते क्योंकर मरे क्या उन्हों ने अपने मतावलम्बियो के लिये प्रसन्नता से अपने प्राण दे दिये ।

भिक्षुक ने कहा मै देखता हूं कि तू बड़ी मूर्खता के अंधियारे में फंसा हुआ है इस कारण मै तुझे बतलाता हूं कि श्रीयुत हसन को उस की एक स्त्री ने छुहारे में विष भरके खिला दिया और श्रीयुत हुसैन जंगल से आते हुए यजीद की सेना से मारे गये ।

तब मै ने स्वप्न में देखा कि संसारी घबराहट में पड़ गया । निदान उस ने कहा कि जो बाते तुम ने कही उन से ज्ञान होता है कि ये दोनो मनुष्य भी हमारे सदृश पापी थे और यह भी है कि उन्हो ने अपने प्राण स्वमतावलम्बियों के लिये प्रसन्नता से नहीं दिये वे तो कपट और अन्धेर से मारे गये ।

भिक्षुक ने कहा ऐसी बातें कहके तू किस का प्रमाण खण्डन करना चाहता है क्योकि किस ने कहा कि उन्हो ने अपने प्राण प्रसन्नता पूर्वक दिये और वे हमारे नाई पापी मनुष्य न थे ।

संसारी ने उत्तर दिया कि हे भाई ऐसे मनुष्यो के सहाय से जो हमारे तुल्य पापी है हमारी मुक्ति क्योंकर

हो सकेगी। बरन मनुष्य के सन्तानो में अथवा स्वर्ग के रहनेवालो में से कौन कह सकता है कि मै मुक्तिदाता हू ऐसा मनुष्य कहां मिलेगा तौभी ऐसे मुक्तिदाता के बिना मै नाश हो जाऊंगा। हाय मै कैसा मन्दभाग्य हूं मेरे लिये तो यही बात बहुत भली थी जो मै नहीं जन्मता।

तब मैं ने देखा कि संसारी यह कहके अत्यन्त रोने लगा और भिक्षुक इस बोलचाल के कारण जो उस्से हुई थी भड़का और पत्थर और कीचड़ उठाके चाहा कि इस बेबस पर फेंके। परन्तु संसारी ने उस का यह बिचार देखके उस समूह से निकल समाधिस्थान मे जाके आड़ लिई। वहां वह थोड़ी देर तक बैठके अति उदास हुआ क्योंकि उस ने महम्मदी मत में भी बहुधा वे ही बाते पाईं जो मूर्त्तिपूजकों मे देखी थी। यद्यपि वे मूर्त्तों से घिन करते थे और कई एक ज्ञान का उपदेश रखते थे तौभी संसारी ने उन के पंथ मे कोई ऐसी बात न देखी जिससे अपने चित्त की मलिनता दूर कर सके और अपने पिछले पापों के प्रायश्चित्त करने का कोई प्रकार उस में न पाया।

इति मुमुक्षुवृत्तान्ते सप्तमोऽध्यायः।

आठवां अध्याय।

इस अध्याय में संसारी का भाई उस की खोज में आके उस को घर की ओर ले जाता है।

तब मैं ने स्वप्न मे देखा कि वह समाधिस्थान जिस में संसारी बैठा था उस बस्ती के निकट था जिस मे महम्मदी धर्म्मवेत्ता रहा और राजमार्ग के तट पर भी

ससारी ने कहा । हाय मैं कैसा मदभग्य हू मेरे लिये तो यही बात बहुत भली थी जो मै नहीं जन्मता । देखो ७२ पृष्ठ ।

था । उस में कितनी समाधि बनी थीं जो पुराने होने के कारण टूट गई थीं और उन के पतथर इधर उधर बिखर रहे थे । और दो एक ऊंची भीत भी पूर्व पश्चिम होके उस प्रकार की बनी थी जो महम्मदी लोग भजन करने के लिये बनाते हैं और जिन को नमाजगाः कहते हैं । इस्से अधिक मार्ग के तट पर एक ऐसी कोठी थी जिस मे यात्री लोग टिकते हैं और उस के नीचे का कोठा डेवढ़ी का रूप बना था जो अश्वबंधन के काम आता था और ऊपर के कोठे मे यात्रियों के लिये चैन करने को समस्त प्रकार की सामग्री उपस्थित थी । और यह स्थान सुहावनी छांह से भी अत्यन्त प्रसन्नतापूर्बक दिखलाई दिया क्योंकि इमली के कितने बड़े २ पेड़ उस कोठी के पास ऐसे लगे थे कि उस मे धूप का कष्ट किसी प्रकार से यात्रियों को नही लगता था । और समाधिस्थान के तीनो ओर वाटिका और उपवन भी थे जिन मे आम ताड़ खजूर और भी अनेक प्रकार के वृक्ष अत्यन्त शोभा दे रहे थे । और कोठी के सन्मुख मार्ग के उस पार ठंडी छाया में एक पक्का कूवा बना था जिस के समीप केले के कितने पेड़ अपने चिकने सुन्दर पत्तों को इधर उधर झुलाते थे ।

तब संसारी ने जब थोड़े बिलब तक उस समाधिस्थान मे बैठ रहा था उस कोठी को देखके मन किया कि रात को इस मे रहेंगे और ज्यों ज्यों उस की ओर चला जाता था त्यों त्यों अपने से बात करके इसी रीति से अपना विचार प्रगट करता था कि इस समाधिस्थान मे कितने और कैसे २ लोग गाड़े गये होंगे कोई नही जानता और अब उन की क्या दशा है यह भी कोई नही जानता है । एक समय वे हमारे समान जीते थे और अब एक समय हम भी उन के समान मर जायेंगे परन्तु मरने के पीछे

क्या दशा होगी। उन को तो निश्चय एक बात हो गई होगी मेरे लिये तो सन्देह और अत्यन्त भय की बात है। और महम्मदी लोगो के धर्म्म मे कोई ऐसी बात नहीं मिलती हैं जिस्से मेरी बुद्धि और मेरा मन सन्तुष्ट हो सके क्योकि पाप काटने का कोई यथार्थ उपाय दृष्टि नही आता है और जब लो मेरा पाप कट न जाय तब लो मै मरने से डरता रहूगा। फिर अत्यन्त दुःखित होके कहने लगा कि हाय परमेश्वर मुझ पापी पर दया करके मुक्ति के सत्य मार्ग पर मेरी अगुवाई कर।

ऐसी २ बाते कहके संसारी उस ऊपर के कोठे में जा बैठा और अपनी आखो को आकाश की ओर उठायके तारो को जो उस समय चमकने लगे देखता रहा। इतने मे घूंघुरो की झनझनाहट का एक ऐसा शब्द दूर से उस के कान तक पहुंचा जैसे कोई टट्टू पर चढ़ा हुआ मार्ग से होके उस बस्ती की ओर आता है। थोड़ी देरी के पीछे वह घुडचढा समीप मे आ पहुंचा और उस कोठी को देख कि इस मे अच्छा टिकाव होगा उतर गया और टट्टू को एक सेवक के हाथ जो उस के सग आया था छोड़ उसी ऊपर के कोठे मे घुस गया। संसारी उस को देख अत्यन्त आश्चर्यित हुआ क्योकि उस को ज्ञान हुआ कि यह मेरा छोटा भाई है। उस का नाम सुखबिलासी था और वह संसारी से दो चार बरस का छोटा था। देखने मे वह मोटा चिकना श्रीमान् कुशल था उस के बस्त्र बहुमूल्य पाट का अंगा शाल का कटिबन्ध मखमल की टोपी और हाथ और गले मे रत्न के गहने पहिने था। जब वह पहिले उस कोठे मे आया तो अंधियारे के कारण और ससारी के रूप बदल जाने से भी उस ने उस को नहीं पहिचाना और यह समझके कि कोई यात्री होगा उस से राम २ कहा।

संसारी ने उत्तर दिया कि जो तुम्हारे कल्याण करने को राम की कुछ सामर्थ्य होती तो हम भी तुम्हारे लिये उस को पुकारते वह क्या कर सकता है परन्तु परमेश्वर भला करे तो भला होगा ।

सुखबिलासी ने अपने भाई का शब्द चीन्हके कहा कि अरे भाई तुम्हारा ऐसा रूप बन गया है हम ने तो तुम को नहीं पहिचाना और इधर उधर दौड़के हम ने तुम्हारी कैसी खोज किई है परन्तु जब देखा तब नहीं पहिचाना । भला राम की कृपा से आज मेरा परिश्रम सुफल हुआ मै बड़ा सुभाग्य हू सो राम राम क्योंकर न कहूं ।

संसारी ने उत्तर दिया अरे भाई हम ने राम की सामर्थ्य और गुणो को भली भांति परख लिया है और हम को निश्चय हो गया है कि वह कुछ नही है उस के भजन करने से देखो मेरी कैसी दशा हो गई । परन्तु परमेश्वर की कृपा से तुम से भेट हुई सो अब हम को बतलाओ कि तुम किस मार्ग से होके आये हो और घर कब छोड़ा और वहां का समाचार कैसा है क्योंकि बहुत बिलम्ब हो गया जब से वहां की एक बात हमारे सुन्ने मे न आई ।

सुखबिलासी ने कहा कि तुम को भी चाहिये अपना समस्त वृत्तान्त हम से कहना क्योंकि इसी अभिलाषा से हम घरबार को छोड़ तुम्हारी खोज कर यहां आये हैं जिस्तें तुम्हारा कुशलक्षेम पूछके तुम को फिर घर को ओर ले जावे । परन्तु मेरे लिये कुछ भोजन चाहिये क्योंकि यात्रा करने से बहुत भूखा हू और ऐसा देख पड़ता है कि भोजन करने से तुम्हारी भी कुछ हानि न होगी कितने दिन हुए होगे जब से तुम ने सुस्वाद अच्छा भोजन न पाया ।

इतनी बाते कहके सुखबिलासी भोजन का उपाय अपने सेवक के हाथ से कराने के लिये बाहर निकला ।

और मैं ने देखा कि यद्यपि संसारी पहिले अपने भाई से भेट होने में आनन्दित और हर्षित था तथापि थोड़ी देर के पीछे जब उस को ज्ञान हुआ कि भाई का मन आगे की रीति केवल सांसारिक चिन्ताओं में फंसा रहता है और मेरी चिन्ता शोक पर समदुःखी नहीं हो सकती तब और भी चित्त मे शोच आया कि पूर्वकाल मे मेरी भी यही गति थी जो मैं फिर घर जाऊं तो क्या जानूं फिर वैसी ही गति हो जायगी । तब वह आगे की रीति उदास और सन्तापी होने लगा और ठंढी सांस भरके कहा कि हे परमेश्वर मुझ पापी अज्ञान को निश्चिन्त होने मत दो मेरी रक्षा करो और सत्य मार्ग पर चलाओ ।

थोड़ी देर के पीछे सुखविलासी लौटके अपने भाई के पास बैठ गया और उस का सब वृत्तान्त पूछने लगा । तब संसारी ने उससे आदि से ले अन्त लो सब अपना वृत्तान्त निवेदन किया कि जिस रीति से ब्राह्मण की आज्ञा के अनुसार गंगास्नान किया और राम के भजन मे तत्पर रहा और ब्राह्मण को बहुत दान दक्षिणा दिई और देवताओं की पूजा मे अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति भेट किई और जगन्नाथ के तीर्थ को जाने मे अत्यन्त कष्ट उठाया और इतने जप तप तीर्थ व्रत दान पुण्य से मन के शोक और सन्देहों को छोड़ और कुछ फल प्राप्त न हुआ । और भी इस के पीछे महम्मदी लोगो के पास गया परन्तु उन के धर्म मे भी पाप काटने का यथार्थ उपाय और मुक्ति का सत्य मार्ग नही पाया । फिर मन खोलके बतलाया कि किरिस्तान पादरी के हाथ से एक छोटी पुस्तक पाई और उस के पढ़ने से मन कैसा छिद गया । इतनी बात कहके फिर संसारी कहने लगा कि अरे भाई मेरी ऐसी दशा हो गई है कि जब लो मुक्ति का सत्य मार्ग

मुझ को विदित न होवे तब लों मेरे मन का चैन नही हो सकता है जब लों इस को न पाऊं इस की खोज मे लगा रहूगा क्योंकि इस दशा मे संसार के सम्पूर्ण धन सम्पत्ति राग रंग से मुझ को तनिक भी सुख नही हो सकता ।

संसारी की इन बातो को सुनके सुखबिलासी बहुत उदास हो गया और अपने भाई को भरोसा देने की इच्छा से प्रेम और शान्ति की वाते कहने लगा कि अरे भाई ऐसे निरास मत होओ बडी बिपत्ति तो सही है आगे को कुशल मिलेगा । तुम्हारे दुःख और क्लेश को देख मेरा मन अत्यन्त शोकित हुआ परन्तु शोक के सागर मे डूब जाने से क्या लाभ होगा । आओ तो अब भोजन सिद्ध है हम तुम दोनों अपनी भूख मिटावे इस से कुछ चैन पावेगे और पीछे देखेगे कि क्या करना चाहिये ।

तब मै ने देखा कि ये दोनों भोजन करने लगे और खाते २ सुखबिलासी ने अपने भाई को बतलाया कि घर का समाचार सब भला है परन्तु जब तुम पहिले उस ब्राह्मण के कहने से चले गये तो सब नातेदार और भाई बन्धु बड़े उदास भये । फिर भी हम समझते थे कि जब तुम गंगास्नान कर चुकोगे तो फिर अपने घर लौट आओगे इसी आसा से हम ने बहुत बेर लो धीरज किया और प्रतिदिन तुम्हारी बाट जोहते रहे । अन्त को जो तुम नही आये तो सब लोगो ने हम से कहा कि अपने भाई की खोज मे जाना चाहिये । तुम जानते हो कि परिश्रम करना और कष्ट उठाना मुझ को कैसा बुरा लगता है परन्तु ऐसी दशा में हम क्या करें नि:सहाय चल निकले । पहिले उस ब्राह्मण के पास गंगा के तीर पर गये और जब उस को पाया तब तुम्हारा समाचार पूछा क्या तुम ने नही कहा कि उस को बहुत दान दक्षिणा दिई ।

संसारी ने उत्तर दिया कि हा जितना हमारे पास था जो देवताओं के साम्हने नही चढ़ा था सब का सब उस को दे दिया। और अन्त को जब उस ने जगन्नाथ के तीर्थ की आज्ञा दिई तब हमारे वस्त्रों को भी उतारके ले लिया और यह कंबल हम को ओढाय दिया।

सुखबिलासी ने कहा कि भला उस के डौल से तो हम ने ऐसा समझा कि क्या जाने भाई ने इस के संग सूमपन किया होगा क्योंकि वह बडा टेढ़ा था तुम्हारा अपमान और निन्दा को छोड़ और कुछ न कहा। उस ने तुम को अज्ञान पागल नास्तिक भी कहा और बड़े कठिन से हम को तुम्हारा वृत्त बतलाया कि तुम किस ओर को गये थे। परन्तु जब हम को विदित हुआ कि तुम जगन्नाथ को गये हो तो हम भी उसी ओर को सिधारे और वहा पहुंचके उसी धर्म्मशाला पर टिक गये जिस मे तुम रहे थे। फिर वहां के व्यापारी ने हम को बतलाया कि उस बैद्य के समझाने से इस ओर को चला गया है। यह बात सुनके तनिक भी बिलम्ब न किया परन्तु झटपट तुम्हारे पीछे आये और अब भगवान् की कृपा से तुम को पाया है।

ऐसी बातचीत आपस मे करते २ उन दोनों ने भोजन कर लिया और एक दीपक की ज्योति से जो दिवाल के ताक मे धरा था मै ने देखा कि उस आहार से और अपने भाई की संगति से संसारी का मन कुछ बहल गया। परन्तु यह भी सूझ पडा कि उस ने अपने मन की चिन्ता तनिक भी न बिसराई क्योंकि जब सुखबिलासी खाने के पीछे अपना हुक्का पीने लगा तब संसारी ठंडी सास भरके बोला कि जो ब्राह्मण ने मेरे विषय मे कहा कि वह अज्ञान पागल है सो ठीक है। और इस्से अधिक मै पापी

भी हूं और मेरे पाप का बोझ मेरे कन्धे पर ऐसा भारी है और उस का रोग मेरे समस्त शरीर पर ऐसा फैल गया है कि उस का अन्त देख नही पडता । और जब से मैं ने उस छोटी पुस्तक को पढ़ लिया तब से मेरे मन मे यही चिन्ता है कि पाप की जो औषध उस मे बर्णन होती है किसी न किसी ढब से उस का और वृत्तान्त पाऊं । क्योंकि मैं ऐसा जानता हूं कि जो इस औषध के द्वारा मेरा छुटकारा न हो तो और किसी प्रकार से नही हो सकेगा । इस लिये हम प्रतिदिन परमेश्वर की प्रार्थना करते है कि जो यह मुक्ति का सत्य मार्ग हो तो उस की ओर मेरी अगुवाई करे और मेरे मन मे तनिक आस्था भी उपजा है कि अति दयालु परमेश्वर मेरी बिन्ती सुनेगा । सो यदि तुम इस मे मेरा सहाय कर सकते हो तो ऐसा उपकार करना एक प्रिय भाई को बहुत ही योग्य होगा ।

सुखविलासी ने उत्तर दिया अरे भाई तुम ने कहा कि वह पुस्तक एक किरिस्तान के हाथ से पाई थी सो अब ऐसे लोगो के पास हम तुम को कैसे ले जावे । हम ने तो सुना है कि तुम्हारे जाने के पीछे एक ऐसा पादरी कही हमारे परोस मे रहने को आया है और उन के विषय में कुछ भला समाचार सुन्ने में नही आता है । परन्तु भला हो क्या बुरा किरिस्तान लोग तो म्लेच्छ और नास्तिक हैं और ऐसे लोगों से हम किसी प्रकार का व्यवहार रखना नही चाहते है । हमारा तो परामर्श यह है कि तुम ऐसी भयानक चिन्ता जैसी अब करते हो अपने मन से दूर करो कल हमारे संग होके घर को चले आओ और अपना मन राग रग सुखविलासों से बहलाते रहो । हम सब के सब तुम्हारे आने पर आनन्द और हर्ष

मनावेंगे तुम्हारे मन का शोक झटपट मिट जायगा और हम आगे की रीति इस संसार का रसीला स्वाद भली भांति चख लेंगे ।

संसारी ने कहा कि हे भाई सच तो यह है कि तुम हमारे मन की गति को अच्छी रीति से नही समझते हो नहीं तो इस प्रकार की बात नही बोलते । भला कल तो हम तुम्हारे संग घर को जायेंगे यहा रहने से कुछ नहीं बनेगा और जो परमेश्वर की इच्छा मेरे निस्तार करने की होगी तो घर पर भी कर सकता है । क्या जाने उस की खोज मे अपने घर को छोड़ना और अपने लोगों के उपकार करने से हाथ उठायके इधर उधर भ्रमण करना उस को नही भावता ।

इतने में आधी रात हो गई थी और दोनों भाइयों को भारी नींद होने लगी । तब अपना बिछौना बिछायके लेट गये और मैं ने देखा कि सुखबिलासी ने अपने कपड़ों मे से कुछ लेके संसारी को दिया क्योंकि उस मोटे कंबल को छोड़ उस के पास कुछ न था । और यद्यपि उस बस्ती मे महम्मदी लोग अपना पर्व करके रात भर बड़ा हुल्लड और धूमधाम मचाते थे तथापि उस का शब्द उस कोठे मे मन्द मन्द सुन्ने मे आया और दोनो भाई भोर तक भली भांति सोते रहे ।

इति मुमुक्षुवृत्तान्तवर्णनेऽष्टमोऽध्यायः ।

नवां अध्याय ।

इस अध्याय में संसारी यात्रा करते २ अपने भाइ से बातचीत करता है और एक फिरङ्गी के हाथ से दूसरी पुस्तक पाता है ।

तब मैं ने देखा कि प्रातःकाल को जब दोनों भाई जाग

उठे तो सुखबिलासी अपने भाई के लिये एक टट्टू और कुछ बस्त्र मोल लेने को उस बस्ती मे गया और जब यात्रा की समस्त सामग्री सिद्ध हुई तो दोनों मनुष्य टट्टू पर चढ़के घर की ओर सिधारे । घर तो दो चार दिन के मार्ग पर था और जाते २ वे आपस मे बहुत बातचीत करते थे इस बातचीत का ब्योरा मैं ने स्वप्न मे कुछ तो सुना और जितना मेरे चित्त मे आता है उस को लिख लेता हूं ।

पहिले सुखबिलासी ने संसारी से कहा कि हे भाई एक बात मै समझ नही सकता हूं कि तुम्हारा मन किस हेतु से ऐसा उदास और शोकित रहता है और तुम किस लिये सारे संसार की रीति इस जीवन की भली बस्तुओ का स्वाद आनन्द के साथ ले नही सकते हो । पूर्बकाल मे तो तुम एक बुद्धिमान और भले और आनन्दित मनुष्य की रीति अपना जीवन सुख से काटते थे परन्तु जब से तुम्हारा परम मित्र अचानक मर गया तब से तुम्हारा और ही रूप बन गया है । भला तो मित्र का मर जाना निःसन्देह एक बिपत्ति है परन्तु उस के कारण बुद्धिमान जीवन भर शोक नहीं करेगा और हम सभो को भी किसी समय मर जाना है । इस लिये हमारी समझ मे योग्य बात यह है कि जब लों सामर्थ्य है तब लों मन बहलायके अपने को आनन्दित और हर्षित करे ।

संसारी ने यह उत्तर दिया कि अरे भाई ऐसा करना जैसा तुम कहते हो यह तो पशु पक्षियों की रीति है और उन के लिये योग्य भी है क्योंकि उन को बुद्धि नही है जिस्से भविष्यत् की चिन्ता करे । परन्तु परमेश्वर ने हम मनुष्यो को बुद्धि और आत्मा दिया है जो अबिनाशी है और बुरे भले का भी बिचार करता है और यह भी जानता है कि पापी को दण्ड देना योग्य है । नहीं तो

हम सब के सब यदि कोई हमारा बुरा करे उस को दण्ड देना किस लिये चाहते हैं और जब अपराधी को दण्ड मिलता है हम उस बात को किस लिये योग्य और उचित न्याय ठहराते हैं और जब हम आप बुरा करते तो हम किस लिये दण्ड के भय से व्याकुल हो जाते हैं। इन सब बातो से हमारे मन की साक्षी प्रगट होती है कि परमेश्वर जिस ने हम को ऐसा सिरजा है और हम को ऐसा स्वभाव दिया है आप न्यायी और पाप का दण्ड देनेवाला है। और जब कि इस संसार मे कुकर्म सुकर्म का संपूर्ण प्रतिफल नही मिलता है और हमारा आत्मा अबिनाशी है तो जिस को बुद्धि है वह अवश्य अनुमान करेगा कि परलोक मे इस का यथार्थ नियम हो जायगा। ऐसी दशा मे केवल इस संसार की बातो मे फंसा रहना और उस की स्वादित वस्तुओं से जी बहलाना और अपने परलोक की चिन्ता न करना यह तो सिड़ी और मूर्ख को छोड़ और किस का व्यवहार हो सकता है।

सुखबिलासी ने कहा यह बात तो ठीक और सच है परन्तु चिन्ता करने से क्या बनेगा। इतनी चिन्ता तो निःसन्देह चाहिये कि कुकर्म्मो से हाथ उठाना और अपने बापदादो के धर्म मे रहना और कभी २ दान पुण्य भी करना परन्तु इससे अधिक चिन्ता करनी निष्फल और वृथा है और तुम ये सब काम निरन्तर करते आये हो सो अब क्या बात रह गई है जो तुम्हारा मन शोकित और चिन्तित हो।

संसारी ने उत्तर दिया कि एक बड़ी बात यह रह गई है कि जो कुकर्म पाप अपराध मैं कर चुका हूं उस का प्रायश्चित्त किस प्रकार से हो सकता है जिस्से न्यायी परमेश्वर प्रसन्न हो और जब वह परलोक मे मेरी परम गति

करे तो उस के न्याय में दोष न लगे। और दूसरी बड़ी बात यह है कि मेरा पापी मन किस उपाय से सुधर सकता है जिस्तें आगे को समस्त कुकर्म और पापों से हाथ उठाऊं क्योंकि मुझे ज्ञान हो गया है कि मेरा मन और स्वभाव जड़ही से मलिन और अशुद्ध पापी है।

सुखविलासी ने कहा तुम ने ऐसे ही पाप किये होंगे जैसे औरों ने किये हैं और उन का प्रायश्चित्त हमारे धर्म में ठहरा है और यह बात मैं भले प्रकार से जानता हूं कि तुम्हारा स्वभाव बहुत अच्छा है जो सारे और मनुष्य तुम्हारे समान धर्मी सत्यवान् और दयावान् होते तो बहुत ही भला होता।

संसारी ने उत्तर दिया कि अरे भाई एक समय हम भी ऐसा ही समझते थे परन्तु यह बात तब थी कि जब हम भी तुम्हारे समान निश्चिन्त और विषयाशक्त थे। जब से हमारा परम मित्र अकस्मात् मर गया तब से हमारे मन मे यही चिन्ता रही कि कदाचित हम भी इसी प्रकार से मर जायें तो हमारी क्या दशा होगी। और इस बात पर ध्यान करते २ मै सोचने लगा कि पवित्र परमेश्वर के दर्शन से और मर जाने से किस लिये डरता हूं और जो यह पाप के कारण से है तो पाप क्या है और मैं कहां लों पापी हूं। इस रीति से मुझ को ज्ञान हो गया कि पाप मे प्रवृत्त होना परमेश्वर से बिरुद्धता और बैर करना है क्योंकि कोई ऐसा कर्म करना नहीं चाहिये जिस मे अपना ही मन साक्षी देवे कि यह कर्म बुरा है और इस्से परमेश्वर भी अप्रसन्न होगा और ऐसे ही कर्मों में प्रवृत्त रहना यही पाप है। तब मुझ को ज्ञान हुआ कि मै अगणित ऐसा कर्म कर चुका हूं जो परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये नही केवल अपने को

प्रसन्न करने के लिये थे क्योंकि परमेश्वर का प्रेम तो कहा उस का स्मरण भी मेरे मन मे कही नही रहा। तब मैं सोचने लगा कि परमेश्वर का स्मरण किस कारण मेरे हृदय मे नही रहता है। उस के गुण और कर्म निःसन्देह स्मरण करने के योग्य हैं और वह तो हमारा स्मरण करता है नहीं तो हमारा प्रतिपालन कैसे करता। इस रीति से मेरे मन की अशुद्धता और भ्रष्टता मेरी दृष्टि में प्रत्यक्ष हो गई क्योंकि वह परमेश्वर से मिलाप नहीं रखता है उसे भूल गया है उस्से बिरुद्ध और बैरी हो गया है। ऐसी दशा में मेरे लिये कोई मेल करानेवाला अवश्य चाहिये क्योंकि जब बैरी ही हूं तो परमेश्वर को किस रीति से प्रसन्न करूं और उस के सन्मुख जाने का मुझे क्या साहस हो सकता है और जो मैं ऐसी ही दशा मे मर जाऊं तो परलोक मे क्या गति होगी।

तब मैं ने देखा कि जब संसारी अपनी दुर्दशा का स्मरण और इस प्रकार का वृत्तान्त कह रहा था तो आगे की रीति अत्यन्त उदास और दुःखित होके रोने लगा। और उस का भाई यह देख बड़ा बिस्मित और व्याकुल हुआ कि अब भाई को क्या हुआ और इस्से क्या कहूं। अन्त को वह संसारी से देवताओ के बड़े चरित्र और पुण्य प्रताप का वर्णन करने लगा कि ये तारणहार हैं पृथिवी के भार उतारने के लिये संसार मे अवतार लिये उन के नाम जपने से और उन पर बिश्वास लाने से सब ही पाप कट जाते हैं।

यह बात सुन संसारी कहने लगा कि अरे भाई तुम कैसे जानते हो कि सचमुच कोई देवते है और जो हैं भी तो कैसे जानते हो कि वे किसी को मुक्ति दे सकते हैं। हम ने तो बड़ा यत्न करके उन के हाथ से मुक्ति

पाने की खोज किई है परन्तु उन के होने का भी कोई प्रमाण नहीं मिला और जब उस संदेह के मारे जो मेरे चित्त मे आया मै ने ब्राह्मण से इस का प्रमाण पूछा तो उस ने केवल यह कहा कि परंपरा की बात है और क्रोधित होके चला गया । सो यह परंपरा की बात वैसी है जैसी तुम्हारी बात अर्थात् बापदादों के धर्म्म मे रहना और ये दोनों ऐसी बाते है जिन से केवल सांसारिक का मन सन्तुष्ट होवे तो होवे परन्तु जो कोई पाप की बुराई को जानता है और अपने परलोक के लिये सच-मुच चिन्तित है ऐसी बातों से सन्तुष्ट नहीं हो सकता है । क्योंकि बहुत सी अनुचित बात भी हैं जो बापदादों की परंपरा से है जैसे झूठ बोलना लोभ करना अन्याय करना और जितने पाप और कुकर्म हैं सब के सब बाप-दादों से हैं और जो देवताओ की कथा ठीक है तो वे भी निर्दोषी नही थे । सो ऐसो पर बिश्वास लाने से अथवा बापदादों की चाल चलने से पापी जन क्योंकर मुक्ति पावे ।

तब मैं ने देखा कि संसारी की ऐसी बातों को सुन सुखबिलासी अत्यन्त आश्चर्य्यित और अप्रसन्न हुआ और उस समय उस का कुछ उत्तर न दिया । जाते २ जब सांझ होने लगी तो वे एक स्थान पर पहुंचे जिस में सराय बनी थी वह सराय पक्की ईंटो की थी उस के सन्मुख एक बहुत बड़ा फाटक फाटक के अन्दर सुथरा चौगान इस के मध्य मे एक सुन्दर कूआ था और चारो ओर अनेक गृह और उन के साम्हने डेवढ़िया बनी थीं । वह स्थान अत्यन्त सुथरा और अच्छा दिखलाई दिया और कितने भले मनुष्य उस में टिके थे सो दोनो भाइयो ने रात के लिये अपना टिकाव इस मे ठहराया ।

तब मै ने देखा कि जब संसारी और सुखबिलासी उस सराय में टिक गये थे तो आकाश की चारो ओर काली २ घटा होने लगी और कभी २ बादल भी गरजा और बिजुली कड़की और वायु बड़े झकोरे से चलके धूल और सूखे पत्तो को उड़ाय ले गया । और अन्त को जल की बड़ी २ बूंदें पड़ने लगी और जितने पशु पत्ती बाहर थे सब के सब अवैया आंधी के भय से अपने २ स्थानों को शीघ्र करके प्रस्थित भये । उस के उपरान्त बड़ी बर्षा हुई मेह मूसलधारा से बरसा और जो लोग उस समय यात्रा करते थे जिस २ स्थान मे तनिक भी आड़ मिली उस में भागके अपने को बचाया । इस रीति से बहुत से लोग उस सराय मे एकट्ठे हो गये जिस में ससारी और सुख-बिलासी टिके थे । वे तो सराय के उसी घर मे उतरे थे जो फाटक से लगा था और सुखबिलासी अपने स्वभाव के अनुसार उन लोगो से जो फाटक में आड़ लिये थे बातचीत करने लगा । इतने मे एक पालकी जिस में फिरगी था आ पहुंची और कहार लोग अपने स्वामी से आज्ञा पायके उसी सराय के फाटक मे बचाव के लिये पालकी को रखके जब लो कि आधी तनिक धीमी न हुई वहां खड़े हो गये ।

तब मैं ने देखा कि जब लों आधी रही तब लों वह पालकी उसी स्थान पर धरी रही और वह फिरंगी साहिब उस मे बैठके लोगो से बातचीत करने लगा । पहिले उस ने उन से पूछा कि तुम लोगो में कोई रोगी है क्योंकि मेरे पास कुछ औषध है । इस पर दो चार जनो ने अपने और अपने नातेदारो के प्रतयेक रोगों का व्यवहार बतलाया और साहिब ने एक २ का वृत्तान्त पूछके जैसी उस के पास औषध थी सभों को बांट दिई ।

इतने मे कितने और लोग उस स्थान में एकट्ठे हो गये और उन के संग संसारी और सुखबिलासी भी थे। तब साहिब कहने लगा कि मेरे पास मन की औषध भी है जो कोई मन का रोगी होवे इस को भी लेवे क्योंकि बहुत अच्छी है और यह कहके पालकी में से कितनी छोटी पुस्तके निकालके दिखलाईं। इस पर सब लोग एक दूसरे को देखने और यह कहने लगे कि साहिब की क्या अभिलाषा है। साहिब ने यह सुनके कहा कि मै इस का पूरा वर्णन नहीं कर सकता हूं क्योंकि मैं अभी जाता हूं परन्तु इतना तो कह सकता हूं कि मन का रोग जो हम सभो को लगता है सो पाप है और पाप की औषध जो श्री परमेश्वर ने ठहराई है सो इन पुस्तको मे वर्णित होती है। मै ने इस को परख लिया है वह बहुत अच्छी निकली है इस लिये जो कोई चाहे एक पुस्तक को ले लेवे और यदि कोई बात समझने मे न आवे तो पादरी लोगों के पास जावे वे सब कुछ बतलावेगे।

इस पर कितने लोग कहने लगे कि बड़ा दयावान् बड़ा ज्ञानी है और कितने यह तो क्रिस्तानों की पुस्तक होगी और दो चार मनुष्य पुस्तक लेके देखने भी लगे कि इन के अक्षर हम को आते हैं कि नही। इतने मे ससारी यह दशा देख समीप आ कहने लगा कि हे महाराज मुझ को भी एक पुस्तक दीजिये क्योंकि मै मन का अत्यन्त रोगी हू और एक समय मै ने एक ऐसी पुस्तक भी पाई थी जिस मे मेरे रोग का ठीक वर्णन लिखा था और इस की औषध का भी कुछ थोड़ा सा वर्णन हुआ था। सो मै इस के पूरे वृत्तान्त पाने का निपट अभिलाषी हू जिस्से मेरे मन का रोग दूर होवे और मेरा पाप कट जावे।

ससारी की यह बात सुन साहिब अति प्रसन्न हुए और उस को दो एक पुस्तक चुन चुनके दे दिईं और

अपनी सामर्थ्य भर उस को बतलाने लगे कि बड़े ध्यान के साथ परमेश्वर की प्रार्थना मन से करके इन पुस्तको को पढ़ना चाहिये। और यह भी कहा कि जो पादरी लोगो से कभी भेट होवे तो अपने मन की दशा उन पर प्रगट करनी चाहिये और निःसन्देह वे तुम्हारी सहायता करेगे और मुक्ति का सत्य मार्ग तुम को बतलावेगे। इतने मे आधी थम गई थी और साहिब ने पालकी में लेटके कहारो को बुलाया और उठाने और आगे बढ़ने की आज्ञा दिई तब संसारी उन पुस्तको को लेके अपने भाई के संग अपने डेरे मे चला गया।

जब वहा पहुंचा तो बड़े यत्न से उन पुस्तको को देखने लगा कि इन मे क्या लिखा है। और जब थोड़ा देख लिया था तो अपने भाई को बतलाया कि इस का नाम सत्यमतनिरूपण है और ऐसा सूझ पड़ता है कि इस मे शास्त्रो का कुछ बर्णन है क्योंकि कितने श्लोक भी लिखे हैं परन्तु ऐसा बर्णन है जिससे हिन्दूधर्म कट जाय फिर किरिस्तानो का धर्म भी वर्णित होता है और इन दोनो की तुलना होती है। भला पहिले तो इस को भली भाति ध्यान करके पढ़ना चाहिये पीछे औरो को भी देख लेगे।

तब मैं ने देखा कि संसारी ने उस पुस्तक के पढ़ने में अपना मन स्थिर किया और आधी रात तक पढ़ता ही रहा और जब उस के भाई ने भोजन के लिये उस को बुलाया तो बड़ी अप्रसन्नता से इस का पढ़ना छोड़ दिया। और भाई से बात भी नही किई बरन शोक और ध्यान मे ऐसा डूब रहा कि सुखबिलासी उस को देख अत्यन्त अप्रसन्न हुआ और कहने लगा कि अरे भाई निःसन्देह तुम पागल हो गये हो अथवा परमहंस बन

जाओगे ऐसा न होवे कि मै भी इस प्रकार की चिन्ता में फंस जाऊं। संसारी ने उत्तर दिया कि भला भाई ऐसे प्रकरण में निश्चिन्त होना इस से भी बुरा है।

दूसरे दिन भी संसारी इसी प्रकार से जब अवकाश पाया उस पुस्तक के पढ़ने मे तत्पर रहा और जब भाई के संग घर की ओर यात्रा करता था तब शोक ध्यान में लीन रहा और कभी २ ऐसा देख पड़ा कि प्रार्थना भी करता है। सुखबिलासी अपने भाई की यह दशा देख बड़ा दुःखी हुआ और घर पहुंचने में अत्यन्त शीघ्रता किई और जब वहा पहुंचा तो सब लोगो से कहने लगा कि भाई तो आया है परन्तु मैं नही जानता हूं कि उस की क्या दशा हो गई है वह अपने पाप ही का वर्णन करता रहता है और मुक्ति के मार्ग को छोड़ और किसी प्रकार की बाते नही बोलता है इस कारण मै निपट डरता हूं कि वह सिड़ी हो गया है। इस बात के सुनते ही सब लोग संसारी के पास आये और उस की दशा देख अत्यन्त आश्चर्य्यित हुए और उस से पूछने लगे कि किस लिये ऐसे व्याकुल देख पड़ते हो। इस मे संसारी ने उत्तर दिया कि मैं मुक्ति की खोज मे हूं और अपने पाप के कारण बड़ी चिन्ता में हू क्योंकि मुझे निश्चय है कि जो पापमोक्षण न होय तो अवश्य मेरा नाश हो जायगा। इस बात पर बहुतेरे लोग हंसने और ठट्ठा करने और आपस में यह कहने लगे कि यह तो सिड़ी हो गया है। परन्तु संसारी ने उस समय उन को उत्तर नही दिया और अपनी पुस्तक को पढ़ता ही रहा।

इति मुमुक्षुवृत्तान्तवर्णने नवमोऽध्यायः।

दसवां अध्याय।

इस अध्याय में संसारी मुक्ति की खोज में एक किरिस्तान पादरी के पास जाता है परन्तु उस की शिक्षा से सन्तुष्ट नहीं होता है।

थोड़े दिनों के पीछे जब संसारी उस पुस्तक को भली भांति पढ़ और उस पर बहुत ध्यान करके प्रतिदिन परमेश्वर की प्रार्थना करता था तो एक दिन उस किरिस्तान पादरी की खोज मे जिस का वृत्तान्त यात्रा करते २ सुखबिलासी ने उस से कहा था कि हमारे परोस मे रहने को आया है चल निकला। और जब वह उस के बिषय मे लोगों से पूछता था कि कहा रहता है तो उसी समय वह मनुष्य लंबा काला पाटंबर पहिने हुए उस के साम्हने आया। उस की कटि मे एक काली डोरी बंधी थी उस मे एक माला लटकती थी जिस के प्रति दाने मे वह भजन की गिनती करता था उस माला के अग्रभाग में एक छोटी सी क्रूशाकार वस्तु अर्थात् उस काष्ठ की प्रतिमा जिस पर प्रभु ईसा मसीह टांगा गया था लटक रही थी। उस ने आते ही बड़े प्यार और प्रेम के डौल पर कहा कि हे बेटे आशीर्बाद और पूछा कि तू क्या प्रश्न करना चाहता है।

तब संसारी ने उत्तर दिया कि मैं एक मनुष्य हूं जो पापों के बोझ से दबा हुआ और मुमुक्षु भी हू और कई एक दिनो से ऐसे मनुष्य की ढूंढ़ मे हू जो मुझ को मेरे पापो के बोझ से छुटाने पर समर्थ और प्रसन्न हो।

यह मनुष्य किरिस्तानों के उस संप्रदाय का एक पादरी था जिस को रोमी काथोलिक अर्थात् रोमी साधारण मंडली कहते हैं। उस ने संसारी से उस के जन्म और

उस के भूत और वर्त्तमान दशा के विषय में कई एक प्रश्न किये और जब उस ने अपने प्रश्नों का उत्तर पाया तो कहा कि मेरे बेटे ईश्वर का भजन कर जिस ने अपनी अनन्त कृपा से निदान को तेरा अभिलाष अंगीकार किया है। देखो मैं ईसा अभिषिक्त का जो ईश्वर का बेटा और उस के साथ और उसी के सदृश है एक दास हूं। उस ने मनुष्य का रूप धारण किया और अवतार लेके निष्कलंक मरियम कुमारी के गर्भ से उत्पन्न हुआ। इस के पीछे उस ने अपनी प्रसन्नता से क्रूश पर मृत्यु का दुःख उठाया और संपूर्ण संसार के पापों के कारण अपना प्राण देके प्रायश्चित्त किया।

जब संसारी ने ये बातें सुनीं तो प्रसन्न होके कहने लगा कि हे गुरु आप बिचार करके बतलाइये कि यह पवित्र मनुष्य जिस का वर्णन आप करते हैं मुझे बचा सकेगा।

पादरी ने उत्तर दिया कि इस में कुछ सन्देह नहीं है परन्तु यह स्थान बोलचाल करने के लिये ठीक नहीं है जो तुम हमारे भजनगृह पर चलने को प्रसन्न हो तो वहां मैं तुम को इस पवित्र मत की बातों से शिक्षित करूंगा।

तब मैं ने स्वप्न में देखा कि पादरी ने अपना मार्ग लिया और संसारी भी उस के पीछे हो लिया तब वे एक घेरे के पास आये जहां एक पुरातन और अत्यन्त रमणीय भजनगृह क्रूशयंत्र अर्थात् उस काष्ठ की प्रतिमा के आकार पर सुन्दर पत्थरों से बना था। उस के भीतर चारों ओर बहुत से कोठे बने थे जिन में संसारी ने देखा कि कई एक मूर्त्त हैं और उन मूर्त्तों के साम्हने एक एक यज्ञवेदी बनी हुई थी और उस भजनगृह के एक प्रसिद्ध

स्थान पर काष्ठ का एक बड़ा ऊंचा क्रूश बना था जिस पर एक मनुष्य की मूर्त्ति जो लोहू से व्याप्त और मरने पर दिखाई दिया बनी हुई थी और उस के साम्हने भी एक यज्ञवेदी बनी हुई थी । ये सब मूर्त्त सुवर्ण और मणियो से भूषित और सुन्दर वस्त्रो से भी शोभित थीं और उन मे से कई एकों के साम्हने मोम की बत्तियां जलती थीं और धूप भी जल रहा था कि जिस की सुगन्धि सपूर्ण भजनगृह मे फैल रही थी । फिर गानेवालो की सुन्दर स्वरावट और बाद्यविशेषो के मनमोहन शब्द से संसारी को यहा लो प्रसन्नता हुई कि वह आनन्द के मारे अपने को न रोक सका और बेधड़क बोल उठा कि निश्चय यही स्वर्गद्वार है। तब मै पादरी और ससारी की बोलचाल जो उन के बीच मे होने लगी सुनता रहा।

संसारी यो कहने लगा कि हे गुरु मैं ने आप से अपना वृत्तान्त वर्णन किया कि मैं एक मनुष्य पापो के बोझ के नीचे दबा हुआ हूं और बहुत काल से उस की ढूंढ़ मे हूं जो मुझे बचाने पर समर्थ हो । अब मेरे मन मे यह भरोसा आने लगा है कि मैं ने उस मुक्तिदाता को पाया। अब लो तो उस के बिषय अधिक कुछ नहीं जानता केवल इतना जानता कि वह ईश्वर का पुत्र है सो अब मैं आप से विज्ञप्ति करता हू कि कृपा करके अपने पवित्र मत की बातें मुझे बतलाइये ।

तब पादरी ने उत्तर दिया कि हे बेटे हमारे पास एक पुस्तक है जिस को बैबल कहते हैं उस के दो भाग किये गये है । अर्थात् प्राचीन नियम पुस्तक और नवीन नियम पुस्तक । प्राचीन नियम पुस्तक मे जो मूसा आदि आचार्यो के द्वारा मिली संसार की उत्पत्ति और व्यवस्था का वर्णन है और श्री इब्राहीम के सन्तान का इतिहास

और आचार्यों का परंपरा और क्रम से आना और उन के वचन और संसार के प्रारभ ही से ईसा मसीह अर्थात् अभिषिक्त के जो जगत का मुक्तिदाता है आने का समाचार लिखा है। नवीन नियम पुस्तक में ईश्वर के पुत्र का वृत्तान्त और उस के चरित्र जब कि वह इस संसार मे था लिखे हैं कि वह ईश्वर था और धन्याकुमारी मरियम के गर्भ में जो आश्चर्य्य रूप से पवित्रात्मा से गर्भवती हुई थी अवतार लेके उत्पन्न हुआ और इस संसार मे तेतीस बरस रहा पीछे उस ने सम्पूर्ण संसार के पापो के कारण अपने प्राण को क्रूश पर दे दिया। इसे प्राचीन नियम पुस्तक के साथ मिलाके हम लोग आदरभाव से बैबल वा निजधर्म्मपुस्तक कहते है।

संसारी ने कहा हे गुरु जो यह पवित्र पुस्तक मेरे पास होती तो निश्चय करके मै अपने को भाग्यवान् जानता।

संसारी की इस बात से पादरी के मुख पर थोड़ा सा एक चिह्न अप्रसन्नता का प्रगट हुआ। तौभी उस ने नम्रता के साथ उत्तर देके कहा कि हे बेटे मैं जानता हूं कि तुम हमारी रीतो से अनजान हो इस लिये तुम पर दया करके इन सब बातो से भली भांति बोध कराना उचित है। प्रभु ईसा अभिषिक्त के समय से अब लो इस नगर मे बहुत से पंथ होते आये हैं जो प्रभु ईसा का नाम केवल निन्दा करने के लिये लेते है और सच्ची शिक्षा को छोड़ अभिमान से पवित्र पुस्तको के अर्थ उलट डालते हैं। और शैतान जो सब पापी प्राणियो का महाराज है उस के बहकाने से वे ईश्वर के बचन में अपना अनुमान लगाते हैं और यूं अपने को मृत्यु के योग्य बनाते है। और इस कारण से हम लोग जो इस संप्रदाय के है सो

सम्पूर्ण, संसार मे सच्चे ईसाइयो की केवल एक ही मंडली होके साधारण लोगो को बैबल पढ़ने से बर्जित करते हैं। केवल पादरी लोग अपने पास रखते हैं और उन्ही की सहायता से साधारण लोगों को पवित्र पुस्तकों की शिक्षा निर्मलता के साथ होती है। इसी बिचार से हम बैबल को तुम्हारे हाथों मे नहीं दे सकते तैाभी हम अत्यन्त प्रसन्नता से तुम को इस की बाते सिखलावेंगे।

संसारी इस बात के सुन्ने से कुछ उदास होके उस पादरी से कहने लगा कि हे गुरु मै ने तो किरिस्तानों के हाथ से दो एक पुस्तक पाई हैं और उन के पढ़ने से मुझ को अनुमान हुआ कि वह धर्मपुस्तक जिस को आप बैबल कहते हैं और जिस का बर्णन अभी कर चुके हैं सारे शिष्यों को मिल सकती है क्योंकि उन पुस्तकों में साधारण लोगों के लिये भी न्योता लिखा है कि सत्यमत की सारी बातों को भली भांति जांचो। परन्तु जो आप लोग भी जिस रीति ब्राह्मण वेद और शास्त्रों को साधारण लोगो से गुप्त रखते हैं उसी रीति परमेश्वर के बचन को अपने ही पास रख छोड़ते हैं तो हम उस मत की बातें किस प्रकार से जांचे।

पादरी ने यह बात सुनके कहा कि वे पुस्तक जो तुम ने पाई हैं कैान सी थी।

इस पर संसारी ने उन पुस्तकों को जो किरिस्तानों के हाथों से पाई थी कांख से निकालके उस पादरी को दिखलाई और जब उस ने उन पुस्तको को देख लिया था तो संसारी से कहा कि हे बेटे ये पुस्तकें उन झूठे किरिस्तानो से लिखी गई हैं जो हमारी पवित्र मंडली के नहीं हैं और उन्हो ने जैसे हम अभी बर्णन कर चुके हैं धर्मपुस्तक के अर्थ को उलट डाला है। इन की शिक्षा से

मुक्ति का सत्यमार्ग कभी नही मिलेगा इस लिये तुम्हारे कुशल के कारण हम इन को अपने पास रखेंगे और जो शिक्षा तुम्हारे लाभ के लिये होगी सो बड़े आनन्द से हम तुम को देंगे ।

तब संसारी ने कहा कि हे गुरु आप कहते है कि इस नगर मे बहुत से पंथ लोगों के हैं जो अपने को ईसाई कहते हैं परन्तु सचमुच ऐसे नही हैं और केवल सम्पूर्ण संसार मे आप ही सच्चे ईसाई मडली के है तो मै धृष्टता से पूछता हूं कि आप की मंडली के पहचान के लिये कौन से चिन्ह हैं । और भी पहिले मुझे बताइये कि मंडली पद से आप का क्या अर्थ है ।

पादरी ने उत्तर दिया कि यह पद ईसाइयों की एक निज मडली का लक्षण है जो निज शिक्षा और रीतो के कारण औरों से मान्य है । यद्यपि बहुत से झूठे और कल्पित मत फैलते जाते है तथापि सम्पूर्ण संसार मे एक ही सच्ची मंडली है जिस का नाम रोमी साधारण रक्खा गया है । संपूर्ण संसार मे वही सच्ची है तो अब मै बताऊंगा कि वह किन २ बातों मे ईसाइयो के उन पंथो से जो भूल में पड़े हैं भिन्न है । हमारे मुक्तिदाता प्रभु ईसा अभिषिक्त के बारह दूत थे जो प्रभु ईसा के स्वर्ग जाने के पीछे कितनी मंडलियों के रक्षक हुए । उन मे से एक अर्थात् पुण्यात्मा पतरस को हमारे प्रभु ने अपना प्रतिनिधि करके सभो पर श्रेष्ठ रक्षक ठहराया और सब ही प्रकार का अधिकार भी दिया जिस्से पृथिवी पर संपूर्ण शिष्यो के समूह की रखवाली करे और उन मे बिभाग न पड़े और यह आज्ञा भी दिई कि उस के पीछे इस के अनुवर्त्ती भी अत समय तक उसी अधिकार और उसी स्वतन्त्रता को पावेगे । इस लिये हम उस को जो अब

मान्य पतरस के सिंहासन पर बैठा है साधारण मडलियों का प्रधान रक्षक समझके पापा अथवा बाप का अधिकार देते हैं। क्योंकि वह मडलियों की अविभागता का मध्य है और जितने रक्षक और पादरी उस के नीचे है सब उस से सम्बन्ध रखते हैं और उन मे से एक २ अपने काम पर उसी की आज्ञा से अधिकारी होते हैं।

तब संसारी ने कहा क्या मैं यह समझूं कि तुम अपने उस बड़े प्रधान को जिसे तुम बाप कहते हो एक २ बात में आज्ञा मान्नो अपने ऊपर उचित समझते हो।

पादरी ने उत्तर दिया कि हमारे पवित्र मत की एक मूल बात यह है कि हमारी मंडली किसी प्रकार की भूल नही कर सकती क्योंकि एक ऐसा धर्माध्यक्ष अत्यन्त अवश्य है जो किसी प्रकार की भूल न करे जो धर्म के भेदों को दूर करके ईसाई मंडलियो के बीच अटल ऐक्य रखे और हमारा पापा वही धर्माध्यक्ष है।

तब मै ने देखा कि संसारी घबरा गया और कुछ ढील पीछे उस ने पादरी से पूछा कि वह मनुष्य जिसे तुम बाप कहते हो क्या हमारे तुल्य बुरी प्रकृति रखता है क्योंकि धर्माध्यक्ष तो वही होता जो किसी प्रकार की भूल न करे और वही निष्पाप अगुवा भी बने और क्या इस बात से आप का यह प्रयोजन नहीं है कि वह मनुष्य से बढ़के हो।

पादरी ने उत्तर दिया कि हम मानते हैं कि जब हमारा पुण्यात्मा बाप अकेला होके शिक्षा करे तो और मनुष्यों की भाति भूल कर सकता परन्तु जब वह साधारण मडलियों के संग होके शिक्षा करता तब वह ईश्वर की सामर्थ्य से भूल और चूक से भिन्न रहता है।

संसारी ने कहा क्या सचमुच तुम्हारी धर्मपुस्तक में इन सब बातो की आज्ञा है।

पादरी ने उत्तर दिया कि धर्मपुस्तक से भिन्न बहुत सी परम्परा की बाते है जिन का मान्ना हम को आवश्यक है क्योंकि धर्मपुस्तक में बहुत सी बाते नहीं हैं जो हमारे मत के लिये आवश्यक हैं ।

संसारी ने कहा जो यही दशा है तो आप का मत इस बात में भी हिन्दुओ और महम्मदियो के धर्म के समान हुआ क्योंकि वे भी बिना प्रमाण अपना बिश्वास और भरोसा परम्परा की बात पर रखते हैं परन्तु फिर भी जो आप की धर्मशिक्षा यथार्थ और परमेश्वर के योग्य और मुक्तिदायक होय तो हम कभी त्याग न करेंगे इस लिये कृपा करके हमे कुछ और भी शिक्षा दीजिये ।

तब मैं ने सुना कि संसारी ने पादरी से और भी प्रश्न किये जैसे कि मनुष्य की बुरी और अपवित्र दशा के विषय में उस का क्या विचार है और पापमोक्षण और मुक्ति किस प्रकार से मनुष्य के पुण्य अथवा युक्ति के आधीन है अथवा प्रभु ईसा मसीह का प्रायश्चित्त अर्थात् प्राणत्याग होना इस विषय मे यथेष्ट और समुचित है कि नहीं ।

तब मैं ने बड़े यत्न से पादरी के उन उत्तरों को जो उस ने इन बड़ी बातों के दिये सुना परन्तु उस के उत्तर प्रश्न के सदृश न थे और संसारी को उन से कुछ ढाढ़स न हुआ ।

एक बात जो उस ने कही यह थी कि जब प्रभु ईसा मसीह इस जगत मे था उस ने सात साक्रमेंट अर्थात् धर्मनियम ठहराये । यह ऐसी रीते थी जिन पर चलने से मनुष्य अपने लिये पापमोक्षण और ईश्वर का अनुग्रह और बड़ा पुण्य और परलोक का उत्तम फल प्राप्त कर सकता है और जो कोई मनुष्य इन नियमों पर न चले

तो स्थापित होगा। और इन के विषय मे उस ने ऐसा वर्णन किया जो संसारी के कान में जप तप तीर्थ इत्यादि के समान सुन पड़ा इस लिये वह उस पादरी से कहने लगा।

महाराज यदि यही दशा है और तुम्हारे मत में मनुष्य की मुक्ति बाहिरी रीतों और शरीरी कष्टों के अधीन है तो मूर्त्तिपूजकों से तुम किस बात में बड़े हो क्योंकि ऐसी बातो पर चलने में निःसन्देह वे तुम से बहुत बढ़ गये हैं। यदि ईश्वर के अवतार लेने और उस अवतार के बलिदान होने और प्रायश्चित्त करने से मनुष्य की मुक्ति समाप्त नही हो सकती है तो मनुष्य के अधम कर्मो से क्योंकर होवे और ईश्वर के ऐसे बड़े कर्मों का क्या प्रयोजन था। परन्तु पादरी ने इस बात का भी ठीक उत्तर नहीं दिया।

तब संसारी ने उससे उन मूर्त्तियों का जो उस गिर्जे में खड़ी थीं वृत्तान्त पूछा और पादरी ने उस को बतलाया कि यह बहुत बड़े प्राचीन साधुओं की जो अब ईश्वर के पास हैं मूर्त्तें हैं और हम उन का आदर करते और उन से बिन्ती करते हैं जिस्तें वे हमारे लिये ईश्वर के पास और प्रभु ईसा मसीह के पास और उस की माता धन्या मरियम के पास बिन्ती करें।

इतनी बात सुनते ही संसारी व्याकुल हुआ और पादरी से कहने लगा क्या आप की धर्मपुस्तक में जो ईश्वर का बचन है ऐसी बात की आज्ञा मिलती है क्योंकि मेरी समझ मे यह तो हिन्दूधर्म की उस बात के समान है जिस के कारण मै ने उस को छोड़ दिया अर्थात् देवपूजा और मूर्त्तिपूजा। क्योंकर हो सकता है कि ईश्वर ऐसी बात की आज्ञा करे।

पादरी ने उत्तर दिया कि हे बेटे धर्म के विषय में इस रीति से अपनी अपवित्र बुद्धि को दौड़ाना उचित नहीं है इन सब बातों का कारण और प्रमाण समझना शिष्य को अवश्य नहीं है हम को चाहिये कि पवित्र मण्डली और पवित्र पापा के साधारण नियम पर स्थिर रहें और अपने मन में किसी प्रकार का सन्देह होने न देवें ।

तब मै ने देखा कि संसारी और भी व्याकुल हुआ और चेष्टा के संग उस पादरी से कहने लगा कि हे महाराज मुझे ज्ञान हो गया है कि आप की शिक्षा ठीक उस शिक्षा के समान है जिस पर बहुत काल से मै बड़े उद्योग के साथ चला हूं परन्तु उससे मेरे मन को तनिक सन्तुष्टता नही हुई । अब क्या आसा है कि इससे मन का चैन और स्थिरता प्राप्त होवे मेरा निरादर क्षमा कीजिये परन्तु आप की आज्ञा हो मैं विदा होके किसी दूसरी ओर को अपने मनोभिलाष की खोज करूंगा । यह कहके संसारी उस स्थान से निकल चला और अपने घर को लौट आया ।

इति मुमुक्षुवृत्तान्तवर्णने दशमोऽध्यायः ।

ग्यारहवां अध्याय ।

इस अध्याय में संसारी अपने घर पर लौट आता है और उस की बुरी दशा हो जाती और मेरे स्वप्न का रूप अचम्भे की रीति से बदल जाता है ।

तब मै ने देखा कि जब संसारी अपने घर पर लौट आया तो ऐसा निरास होने लगा जैसा आगे कभी नही हुआ था । परन्तु उस के भाई सुखविलासी को छोड़ उस

के नातेदारों में से कोई उस के पास न आया क्योंकि सब के सब जानते थे कि सिड़ी हो गया है उस के समझाने से क्या होगा। कभी २ सुखबिलासी ने उस के पास आके उस का कुशलक्षेम पूछा और जब उस की दशा देखी तो निपट डर गया कि क्या जाने भाई निरासता के मारे आत्मघात करेगा। क्योंकि संसारी ने मन खोलके उस को बतलाया कि अब मेरे मन मे तनिक भी आस्था नहीं रहा है ऐसा सूझ पड़ता है कि सब के सब एक ही हैं।

हिन्दू अन्धा मुसलमान काना दोनों भूले क्या ठिकाना। यह किरिस्तान पादरी भी उन के समान है किसी में सत्यता नही है। सब के सब अपनी मनमता पर भरोसा रखते हैं परमेश्वर के योग्य ज्ञान किसी के पास नहीं है। मनुष्य की सामर्थ्य से किसी की मुक्ति नहीं हो सकती सो मनुष्य पर भरोसा करने से क्या लाभ होगा।

एक दिन ऐसा हुआ कि जब संसारी अपने भाई सुखबिलासी से इस प्रकार की बात कर रहा था तो सुखबिलासी ने उससे कहा कि भला भाई क्या हम ने ठीक नही कहा हम सब के सब कर्म के अधीन हैं जो जिस के माथे में लिखा है सो ही होगा। किसी का कर्म किसी भांति मिट नहीं सकता तुम्हारे कर्म में ऐसा ही लिखा था कि इतना दुःख और कष्ट और शोक सहना है सो भी सह चुके हो। अब आगे को तुम कर्म का साम्हना मत करो मुक्ति के बहुत से मार्ग तो हैं जिस रीति इस बस्ती के बहुत से मार्ग हैं। जितने धर्म के मार्ग इस संसार में है सब के सब बैकुंठ को चले गये हैं सो तुम अपने ही धर्म के मार्ग पर चलते रहो क्योंकि तुम्हारे लिये ठीक यही है देखो तो और धर्मों की खोज करने से तुम ने क्या २ फल पाया है।

तब मै ने देखा कि इस प्रकार की बात सुन्ने से ससारी का जी तनिक चैांक उठा श्रार वह अपनी निरासता को भूल अपने भाई से कहने लगा कि अरे भाई ऐसी बात मत कहो क्योंकि ठीक नहीं है यह बात तो हम को बतलाश्रो कि यहा से जगन्नाथ को सीधे मार्ग कितने हैं।

सुखबिलासी ने उत्तर दिया कि यहा से जगन्नाथ को सीधा मार्ग तो एक ही है परन्तु जगन्नाथ को बहुत से श्रार भी मार्ग हैं श्रार सब के सब उस मे पहुंचाते है।

संसारी ने कहा श्रार मार्ग तो है परन्तु एक ही स्थान से नही निकलते है चारो श्रार से आते हैं इस लिये यह दृष्टान्त हमारी बात से ठीक नही मिलता क्योंकि मुक्ति श्रार पापमोक्षण के विषय मे समस्त जातिगणो का स्थान एक ही है। सब के सब पापी हैं उन का स्थान पापस्थान श्रार दु:खस्थान है सो उन के लिये मुक्ति का मार्ग वही होगा जो पवित्रस्थान श्रार सुखस्थान मे पहुचाता है श्रार जब निकलने का स्थान एक ही है श्रार पहुचने का स्थान भी एक ही है तो सीधा मार्ग भी एक ही होगा। फिर कर्म की बात जो तुम कहते हो एक रीति से मै इस को मानता हूं अर्थात् जो कर्म हम ने किया है जब लो पापमोक्षण प्राप्त न होवे उन्ही कर्मों के अधीन तो हम हैं। श्रार कर्म का मूल अर्थ यही है अर्थात् जो हम ने किया है श्रार जब हम ने पाप किया तो पाप का दण्ड भुगतना होगा। इसी कारण से मै चिन्तित हू जिस्ते मुक्ति के सत्य-मार्ग को पाऊं क्योंकि जिस रीति मै वर्त्तमानकाल मे अपने पिछले कर्मों का अधीन हू उसी रीति आगे को मैं अपने वर्त्तमान कर्मों का अधीन हो जाऊंगा। यदि मै अब निश्चिन्त श्रार असावधान रहू तो इसी कर्म का भोग करना पड़ेगा क्योंकि जो कर्म मै करता सो अपने मन

और स्वभाव के बल से और अपने अन्तःकरण की इच्छा से करता हूं। इस रीति से मेरे वर्त्तमान कर्म मेरे मन के अधीन हैं और जब लो मैं कर न चुका तब लो मैं उन का अधीन नहीं हूं इसी लिये भी मै चिन्तित हूं क्योंकि मेरा मन स्वभाव मलिन और भ्रष्ट हुआ और उस के बल से मैं कुकर्म करता हूं जिन का फल भी भोग करना होगा। हाय दुर्गत मनुष्य जो मै हू मेरा छुटकारा कौन करेगा।

जब सुखबिलासी ने देखा कि मेरा भाई अपने बिचार पर बड़ा स्थिर रहता है और दृढ़ प्रमाणों से अपनी बात स्थापन करता है मै उस का यथार्थ उत्तर दे नहीं सकता हू तब उस ने भी औरों की रीति उस को छोड़ दिया और ससारी निरास होके एकान्त मे बैठा रहा।

तब मै ने स्वप्न मे देखा कि जब लों संसारी अपनी दुर्दशा पर ध्यान करता रहा तब लो निरास ही निरास होता रहा और इस दशा मे छूटने का कोई पता कही उस की दृष्टि मे नही आया क्योंकि अब उन पुस्तको को भी जो किरिस्तानों के हाथो से पाई थी और जिन के पढ़ने से उस के मन मे तनिक आस्रा होने लगा था वह पढ़ न सका क्योंकि उस पादरी ने उससे छीन लेके फिर उन्हें उस को न दिया था। पहिले उस ने ऐसा समझा था कि इन मे सत्यमार्ग के चिन्ह दिखाई देते हैं परन्तु जब उस पादरी की शिक्षा से उस ने यह समाचार पाया कि किरिस्तान लोग भी बाहरी रीतो पर और शरीरी कष्टो पर मुक्ति के लिये आस्रा धरते हैं और पादरियो को छोड़ कोई शिष्य परमेश्वर का बचन पढ़ने नहीं पाता है और एक प्रकार की मूर्त्तिपूजा और मनमता भी उन मे चलित होती है तब उस ने अपने मन में बिचार किया कि उन लोगो के धम मे भी सत्यज्ञान नहीं मिलता है।

क्या जाने कहीं नहीं मिलेगा क्या जाने परमेश्वर ने इस जगत को और सारे मनुष्यजाति को उन की भ्रष्टता में छोड़ दिया क्या जाने कोई परमेश्वर नहीं है ।

जब संसारी अपने से बात करते २ इस प्रकार का बिचार प्रगट करता रहा तब मैं निपट डर गया ऐसा न हो कि वह निरासता के मारे निश्चिन्त हो जावे क्या जाने अन्त को नास्तिक भी बने । इतने मे ऐसा हुआ कि उस का भाई सुखविलासी एक बड़े कठिन रोग से पकड़ा गया वही रोग था जिस को शीतरस और हैजा कहते हैं । जब संसारी ने सुना कि भाई ऐसा रोगी है तो तुरन्त उस के पास उपकार करने को गया परन्तु उस को बहुधा अचेत पाया कभी कभी जब चेत मे आया तो बड़ी घबराहट मे होके राम २ चिल्लाया फिर अचेत हो आः मारता कराहता रहा और दो चार घंटे के पीछे मर गया । इस पर जितने नातेदार वहां पर थे सब के सब बड़े भयानक शब्द से रोने चिल्लाने कराहने लगे और सुखबिलासी सुखविलासी पुकारते रहे परन्तु वह मृतक शून्य चुपचाप और पत्थर की नाईं अचेत पड़ा रहा । यह दशा देख संसारी का मन ऐसा व्याकुल और घबराहट से ऐसा दबा हुआ था कि वह सह न सका और वहा से भागके कहीं एकान्त मे चला गया ।

तब मुझ को निद्रा करते हुए स्वप्न का एक ऐसा रूप हो गया कि कोई वस्तु प्रत्यक्ष रीति से दृष्टि नहीं आई एक प्रकार की हड़बड़ी और संशयावस्था और भय मेरे मन मे आ गया कि मानो महाप्रलय की दशा है । अत्यन्त काला अन्धकार चारो ओर फैल रहा जिस मे भूत प्रेतों के रूप भयंकर और दधकती हुई मूर्त्तें इधर उधर उड़ती और बड़े भयानक शब्द से यह पुकारती हुई मेरे नेत्रों

के सन्मुख से आती जाती थीं कि सुखविलासी । संसारी । राम राम । सुखविलासी । फिर रोने और चिल्लाने और कराहने का एक बड़ा डरावना शब्द मेरे सुन्ने मे आया और भय के मारे मेरी ऐसी दशा हो गई कि मेरा जी डूब गया और मै मूर्छित हुआ ।

इस के पीछे फिर जब मै चेत में आया तो वह भयंकर अन्धकार छूट गया था और मैं ने संसारी को देखा कि एक बन में जो उस के घर के निकट था भूमि पर अकेला पड़ा है और क्या देखता हूं कि फूट फूटके रोता और मन की बड़ी जलन और उद्योग से परमेश्वर का नाम लेके प्रार्थना करता है । और अब एक बड़े अचम्भे की दशा हो गई क्योंकि जब मै उस को देखता रहा तो मेरे स्वप्ने का रूप फिर बदल गया और स्वप्न देखते ही मुझ को ज्ञान हुआ कि जो कुछ अब लों मैं ने देखा है सो सर्वत्र स्वप्न ही रहा । और अब के स्वप्ने मे मुझ को ऐसा सूझ पड़ा कि रात दिन का अनुक्रम जो इस समय लो मुझ को दिखलाई दिया है सो केवल धोखा ही था और सचमुच रात ही रात हो रही थी क्योंकि अब पौ फटने के चिन्ह एक नई रीति से प्रकाशित होने लगे । पूर्ब दिशा मे प्रभात का धुंधला सा उजाला हौले हौले ऐसी आश्चर्यित रीति से झलमिलाने लगा कि जो मै ने आगे दोपहर दिन समझा था उस उजाला के सन्मुख अन्धकार देख पड़ा । कभी २ मन्द २ ठण्डी २ पवन चली जिस से मेरा जी अत्यन्त हर्षित हो गया । इधर उधर पक्षी भी अपनी सुश्राव्य बोलियां ऐसे बोलने लगे जैसे एक यहां एक वहां नीद से जागते हैं और मेरी दृष्टि में सारी सृष्टि का एक नया रूप होने लगा । फिर भी संसारी को इस नई दशा का ज्ञान झटपट नहीं हुआ
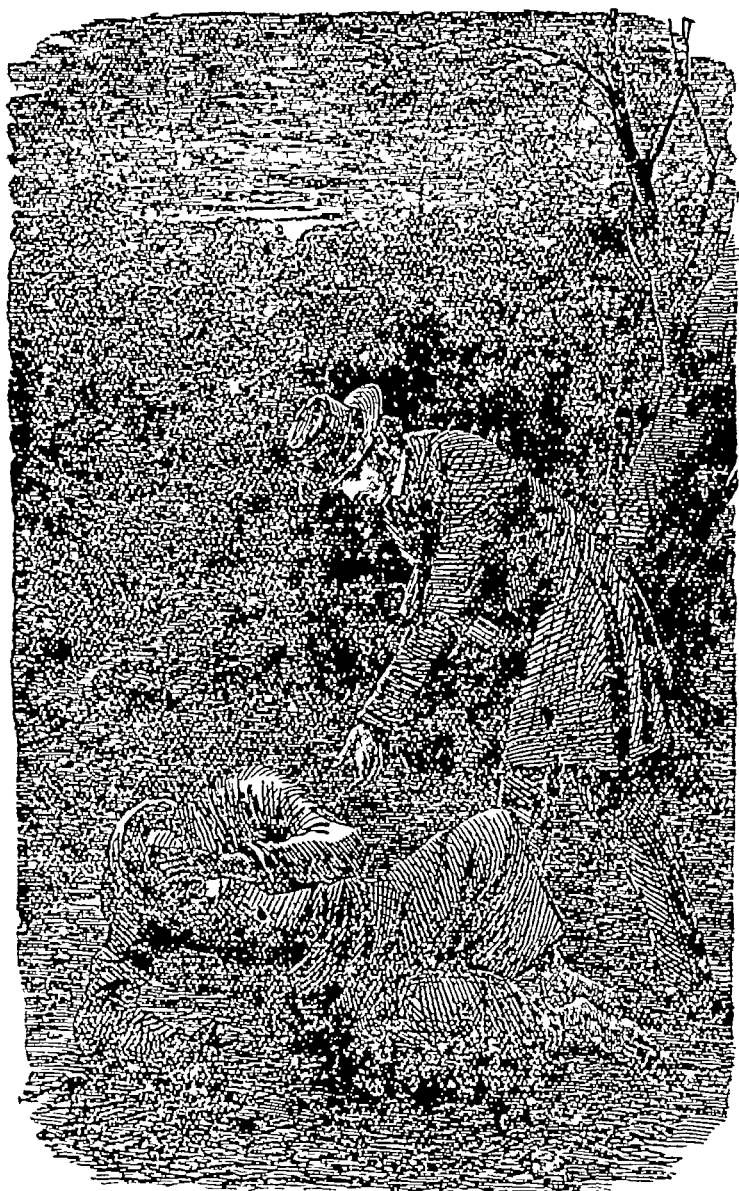
नगलोपदेशक ने कहा कि हे मित्र तू यहा पडा हुआ क्या करता है उठ और सुन । देखो १०५ पृष्ठ ।

क्योंकि आगे की रीति प्रार्थना करता हुआ भूमि पर पड़ा ही रहा ।

इतने में एक मनुष्य उस के पास आ उस का कपड़ा खींच उस से कहने लगा कि हे मित्र तू यहा पड़ा हुआ क्या करता है उठ और सुन क्योंकि मैं तेरे लिये बड़ा मंगलसमाचार लाया हूं अर्थात् परमेश्वर के मुक्ति का मंगलसमाचार जो समस्त पापी जनो के लिये है ।

इस पर संसारी ने ऊपर दृष्टि करके देखा कि एक फिरंगी खड़ा हो यह शाति की बात बोलता है । उस के मुख मे नम्रता और प्रेम दया की मुसकुराहट चमक रही थी और वह अपने एक हाथ में एक पुस्तक लिये था जिस पर यह अक्षर अर्थात् धर्मपुस्तक छपे थे और दूसरे हाथ को संसारी की ओर फैलायके उस को धूल पर से उठाता था ।

तब संसारी ने बड़ी घबराहट से उस से कहा कि हे प्रभु आप कौन हैं और मुझ ऐसे अधम दुगत मनुष्य से क्या करने चाहते हैं क्या मै तेरा पुत्र हू कि जो तू मुझ पर दया करता है । मुझे इसी दशा मे नाश होने के लिये छोड़ दीजिये क्योंकि मैं तेरी दृष्टि के योग्य नहीं हूं फिर आप के स्वरूप से मै जानता हूं कि तू अन्यदेशी है सो हम से तुम से क्या सम्बन्ध व्यवहार हो सकता है ।

तब उस मनुष्य ने जिस का नाम मंगलोपदेशक था उत्तर दिया कि मैं अन्यदेशी तो हूं एक ऐसे देश से आया हूं जो यहां से बहुत दूर है । फिर भी मै तेरा भाई हूं क्योंकि इस पुस्तक मे जो परमेश्वर का बचन है लिखा है कि एक ही परमेश्वर ने इस समस्त संसार को और जितनी वस्तु इस में हैं सब को सृजा है और हम सब के सब उस के सन्तान हैं क्योंकि उस ने एक ही लोहू से मनुष्यों

के सारे जातिगणों को समस्त पृथिवी पर बसने के लिये उत्पन्न किया है और स्थापित समय और उन के निवासों के सिवानों को ठहराया है। और उस ने सारे मनुष्यों के उद्धार के लिये एक ही बड़ा प्रायश्चित्त करनेवाला और मुक्तिदाता भी ठहराया है जिस का नाम प्रभु ईसा मसीह है। क्योंकि यह भी लिखा है कि परमेश्वर ने इस जगत को ऐसा प्यार किया है कि अपने एकलौते पुत्र को भेज दिया जिस्ते जो कोई उस पर बिश्वास लावे सो नाश न होवे परन्तु अनन्तजीवन पावे। और उस प्रभु ने अपने शिष्यों और दासों को आज्ञा दिई है कि सारी पृथिवी में जाके मनुष्य के समस्त जातिगणों को मुक्ति का मंगल-समाचार प्रचारो और जो कोई बिश्वास लाता है उद्धार पावेगा। इस लिये मैं उस प्रभु का दास होके अपने देश को छोड़ इस देश मे आया हू और मै ने अपने भाइयों से तेरा भी कुछ समाचार पाया है और सुना है कि तू बहुत दिनों से अपने पापमोक्षण और मुक्ति के विषय मे अत्यन्त चिन्तित हो रहा है और अपने बापदादों के धर्म मे मन का चैन और सन्तोष नहीं पाता है। और तेरे भाई की भयानक मृत्यु का समाचार भी मै ने पाया इस कारण तेरी खोज कर तेरे पास आया हू जिस्ते मुक्ति का सत्य मार्ग तुझे बतलाऊं।

तब ससारी ने कहा हे महाराज उस मार्ग का और उस बड़े प्रभु का कुछ समाचार मै ने आगे से पाया है और उस के कारण एक समय मेरे मन मे बड़ा आस्रा उपजा था परन्तु मै एक पादरी के पास गया और उस की शिक्षा से वह आस्रा सर्वत्र मिट गया।

तब ससारी ने मंगलोपदेशक को जो कुछ वृत्तान्त उस पादरी से हुआ था सब निवेदन किया और अन्त को यह

भी कहा कि यद्यपि मैं इन सब बातों से फिर निरास हो गया तथापि आप के स्वरूप और सम्बाद में सीधाई और दया के चिन्ह ऐसे प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं कि नवीन भरोसा मेरे मन मे उपजने लगा है । सो यदि आप की सामर्थ्य और इच्छा भी हो तो कृपा करके मुझ अधम पापी की अगुवाई उस बड़े प्रभु के चरणों तले कीजिये और मैं सब दिन आप का धन्य मानूंगा ।

मंगलोपदेशक ने उत्तर दिया कि मै बड़े आनन्द से उस दयावान प्रभु के पास अपनी सामर्थ्य भर तुम्हारी अगुवाई करूंगा क्योंकि इसी लिये मै यहां आया हूं । परन्तु पहिले बतलाता हूं कि उस के पाने के लिये एक बड़ा कठिन काम तुम को करना होगा क्या तुम्हारा आस्था ऐसा दृढ़ है कि तुम इस को कर सकते हो ।

संसारी ने कहा कि अनन्तजीवन के लिये मैं क्या नही सह सकता हूं । जो यह प्रभु सचमुच मेरा पापमोक्षण कर सकता है और मेरे मलिन मन को पवित्र कर सकता है तो इस के लिये मैं सब कुछ सहने पर सिद्ध और प्रसन्न हूं ।

मंगलोपदेशक ने कहा । भला पहिले तो यह आवश्यक है कि तुम इस नगर को जिस का नाम ईश्वरीय क्रोधपुर है छोड़के प्रभु की ओर भाग जाओ जैसे कोई अपने प्राण बचाने के लिये भाग जाता है । अर्थात् इस संसार की समस्त वस्तुओं का लोभ त्यागकर और अपने नातेदारो और सम्बन्धवालों के मोह को छोड़ अपने संपूर्ण मन और बुद्धि और अन्तःकरण को उस प्रभु की खोज पर तत्पर और सिद्ध करना है । क्योंकि प्रभु ने कहा है कि जो कोई माता पिता को अथवा भाई बहिन को अथवा पुत्र पुत्री को अथवा और किसी वस्तु को मुझ से

अधिक प्यार करता है सो मेरे योग्य नहीं है और जो कोई अपने जी को त्याग करने पर प्रसन्न न हो और मेरे कारण अपने क्रूश को अर्थात् समस्त प्रकार का संसारी कष्ट उठाने पर सिद्ध न हो सो मेरा शिष्य नहीं हो सकता है।

संसारी ने कहा कि हे नाथ ऐसों के लिये जिन का मन इस जगत पर लगा है आप की शिक्षा निःसन्देह कुछ कठिन देख पड़ती है और एक ऐसा समय था जब मैं इस को ग्रहण करने के योग्य न था और अब भी मैं नहीं जानता हूं कि इस प्रकार की वीरता मुझ से हो सकती है कि नहीं। परन्तु जहा लों मै अपने मन की दशा जानता हूं अनन्तजीवन और पापमोक्षण और मन की शुद्धता की मेरी ऐसी लालसा है कि उस के कारण सब कुछ छोड़ने पर सिद्ध हूं परन्तु आप बतलाइये कि इस नगर को छोड़ मैं किधर को भाग जाऊं।

तब मैं ने देखा कि संसारी खड़ा हो भागने के लिये अपना वस्त्र लपेटने लगा और मगलोपदेशक ने अपनी अंगुली से पूरब की ओर दिखाके उस से पूछा कि क्या तू दूर पर एक फाटक देखता है कि नही।

तब संसारी ने उस ओर को दृष्टि करके देखा कि वहां ही जंगल है और कोई सड़क भी नहीं है और भूमि ऊंच नीच दिखलाई देती है और पन्थ दिखलाने का कोई चिन्ह नहीं है और वह फाटक को देख न सका। तब उस ने मंगलोपदेशक से कहा कि हे महाराज मै उस को देख नही सकता।

उपदेशक ने उत्तर दिया कि भला एक फाटक तो है क्योंकि मै अभी वहां से आया हूं और उसी फाटक से एक राजमार्ग यात्रियों के लिये बना है और वहां पर

हमारे कितने किरिस्तान भाई भी रहते है और उन को छोड़ मैं तुम्हारी खोज में आया हूं। पहिले तुम उन के पास जाओ और वे तुम्हारे लिये आगे का मार्ग बतलावेंगे ।

तब संसारी ने कहा कि हे महाराज मैं उस फाटक को देख नहीं सकता हूं । क्या जाने जब आप से अलग हो भाग जाता हू तो शीघ्रता के मारे भटक जाऊं तब मेरी क्या दशा होगी ।

इस पर मंगलोपदेशक ने उस्से पूछा कि क्या तू उस झिलमिलानेवाले उजाले को देखता है कि नहीं ।

संसारी ने कहा कि हां मैं ऐसा जानता उस को देखता हूं ।

तब मेरे स्वप्न में ऐसा सूझ पड़ा कि वह उजाला जो पूरब की दिशा मे झिलमिलाने लगा था आगे से अधिक प्रकाशित हो गया है और उस की ज्योति से एक छोटी सी पगदण्डी भी मुझ को दीखने लगी जिस पर जंगल मे बहुत थोड़े लोग चलते हैं यह पगदण्डी उस उजाले की ओर चली गई थी ।

तब मंगलोपदेशक ने ससारी से कहा कि भला तू उस उजाले की ओर सीधा भाग जा न तो दहिनी ओर फिर न तो बाईं और किसी प्रकार से पीछे की ओर मत देख अपने जीवन के लिये भाग । आगे बढ़ते हुए वह फाटक भी तुम्हारी दृष्टि मे आवेगा और वहा तुम्हारे लिये आगे का मार्ग बतलाया जायगा मैं अभी तुम्हारे सदृश और मनुष्यों की खोज में जाता हूं ।

तब संसारी ने बिन्ती करके कहा कि हे कृपानिधान मुझ बेबस पर कृपा कीजिये क्योंकि मैं निपट डरता हूं ऐसा न हो कि उस फाटक के इधर को किसी कारण से

मेरा नाश होवे। जो आप दया करके तनिक दास के संग चलिये जब लों कि ओर उजाला न हो तो इस मे आप को बड़ा ही पुण्य होगा।

तब मंगलोपदेशक ने कहा कि मैं तो तुम्हारे समान बेबस असामर्थी मनुष्य हूं और मुक्ति के प्रकरण मे किसी मनुष्य पर आस्ता धरना भला नहीं है। तुम को चाहिये कि मन से प्रभु को पुकारना और उस की प्रार्थना करना तब वही तुम्हारी अगुवाई करेगा। परन्तु परमेश्वर ने हम सभों को एक दूसरे के उपकार करने को उत्पन्न किया है और प्रभु ने आज्ञा भी दिई है कि एक दूसरे की सहायता करो। इस लिये पहिले हम दोनों एकट्ठे होके प्रभु की प्रार्थना करेंगे और पीछे मैं थोड़ी दूर तुम्हारे संग चलूंगा।

तब मैं ने देखा कि दोनो मनुष्य भूमि पर घुटने टेक और प्रभु ईसा मसीह का नाम ले प्रार्थना और बिन्ती करने लगे कि उस नये मार्ग पर संसारी की अगुवाई करे। इस के पीछे दोनो मनुष्य उस उजाले की ओर सिधारे।

इति मुमुक्षुवृत्तान्तवर्णने एकादशोऽध्यायः।

बारहवां अध्याय।

इस अध्याय में संसारी नये मार्ग पर चलके मंगलोपदेशक से बातचीत करता है।

तब मैं ने स्वप्न मे देखा कि जब ये दोनों मनुष्य अर्थात् मंगलोपदेशक और संसारी प्रभु की प्रार्थना करके उस उजाले की ओर चलने लगे तब वह उजाला क्रम २ से अधिक तेजोमय और प्रकाशित होने लगा और उस को देखके संसारी ऐसा आनन्दित था कि चलने मे बड़ी शीघ्रता

करने चाहता था । परन्तु उस बोझ के कारण जो उस के कंधे पर था और इस हेतु से भी कि जो दुःख और कष्ट उस ने उठाया था उस को अत्यन्त दुर्बल कर दिया था इस लिये उस को हौले २ चलने पड़ा । फिर भी हर्षित होके वह मंगलोपदेशक से कहने लगा कि यह कैसा आनन्द-पूर्वक और जीवनदायक उजाला है जो हमारे सन्मुख चमकता है । मुझ को ऐसा देख पड़ता है कि एक नये प्रकार का सूर्य उदय होने पर है ।

मंगलोपदेशक ने उत्तर दिया कि सच यह तो शुद्धता और चैन और मुक्ति का सूर्य है जिस को धर्मसूर्य कहते हैं । यह वह सूर्य है जिसे हमारा प्रभु उन पर जो उस के नाम से डरते हैं उदय करता है और जिस के पंखों अर्थात् किरणो के तले चंगाई है । अब तो उस का पूरा तेज दिखाई नहीं देता है क्योंकि अरुणोदयकाल है परन्तु इस के कारण प्रभु की स्तुति करनी चाहिये, क्योंकि उस ने तुम्हारी बिन्ती सुनी और तुम्हारी प्रार्थना ग्रहण करके तुम पर दया किई है ।

संसारी ने हाथ जोड़ स्वर्ग की ओर आंख उठाके कहा कि हे प्रभु मैं तेरी स्तुति करता हूं कि तू अपने सूर्य को मुझ अधम पापी पर उदय करने लगा है । तब मंगलो-पदेशक की ओर फिरके कहा कि अब तो प्रभु ने मुझ अयोग्य पर ऐसी कृपा किई है सो इस का क्या कारण है और किस लिये मै ने आगे इस उजाले को तनिक भी नही देखा और २ लोग भी किस लिये नहीं देखते हैं ।

मंगलोपदेशक ने उत्तर दिया कि एक प्रकार से जितने मनुष्य इस संसार मे हैं जो उन की इच्छा हो तो इस की कुछ चमक देख सकते हैं क्योंकि यह वह सच्चा उजाला है जो हर एक मनुष्य को जो जगत में आता है प्रकाश करता

है। अर्थात् सारे मनुष्यों को भले बुरे का कुछ ज्ञान है उचित और अनुचित पुण्य और पाप का विवेक है सत्य और मिथ्या के भेद की कुछ पहिचान है सब कोई जानता है कि सत्य बात भली है और मिथ्या बात बुरी। भला यह ज्ञान जितना जिस को होवे सो उस को इसी सूर्य की चमक है और जो कोई उसी चमक का पीछा सीधे मन से करेगा अर्थात् जहां लो उस को ज्ञान हो सारी भाति की मिथ्या और पाप और अनुचित बातों को त्याग करेगा और समस्त प्रकार का पुण्य और सत्यता और उचितता और भली बातो का पीछा करेगा उस को और भी उजाला मिलेगा और धर्मसूर्य उस पर उदय होगा। परन्तु बहुधा मनुष्य इस उजाले को नही चाहते हैं जैसे परमेश्वर के बचन मे लिखा है कि यह उजाला अंधियारे मे चमकता है परन्तु अंधियारा उस को नहीं समझता है और फिर लिखा है कि उजाला जगत में आया परन्तु मनुष्य अंधियारे को उजाले से अधिक चाहते हैं क्योंकि उन के कर्म बुरे हैं। और जो कोई ऐसा करता सो जितनी चमक उस को मिली उस को भी बुझा देता और वह सर्वत्र अन्धा हो जाता है।

संसारी ने कहा हे महाराज आप तो बहुत ही यथार्थ और ठीक ज्ञान बतलाते हैं और अब मै जानता हूं कि जब मै ने उस ब्राह्मण की शिक्षा को त्याग किया और अपने पापदादो के देवताओं को छोड़ दिया और उस पादरी के उपदेश को नही माना तो निःसन्देह मै ने अच्छा किया क्योंकि मेरे मन मे इतनी चमक थी कि यह बाते मिथ्या हैं और उसी चमक का पीछा मै ने किया परन्तु नही जानता था कि यह चमक कहां से आती है। अब परमेश्वर की अपार दया से यह सूर्य मुझ अन्धे पर

उदय होने लगता है हाय कि इस का पूरा तेज मुझ पर शीघ्र प्रकाशित होवे ।

मंगलोपदेशक ने उत्तर दिया कि तू ने उस चमक का जितनी तुम को मिली थी सीधे मन से पीछा किया सो अब धर्मसूर्य तुम पर उदय होनेवाला है इसी रीति से तुम उस उजाले की ओर सीधे चलते रहो तो और भी प्रकाशित और तेजोमय होता जायगा । परन्तु यह उजाला ऐसा है कि उस की ज्योति से जितने दोष और मलिनता हमारे मन मे हैं और पाप के जितने नाशक गुण जैसे हैं वैसे सब के सब प्रत्यक्ष रीति से दिखाई देते हैं और इस लिये बहुतेरे जनों को यह नही भावता है । सो यदि तुम इस कारण उससे अप्रसन्न होके कभी चंचल मन से दूसरी ओर फिरो तो अन्धकार हो जायगा क्योंकि प्रभु ने कहा है कि शरीर का दीपक आंख है इस लिये यदि तेरी आंख निर्मल होवे तो तेरा सारा देह प्रकाशमान होगा परन्तु यदि तेरी आंख बुरी होवे तो तेरा सारा देह अन्धकारमय होगा इस लिये यदि यह उजाला जो तुझ में है अन्धकार हो जाय तो कैसा बड़ा अन्धकार होगा ।

तब मैं ने सुना कि मंगलोपदेशक ने संसारी से उस की पहिली गति का समाचार पूछा और संसारी ने अपना सब वृत्तान्त उस्से कहा । अर्थात् जिस रीति से आरंभ मे परलोक की चिन्ता उस के मन मे आई और इस को शांत करने के लिये उस ने जो २ उपाय करे थे और यह सब उपाय क्योंकर और किस कारण से निष्फल ठहरे यह सब वर्णन किया और अन्त को यह कहा कि अब मुझे निश्चय है कि मुक्ति के प्रकरण मे केवल दान पुण्य करना अथवा धर्म की बाहिरी रीतों पर बड़े यत्न से

चलना किम्बा अपार शरीरी कष्ट उठाना सर्वत्र विगुण और निष्फल और वृथा है। इस कारण मैं बहुत काल से उस कपोत की नाईं जिस के पंख टूट गये हैं पड़ रहा हूं न तो उड़ने की सामर्थ्य न तो बिश्राम करने का अवसर है।

इस के उत्तर मे मंगलोपदेशक ने कहा कि तुम ने बड़ी दुःखमय रीति से उन लोगों को जिन के पास तुम शिक्षा के लिये गये भूलचूक पहिचान लिई है इस कारण अवश्य नही है कि इस समय उन भ्रमो की चर्चा करें। परन्तु इस के विषय में इतना कहना चाहिये जैसा मंगलसमाचार की पुस्तक में लिखा है। अर्थात् परमेश्वर ने आप को बिना साक्षी न छोड़ा है क्योंकि उस का एक साक्षी समस्त मनुष्यो के मन में है। फिर उस के गुण जो अदृश्य हैं अर्थात् उस के अनन्त पराक्रम और ईश्वरत्व जगत की उत्पत्ति से सृष्टि पर दृष्टि करने से पहिचाना जाता है यहां लो कि वे निरुत्तर हैं। परन्तु जैसे उन्हों ने न चाहा कि परमेश्वर का ज्ञान रखे परमेश्वर ने भी उन्हें मूढ़ बुद्धि में छोड़ दिया और जब कि उन्हो ने उस को चीन्हके उस की महिमा उस के ईश्वरत्व के योग्य न किई तब वे अपनी भावना से बहक गये और उन के अन्तःकरण अज्ञानता से अंधियारे हुए। वे आप को ज्ञानी ठहरायके मूर्ख बन गये और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को बिनाशमान मनुष्य के स्वरूप से बदल डाला। उन भ्रमो के विषय मे परमेश्वर का बचन यही है परन्तु अब इन बातो को छोड़ देंगे और मसीही धर्म की मूल बातों का थोड़ा सा बर्णन करेंगे।

तब मैं ने सुना कि मंगलोपदेशक ने चलते २ संसारी को मसीही धर्म की यह बातें बतलाईं। अर्थात्

१ परमेश्वर ने आरंभ मे मनुष्यजाति को पवित्र और निष्कलंक और स्वतंत्र उत्पन्न किया और उस की परीक्षा के लिये उस को एक ऐसी आज्ञा दिई जिस्से प्रगट होवे कि मनुष्य अपनी स्वतंत्रता को ईश्वर की इच्छा के समान काम मे लावेगा कि नही।

२ दुष्टात्मा के बहकाने से मनुष्य पाप मे पतित हुआ अर्थात् ईश्वर की आज्ञा न मानी और इस रीति से पाप का विष उस के स्वभाव मे व्याप्त हुआ इस के पीछे उस के समस्त सन्तान उस के स्वरूप में उत्पन्न होके पापी स्वभाव के अधिकारी हैं।

३ इस पापमय स्वभाव का विशेष गुण यह है कि ईश्वर को ईश्वर करके नही मानता है परन्तु अपनी इच्छा पर चलना चाहता है। इस कारण मनुष्य अपनी दुर्दशा की औषध अपनी किसी युक्ति से कर नही सकता है।

४ क्योंकि १ समस्त जाते अपने २ स्वभाव के समान चलती हैं और जब मनुष्य का स्वभाव पापी हो गया तो अपनी दुर्दशा की सच्ची औषध नही चाहता है क्योंकि सच्ची औषध उस को पाप से अलग करेगी। २ यद्यपि ऐसी इच्छा भी करे तथापि अपने पापी कर्मों का प्रायश्चित्त नही कर सकता है क्योंकि केवल वही जो आप सर्वत्र निष्पाप है प्रायश्चित्त कर सकता है और कोई ऐसा मनुष्य कही नही मिलता है। ३ मनुष्य का पाप परमेश्वर ही की आज्ञा भंग करना है इस लिये केवल परमेश्वर उस को क्षमा कर सकता है।

इतनी बाते सुनते ही संसारी कहने लगा कि हे गुरु आप की यह शिक्षा मुझे यथार्थ और निश्चय देख पड़ती है क्योंकि मेरी यही दशा है इस लिये मै निपट चाहता

हूं कि उस बड़े मुक्तिदाता का वृत्तान्त सुनूं जो मुझे इस दुर्दशा से छुटा सकता है।

मंगलोपदेशक ने यह उत्तर दिया। वह जो इस बड़े काम पर सामर्थी और प्रसन्न भी है सो केवल प्रभु ईसा मसीह परमेश्वर का पुत्र पूर्ण ब्रह्म का अकेला अवतार है जिस का वृत्तान्त मंगलसमाचार की पुस्तक में लिखा है। परन्तु इस के याेग्य समझ के लिये चाहिये कि क्रम २ से दाे एक और बाते तुम का बतलावे। अर्थात्

१ जब से मनुष्यजाति पाप मे पतित हुई तब से दयासागर परमेश्वर ने उस को मुक्ति के लिये उपाय ठहराया है और इस बड़े उपाय का समाचार जगत की उत्पत्ति से भी हाेता आया है।

२ इस समाचार की दाे एक बाते सारे संसार मे फैल गई है जैसे बलिदान और प्रायश्चित्त करने की रीति जो आरंभ मे ईश्वर की आज्ञा से स्थापित हुई और यह रीति एक दृष्टान्त अथवा चिन्ह के समान प्रगट करती है कि याेग्य समय पर ईश्वर एक ऐसा बलिदान और प्रायश्चित्त करनेवाला भेजेगा जो अपने पुण्यप्रताप से समस्त संसार का पाप काट सकता है।

३ इस्से अधिक परमेश्वर ने प्रसन्न हाेके मनुष्यजाति के यहूदी नाम एक कुल का इस उपाय का और भी समाचार दिया अर्थात् कि यह बड़ा मुक्तिदाता तुम्हारे कुल के राजवंश मे से और तुम्हारे देश के एक नगर में एक कुमारी कन्या के पेट से उत्पन्न हाेगा और उन का अनेक प्रकार के और चिन्ह भी बतलाये जिन से वह मुक्तिदाता जब आवे पहिचाना जावे।

४ इस भविष्यद्वाणी के अनुसार स्थापित समय पर प्रभु ईसा मसीह उत्पन्न हुआ और यद्यपि उस के विषय

में आगमज्ञानियो की अनेक ऐसी बाते लिखी थीं जो पहिली दृष्टि से बिरुद्ध और असम्भव देख पड़ती थीं तथापि उस के वृत्तान्त मे यह सब के सब संपूर्ण समाप्त हुई ।

५ यह अवतार मनुष्यरूप धारण करके तेंतीस बरस लो इस जगत मे जीता रहा और असंख्य चमत्कारों से अपने ईश्वरत्व और मनुष्यत्व दोनो का प्रकाशित किया और ईश्वर की सारी व्यवस्या का सपूर्ण करके और अपने का निष्पाप और निष्कलंक दिखाके अन्त का अपनी प्रसन्नता से मनुष्यजाति की सन्ती बलिदान होके प्रायश्चित्त की रीति अपना प्राण दे दिया । फिर तीसरे दिन जी उठके अन्त का अपने शिष्यो के देखते ही स्वर्गारूढ हुआ अब इस पर विश्वास लाने से सारे पापी मनुष्य मुक्ति और पापमोक्षण पा सकते है ।

इस पर ससारी ने मगलोपदेशक से कहा कि हे नाथ आप का वृत्तान्त वहुत भला सुन पडता है परन्तु हिन्दू लोग भी अपने अवतारो का बडा अचंभा बर्णन करते है फिर भी मेरा विश्वास जो उन पर था परीक्षा करने से निष्फल और वृथा ठहरा । सो आप से पूछते है कि यह अवतार नि.सन्देह परमेश्वर का सच्चा अवतार है हम किस रीति से निश्चय कर सकते हैं ।

मगलोपदेशक ने उत्तर दिया कि तुम्हारा प्रश्न वहुत ही उचित है और यद्यपि इस समय हम इस का पूरा उत्तर दे नही सकते हैं तथापि दो एक बात कहेगे । प्रभु ईसा मसीह परमेश्वर का सच्चा अवतार होना इस रीति से निश्चय हो सकता है अर्थात्

१ उस के चरित्र और बचनो से परमेश्वर के सारे प्रसिद्ध गुण प्रकाशित हुए जैसे

१ उस की पवित्रता अर्थात् किसी पाप का लेश वा कलङ्क उस के किसी बाचा वा काया वा चिन्ता मे कभी नही हुआ उस के लिये यह आड़ लगाना कि सामर्थी को दोष नहीं लगता कुछ प्रयोजन नही। वह यहा लों अत्यन्त पवित्र रहा कि जब उस के धर्मोपदेश के कारण कितने बुरे लोग अप्रसन्न होके उस के बैरी हो गये और अन्त को उस के घातक भी ठहरे तथापि वे उस पर किसी प्रकार का दोष लगा नही सकते थे।

२ उस की सत्यता कि किसी दशा मे किसी को किसी प्रकार का धोखा नही दिया न तो उन के आनन्द के लिये न तो अपने कुशल के कारण। उस के मुख मे छल बल न था और यद्यपि सत्य बात कहने के कारण वह मारा भी गया तथापि उस ने सत्य बात कहनी कभी न छोड़ा।

३ उस की सर्वज्ञता कि भूत भविष्यत बर्त्तमानकाल का समस्त समाचार उस के पास था स्वर्ग पृथिवी पाताल की दशा जानता था मनुष्य के अन्तःकरण की छिपी हुई बात से सज्ञान होके बतलाता था और किसी प्रकार की किसी एक बात से भी अनजान न था उस के उपदेश से यह बात निश्चय होती है।

४ उस की दया कि सारे मनुष्यो को बरन अपने शत्रुओं को भी प्यार करता था और उन की भलाई करने मे तत्पर रहा और उन की बिपत्तियो और पापो का बोझ भी सहता रहा और अन्त को उन के प्रायश्चित्त के लिये अपना प्राण बलिदान होने को समर्पण किया और जब उस के शत्रु उस को घात भी करते थे तब उन के कुशल के लिये प्रार्थना भी किई।

५ उस की अनन्त सामर्थ्य कि उस ने ऐसे चरित्र दिखाये

जो सृष्टि करने के समान थे और उन से प्रगट हुआ कि ईश्वर की भी सामर्थ्य उस के पास है। समस्त रोगियों को एक बचन से चंगा किया गेहूं के दाना जो भूमि मे पड़के प्रकृतिशक्ति से तीन मास में बहुत बढ़ जाते हैं उन को उस प्रभु ने क्षण भर मे जब सूखे और पीसे भी थे ऐसा बढ़ाया कि पांच रोटियों से पाच सहस्र मनुष्यों को खिलाके तृप्त किया समाधि मे से मृतको को भी बुलाके जिलाया और इस रीति से प्रभु ने अपने को जीवन का मूल और स्वामी दिखाया।

इतनी बाते सुनते ही संसारी ने कहा कि हे महाराज यदि प्रभु सचमुच ऐसा सामर्थी और जीवन का मूल और परमेश्वर भी था तो क्योंकर वह अंत को मर भी गया क्या यह बात ईश्वर के गुण के विरुद्ध नहीं है।

मगलोपदेशक ने उत्तर दिया कि कुछ आश्चर्य की बात नही है कि इस के विषय से तुम्हारे मन मे सन्देह हो। परन्तु एक बात स्मरण करना चाहिये जिससे यह सन्देह दूर हो जायगा अर्थात् प्रभु की जाति मे ईश्वरत्व और मनुष्यत्व दोनों संयुक्त थे और उस के वृत्तान्त मे इन दोनों के गुण दिखाई देते हैं। निःसन्देह ईश्वर मरनेवाला नहीं है और दुःख का सहनेवाला भी नही हो सकता है परन्तु ये दोनो बाते मनुष्य के गुण हैं और प्रभु ने मनुष्य होके इन दोनों को सहा। निःसन्देह ईश्वरत्व और मनुष्यत्व दोनों के संयुक्त होने मे एक बड़ा भेद है जो मनुष्य की बुद्धि मे आ नही सकता है क्योंकि ईश्वर की जाति का कौन परिमाण कर सकता है। अथवा अपनी जाति को भी कौन समझ सकता है और कौन बतला सकता है कि मनुष्य का आत्मा और देह किस रीति से संयुक्त रहते हैं। और इस के सम्बन्ध मे एक और बड़ा

भेद भी है अर्थात् परमेश्वर के बचन मे ईश्वरत्व तीन प्रकार से बर्णित होता है पिता पुत्र और पवित्रात्मा और ये तीनो किसी रीति से एक हैं और किसी रीति से तीन हैं इस भेद की पूरी समझ और बखान मनुष्य से क्योंकर हो सकता है। जितना ईश्वर प्रसन्न होके आप हम पर प्रगट करता है इतना हम जान सकते हैं और इतना बर्णन है कि परमेश्वर पिता होके गुप्त रहता है और पुत्र होके प्रत्यक्ष होता है और पवित्रात्मा होके उन मनुष्यो के मन मे जो प्रसन्न हो बास करता है परन्तु जो कुछ इस के विषय मे कहा जावे फिर भी बड़ा भेद रहेगा। और अब दो एक बात और हम बतलावेगे जिन से प्रभु ईसा मसीह का ईश्वर का सच्चा अवतार होना निश्चय होता है अर्थात्

१ किसी ऐसे गुण का लेश उस मे देख नहीं पड़ता है जो परमेश्वर के अवतार के योग्य नही है। क्योंकि जैसे तुम कह चुके हो हिन्दू भी अपने अवतारो का बड़ा बखान करते हैं कि पवित्र थे सामर्थी थे सर्वज्ञानी थे इत्यादि परन्तु उन के ऐसे चरित्र बतलाते हैं जो इन गुणो के विरुद्ध हैं। किसी को पवित्र कहने से कुछ नहीं बनता है जब उस पर अपवित्र कर्म लगाते हैं और किसी को सत्य कहने से कुछ काम नही है जब वह दूसरे को धोखा देता हैं परन्तु ईसा मसीह मे किसी ऐसे गुण वा कर्म का लेश नही मिलता है जो पूर्ण ब्रह्म के सच्चे अवतार के योग्य न था।

२ उस के इस जगत मे अवतार लेने का अभिप्राय ईश्वर का बहुत ही योग्य था क्योंकि वह दुष्टो के मारने के लिये किम्वा नास्तिक मत फैलाने के लिये अथवा लीला क्रीड़ा करने के लिये इस जगत मे नही आया। उस के आने

का अभिप्राय यह है कि पाप को नष्ट करके पापियों को बचावें और यह काम ईश्वर के बहुत ही योग्य और मनुष्य के आवश्यकता के समान है और बुद्धि को सूझ नहीं पड़ता है कि यह काम बिना अवतार लिये क्योंकर हो सके।

३ फिर इस अवतार आने का फल भी परमेश्वर और मनुष्य के बिषय मे बहुत ही उचित और प्रशसा के योग्य है क्योंकि उस के द्वारा ईश्वर की महिमा और पवित्रता और सामर्थ्य और दया इत्यादि समस्त गुण सारी सृष्टि पर प्रत्यक्ष रीति से प्रगट होते हैं और ईश्वर की व्यवस्था का सन्मान और सपूर्णता होती हैं और मनुष्य की शुद्धता और आनन्द और मुक्ति होती है और ईश्वर और मनुष्य का पूरा और अटल मेल स्थापन होता है।

४ एक और बात है कि प्रभु ईसा मसीह जब मर चुका तब तीसरे दिन जी उठा और अपने शिष्यों को कई बार दर्शन देके अन्त को उन के देखते ही स्वर्गारूढ़ हुआ और इस्से निश्चय होता है कि वह ईश्वर का सच्चा अवतार था और मनुष्यजाति का अकेला मुक्तिदाता हो सकता है। क्योंकि उस ने आगे से यह लक्षण ठहराया जिस्से उस के शिष्य उस बात को निश्चय जाने और जो कोई इस पर ध्यान करेगा तो निःसन्देह मान लेगा कि ईश्वर के अवतार और मनुष्य के मुक्तिदाता का ठीक और यथार्थ लक्षण यही है।

तब संसारी ने कहा कि हे गुरु जो समाचार आप सुनाते है निःसन्देह अत्यन्त आश्चर्य्यित हैं और उस का तात्पर्य्य ऐसा आनन्दपूर्वक है कि उस को मगलसमाचार कहा चाहिये। परन्तु एक सन्देह मेरे मन मे रह गया है अर्थात् हम किस रीति से जाने कि यह समाचार यथार्थ और प्रामाणिक और बिश्वासयोग्य है।

मंगलोपदेशक ने उत्तर दिया कि जो समाचार मैं ने सुनाया है सो इस पुस्तक अर्थात् मंगलसमाचार का संक्षेप वर्णन है जो इस के विषय मे तुम्हारा कुछ सन्देह हो तो अपने लिये पढके जाचो और तोलो तुम्हारी ही भाषा मे लिखा है।

संसारी ने कहा क्या यह मंगलसमाचार की पुस्तक मुझ को भी मिल सकती है क्योंकि उस पादरी ने हम से कहा कि पादरियो को छोड़ किसी शिष्य को नही मिल सकती है।

मंगलोपदेशक ने उत्तर दिया कि अवश्य तुम को मिल सकती है मै अभी तुम को देता हूं। जो मनुष्य जिस २ जाति का होवे यह पुस्तक किसी के हाथ से जो उस की इच्छा करे रोक रखता है सो निःसन्देह बड़ा ही अपराध करता है क्योंकि सारे जातिगणों के लिये परमेश्वर का वचन यही है।

तब संसारी ने कहा कि यह क्या ही भली बात है अब तो वह सन्देह मेरे मन से जाता रहा क्योंकि अब मै अपने लिये जांच सकता हूं कि यह परमेश्वर का वचन है कि नही और इस का तात्पर्य्य कैसा है। परन्तु कृपा करके मेरे लिये एक और भी बात बतलाइये अर्थात् यह अवतार जिस का वृत्तान्त आप कहते हैं सो आप के देश मे हुआ कि नही।

मंगलोपदेशक ने उत्तर दिया कि नही हमारे देश में नही हुआ पृथिवी के इस खंड के एक देश मे हुआ जिस खंड मे हिन्दुस्थान है हमारा देश पृथिवी के दूसरे खंड मे है। जब यह अवतार हुआ और उस के कितने बरस पीछे भी हमारे देश निवासी मूर्त्तिपूजक और अज्ञानी थे कितने बरस पीछे यह मंगलसमाचार हमारे पूर्व लोगों

के पास आया और उन्हों ने इस का परख लेके और सत्य पाके मूर्त्तों का त्याग कर इस का ग्रहण किया उस काल से हमारे देश पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ ।

संसारी ने कहा कि हे महाराज यह अवतार किस देश में हुआ और उस का कितने बरस हो गये ।

मंगलोपदेशक ने कहा कि यहूदिया देश मे जिस का नाम शाम भी है जो यहा से पश्चिम दिशा की ओर को है यह हुआ और अब उस के उन्नीस सौ बरस से कुछ अधिक हो गये ।

तब ससारी ने कहा कि मेरा अपराध क्षमा कीजिये परन्तु यह एक ऐसा भारी विषय है जो भली भांति परख लेके और विचारके ग्रहण करना चाहिये । और सच यह है कि कितनी बाते पर मै बिश्वास लाता था परन्तु जब जांच लिया ते असत्य और बनावट पाया । सो आप हम को बतलाइये कि किस रीति से निश्चय जाने जो वृत्तान्त इस पुस्तक मे लिखा है सो हिन्दुओ की कथाओं की रीति चतुर और छली लोगो की बनावट अथवा सत्य बात की बढ़ाव और अस्पष्ट बर्णन नही है ।

मगलोपदेशक ने उत्तर दिया कि अपनी सामर्थ्य भर परख लेना और बिचारना अपराध नही है बहुत भला है परमेश्वर की आज्ञा भी है क्योंकि उस के बचन में लिखा है सारी बाते को जाचो भले और सत्य को थाभे रहो । सो जो प्रश्न तुम ने किया है बहुत ही ठीक और यथार्थ है और इस का उत्तर मै संक्षेप से देता हूं । इस रीति से तुम निश्चय कर सकते हो कि इस पुस्तक का वृत्तान्त अस्पष्ट और कल्पित कथा नही है प्रामाणिक और सत्य है अर्थात्

१ यह वृत्तान्त उसी काल में लिखा था जिस में यह

समस्त आश्चर्य उपस्थित और प्रकाशित हुए परन्तु हिन्दुओं के देवताओं की कथा बहुत काल पीछे लिखी गई जब उस का जांच लेना कि सच है कि नही किसी की सामर्थ्य न थी ।

२ ऐसे लोगों ने मंगलसमाचार का वृत्तान्त लिखा जो आप उन आश्चर्यों के देखनेवाले थे और यह ऐसे आश्चर्य थे कि उन के विषय मे देखनेवाले का धोखा खाना अनहोना था ।

३ यह वृत्तान्त उन्हीं दिनों में और उसी देश मे और उन लोगों के बीच भी जो देखनेवाले थे फैल गया ऐसा कि जो उस वृत्तान्त में कोई अस्पष्ट अथवा निष्प्रमाण बात लिखी जाती तो उस को झुठलाके त्याग करना सब किसी की सामर्थ्य थी ।

४ प्रभु मसीह के और उस के शिष्यों के बहुत बैरी थे और वे निपट चाहते थे कि इस समाचार को खण्डन करें बरन मसीही मतावलम्बियों को मार भी डालते थे फिर भी इस वृत्तान्त की किसी बात को झुठला नहीं सकते थे ।

५ इस वृत्तान्त के लिखनेवाले अपनी बात की सत्यता पर मर जाने को सिद्ध थे बरन बहुतेरे मारे भी गये परन्तु अपनी बात को नही छोड़ा कि हम ने मसीह को देखा उस ने ऐसे २ कर्म्म किये और अन्त को मारा गया और तीसरे दिन जी उठा और कितने बार हम को दर्शन दिया और हमारे देखते ही स्वर्ग पर चढ़ गया । सो यदि यह बात सत्य न थी तो ऐसे कहने से उन लोगों का क्या अभिप्राय हो सकता था । सत्य बात के लिये भी मर जाने को बहुत थोड़े मनुष्य सिद्ध हैं मिथ्या के लिये कोई मनुष्य जान बूझके नही मरेगा ।

६ वृत्तान्त का एक ही लिखनेवाला और कहनेवाला नहीं था बहुत थे । दो एक जन धोखा खावे तो खावें परन्तु सैकड़ों जन अपने इन्द्रियों को शुद्ध रखके और ऐसे आश्चर्यों को कितने बार देखके धोखा नहीं खा सकते हैं ।

७ इस वृत्तान्त के भिन्न २ लिखनेवाले चार हैं और उन के वृत्तान्त भिन्न २ हैं और छोटी २ बातों का कभी २ भेद है जिस्से प्रगट होता है कि योग संयोग का वृत्तान्त नहीं है फिर भी चारों का तात्पर्य समान है ।

८ प्रभु ईसा मसीह का स्वभाव और चाल चलन और चरित्र का ऐसा वर्णन है कि जिस की कलपना मनुष्य की बुद्धि की सामर्थ्य से बाहर थी । क्योंकि मनुष्य जितना तीक्ष्ण बुद्धि और गुणवान् होवे फिर भी अपने स्वभाव के वश मे होके कलपता है और जब कि मनुष्य का स्वभाव कलंकित है तो उस के स्वभाव का कलंक उस की कलपना में भी कहीं २ देख पड़ेगा । परन्तु प्रभु का वृत्तान्त सर्बत्र निर्मल और निष्कलंक ठहरता है ।

परन्तु इस का पूरा वर्णन अब नहीं हो सकता है आगे के मार्ग पर बढ़के हमारे भाइयों से पूछिये वे तुम्हारे जितने संदेह होवें सब दूर करेंगे । एक बात भूलो मत अर्थात् तुम अपने लिये प्रभु ईसा मसीह का संपूर्ण वृत्तान्त बड़ा ध्यान करके पढ़ो और परमेश्वर से प्रार्थना करो कि वह तुम्हारी अगुवाई करे । फिर बिचारो कि ऐसा प्रभु जिस का वृत्तान्त इस पुस्तक मे लिखा है पर- मेश्वर के पुत्र को छोड़ और कौन हो सकता है और यह पुस्तक भी जो परमेश्वर का बचन न हो तो कौन बना सकता है । क्योंकि यदि तुम सीधे मन से इस का तात्पर्य जांचके उस पर बिश्वास लाओ तो जितने तुम्हारे आत्मा के प्रयोजन हैं सब के सब इस्से प्राप्त हो सकते हैं ।

इतने मे मै ने देखा कि वह उजाला आगे से और तेजोमय हो गया था । और मंगलोपदेशक ने संसारी को मंगलसमाचार की पुस्तक दान करके उस्से कहा कि हे मित्र अब मैं तुम से बिदा होता हूं और अपने प्रभु की आज्ञा करने के लिये नगर मे जाता हूं । तुम उस उजाले की ओर सीधे चलते रहो जो कोई कठिन आ जावे तो निरास मत होओ परन्तु प्रभु से प्रार्थना करके इस पुस्तक से परामर्श लो और ईश्वर का धन्यबाद तुम्हारे संग रहे । यह कहके मंगलोपदेशक नगर की ओर चला गया और संसारी अपने मन मे तनिक भय और चिन्ता करके और अपने बोझ के तले झुकके जितनी शीघ्रता हो सकी उस उजाले की ओर सिधारा ।

इति मुमुक्षुवृत्तान्तबर्णने द्वादशोऽध्यायः ।

तेरहवां अध्याय ।

इस अध्याय में ससारी चलते २ कुछ कठिन में पड़ जाता है फिर उस्से बचके लौकिकज्ञानी नामे एक मनुष्य से भेंट कर मार्ग से भटक जाता है परन्तु अन्त को राजमार्ग के फाटक पर पहुंच जाता है ।

तब मै ने स्वप्न में देखा कि ससारी अपने मन में बड़ा ध्यान करके उस उजाले की ओर चला गया । और कुछ वेर लों उस का मार्ग सीधा चौरस था और चलते २ अपना आसरा और साहस बढ़ाने के लिये अपने से इस प्रकार की बात बोलता गया अर्थात् अब मै शीघ्रता करके अपने बोझ से छुटकारा पाऊंगा अब थोड़ी देरी के पीछे इस बुरे रोग से चंगा हो जाऊंगा । और मै ने यह भी सुना कि कभी २ वह उस प्रभु की जिस की खोज मे जाता था स्तुति और प्रार्थना भी करता गया ।

यों चलते २ वह एक स्थान मे आ पहुंचा जिस मे भूमि कुछ असम थी और कभी २ मार्ग के उतार के कारण वह उजाला उस की दृष्टि से छिपने लगा । परन्तु उस की ज्योति के प्रतिविम्ब से पगदण्डी देखने में आई और आगे बढ़ते हुए ससारी को एक ऐसा स्थान मिला जो अत्यन्त उदासजनक देख पड़ा उस मे कितने एक गहिरे और गदले काले पानी के झील भी थे उन की चारो ओर मोटी जंगली घास और काला २ कीचड़ जम रहा था और मेडको का शब्द निपट भयानक और खेदजनक सुन पड़ा । इन बातों को देख और सुन संसारी को उचित था कि बड़ी सावधानी से चलता परन्तु उस का मन घबराने लगा और व्याकुलता के मारे वह भली भाति नही जानता था कि किधर जाता हूं क्या करता हू । उस को चाहिये था कि मन को प्रभु पर स्थिर करके और उस को पुकारके उससे सहायता चाहता तो वह अपने मार्ग पर सीधे चलते २ उस पार को कुशल से पहुंचता । इस के विरुद्ध उस ने क्या किया कि अपने मन मे यह सोच कि मै शीघ्रता करके इस बुरे स्थान से भाग निकलूंगा असावधान हो तनिक एक ओर को अपना पाव धर दिया और झटपट घुटने तक एक दलदल मे धंस गया । इतने में वह और भी व्याकुल हुआ और उस का जी बहुत दब गया और वह समझने लगा कि अब मैं नष्ट होता हू क्योकि उस स्थान का वायु भी उस प्रकार का था जिस्से मन शोकित और भयभीत हो जाता है ।

अब जान्ना चाहिये कि यह दलदल जिस में संसारी धंसा जाता था एक बड़ा दलदल है और उस का नाम निरास का दलदल और बहुतेरे जन जो ईश्वरीय क्रोधपुर से भाग निकलते है और अपनी सामर्थ्य पर आस्था रखते

हैं और ईश्वर की सामर्थ्य और अनुग्रह पर मन का पूरा बिश्वास नही धरते हैं तो पहिले इस दलदल मे फंस जाते हैं और इस रीति से अपनी निर्बलता और मूर्खता का ज्ञान पाते हैं। यों संसारी लोटपोट करते और उछलते हुए चाहता था कि अपनी सामर्थ्य से बल करके इस कीचड़ से बच निकलूंगा परन्तु और भी डूबने लगा। इतने में दूर से कितने लोगों का शब्द सुन्ने में आया जो संसारी का नाम बड़े हुल्लड़ के साथ पुकारते थे। थोड़ी देर पीछे संसारी ने देखा कि मेरे नातेदार और भाई-बन्धु मुझ को पकड़ लेने के लिये आये हैं और ऐसा ही था क्योंकि जब संसारी मंगलोपदेशक के कहने के अनुसार उस उजाले की ओर चलने लगा तब एक मनुष्य ने यह दशा देख नगर मे जा उस के समस्त परोसियों को यह समाचार दिया कि संसारी अपने पितरों का धर्म त्याग कर और अपनी जाति की पक्ति और भाईबंधु की संगति को छोड़ फिरिंगियों के धर्म मे मिलने को जाता है। यह बात सुन उस टोले के बहुतेरे मनुष्य और जितने दुराचार और दुष्ट लुच्चे थे सब के सब एकट्ठे हो आये कि संसारी को बरबस्ती करके फिरा लावे।

तब मैं स्वप्न मे यह दशा देख संसारी के लिये बड़ा चिन्तायमान होने लगा क्योंकि मै डरा क्या जाने वह निरास के मारे इस दलदल मे डूब मरे अथवा जो बच भी निकले क्या जाने इन लोगो की ओर नगर की दिशा को निकलेगा तब निःसन्देह ये लोग उस को घर की ओर खीच ले जायेगे। क्योंकि उन की बोलचाल से ज्ञान हुआ कि अत्यन्त क्रोधित हो रिसियाते हैं और उन का प्रधान वही ब्राह्मण देख पड़ा जिस के पास आरंभ मे संसारी शिक्षा के लिये गया था। वह बड़ी कठिन बात कहके

उन लोगो को उभारता था कि उस को पकड़ लो उस को पकड़ लो। उस के संग संसारी के घर के कितने लोग भी थे कोई तो धिक्कार करता कोई तो रोता कलपता कोई तो बिन्ती करता था कि हे संसारी लौट आओ नही तो हम सब के सब भ्रष्ट हो मरेंगे।

यह दशा देख और ऐसी बात सुन मैं बड़ा अचंभित हुआ क्योकि जब संसारी घर पर था और मुक्ति के लिये ऐसा चिन्तित था तब सुखविलासी को छोड़ किसी ने उस की तनिक भी सहायता न किई और अब भी ऐसा सूझ पड़ा कि उन में से कोई ध्यान नही करता है कि वह बात जिस पर संसारी चलना चाहता है अथवा जिस को खोज में जाता है सो सत्य है कि नही। उन के स्वरूप से निश्चय हुआ कि प्रमाण करके संसारी के मन को शांति देना नही चाहते है केवल इतना चाहते है कि जो हो हम उस को जाने न देंगे। और मै ने यह भी देखा कि वे अपने संग कितने छली और उपद्रवी लोगों को ले आये थे जो अपने हाथो मे मोटी २ डोरी और भारी बेड़िया लिये थे। ये डोरी और बेड़िया संसारपुर की रीते और व्यवहार है जिन से उस नगर का प्रधान अपने प्रजा लोगो को बांधे रखता है और वे ऐसे पोढ़े और दृढ़ हैं कि बिना परमेश्वर पर सच्चा बिश्वास लाये कोई उन को तोड़ नही सकता है। उन लोगो की इच्छा थी कि इन से संसारी को बांधके नगर की ओर खींच ले जायेंगे।

तब मै ने देखा कि जब ये समस्त लोग उस दलदल के पास पहुंचे तो उन डोरियो को संसारी की ओर फेंकने लगे परन्तु किसी को साहस न था कि उस के पकड़ लेने के लिये दलदल में घुस जाय केवल उस के तीर पर खड़ा हो उस को पुकारते और छेड़ते रहे। परन्तु संसारी यह

जान कि हम को पकड़ लेने के लिये आवेंगे बहुत डर गया और बड़े उद्योग से परमेश्वर को पुकारने और उससे प्रार्थना करने लगा कि हे प्रभु परमेश्वर मुझ निर्बल दरिद्री की सहायता कर नहीं तो मै नष्ट होता हूं। इतने मे मैं ने देखा कि दलदल के उस पार से मन्द २ वायु चलनें लगा और उस के चलने से वह कुहरा जो दलदल के ऊपर बैठ रहा था संसारी के सन्मुख से खुल गया और उस के और उन लोगो के बीच ठहर गया। और उस उजाले का प्रतिबिम्ब भी साम्हने मे अधिक स्पष्ट चमकने लगा और उस की ज्योति से संसारी ने देखा कि एक ओर थोड़ी दूर पर बड़े २ पत्थरों की एक श्रेणी है जो दलदल के बीच होके वारपार धरे हैं। यह देख संसारी ईश्वर को पुकार और बल कर उन के ऊपर खड़ा हो गया और यों दलदल के उस पार कुशल से पहुंचा।

अब जान्ना चाहिये कि ये बड़े पत्थर जो निरास के दलदल के वारपार धरे हैं सो परमेश्वर के वचन में लिखी हुई प्रतिज्ञायें है और ये सब के सब अत्यन्त स्थिर और अटल हैं और जो कोई यात्री उन पर पांव धरके चलता है तो दलदल के पार कुशल से पहुंचेगा। क्योंकि थे पत्थर मुक्ति के पर्वत मे से खोदे गये हैं और मुक्ति का पर्वत प्रभु ईसा मसीह है जैसा मगलसमाचार मे लिखा है कि प्रभु ईसा मसीह मे परमेश्वर की सारी प्रतिज्ञाये स्थिर और अटल और निश्चित है।

यों इस ओर को संसारी उस दलदल मे से बचके अपने मार्ग पर कुशल से चला जाता था और उस ओर को उस के नातेदार और परोसी उस के चलने के कारण अत्यन्त दुःखित और क्रोधित होके नगर को लौटे जाते थे। परन्तु उन की क्रूर और कठिन बाते संसारी के सुन्ने मे

न आई क्योंकि अपने सन्मुख वह पगदण्डी को देख जो उजाले की ओर को चली गई थी सामर्थ्य भर आगे बढ़ने का श्रम कर चलते २ ध्यान करने लगा कि क्या मैं जो ऐसा निर्बल अपवित्र अशुद्ध अयोग्य पापी हूं कभी उस बड़े मुक्तिदाता के पास पहुंच सकूंगा क्या वह मुझे इस बुरी दशा मे ग्रहण करेगा क्या मुझ को न चाहिये उस के दर्शन के लिये अपने को तनिक शुद्ध और पवित्र कर देना। अब तो कीचड़ और रोग और मल को छोड़ मेरे पास क्या वस्तु है जो उस की दृष्टि करने के योग्य हो।

तब ऐसा हुआ कि जब संसारी इस रीति से ध्यान करते २ उस उजाले की ओर चला जाता था तो देखो एक मनुष्य जिस का नाम लौकिकज्ञानी था दक्खिनी दिशा से होके ऐसा चला आता था कि उस का मार्ग ससारी के मार्ग से मिल गया।

जब समीप आया तो संसारी ने देखा कि सुशील दयावान् और मान्य देख पड़ता है और उस ने बड़े आदर के साथ ससारी से भेट करके उस्से कहा कि भला भाई ऐसी दुर्दशा मे और इतने भारी बोझ से लदे हुए तू किधर को जाता है।

संसारी ने पूरब की दिशा को अंगुली से दिखाके उत्तर दिया कि हे महाराज मै उस उजाले की ओर चला जाता हूं क्योंकि मै ने सुना है कि वहा राजमार्ग के सिरे पर एक फाटक मिलेगा जिस्से होके मै इस भारी बोझ से और इस दुर्दशा से छुटकारा पाऊंगा।

लौकिकज्ञानी ने कहा कि किस ने तुम को यह बात बतलाई है। तब ससारी ने उत्तर दिया कि एक मनुष्य ने जिस का नाम मगलोपदेशक था मुझ से यह कहा है।

तब लौकिकज्ञानी ने मुसकुराके कहा कि मै ने ऐसा

समझा क्योंकि मैं उस जन को भली भांति पहिचानता हूं। वह एक बड़ा छली और धोखा देनेवाला है और बहुत लोगों को भटका दिया है एक समय निकट था कि मै भी उस की चतुराई से भटक जाता परन्तु थोड़ी परीक्षा के पीछे उस का कपट खुल गया। क्या उस ने तुम को बतलाया कि उस मार्ग से होके तुम को कितना कष्ट और क्लेश उठाना होगा।

संसारी ने यह उत्तर दिया कि उस ने हम को कुछ ऐसी बात तो कही है परन्तु यह भी बतलाया कि जब कोई कठिनता आ जावे तो उस उजाले की ओर चलते रहो और इस पुस्तक को पढ़के इस्से परामर्श लो तो अन्त को भला होगा।

लौकिकज्ञानी ने यह उत्तर दिया कि झूठ कहा है क्योंकि मैं ने परख लिया है उस ने तुम को एक आधा भी नहीं कहा है। ऐसा देख पड़ता है कि निरास के दल-दल का कुछ कीचड़ तुम को लग गया है क्या उस कपटी ने तुम को आगे से इस बात का समाचार दिया। कभी नहीं दिया होगा अब मेरी बात सुनो कि उस मार्ग से होके तुम को कष्ट पीड़ा भूख प्यास नंगापन थकाहट निन्दा रोग भय अंधकार और सब कुछ एक बात मे कहना कि मृत्यु मिलेगी। जितने इस मार्ग पर चलते हैं सब के सब इस प्रकार का कष्ट उठाते हैं सो कौन बुद्धि-मान और ज्ञानी ऐसे मार्ग पर चलेगा।

तब संसारी ऐसी बात सुनके बड़ा व्याकुल हुआ और सोचने लगा कि क्या जाने मै ने छल खाया है। परन्तु जब अपने बोझ और अपने रोग का स्मरण किया तो उस मनुष्य से कहने लगा कि मै ये सब कष्ट उठाने पर प्रसन्न हू जिस्तें इस बोझ और इस रोग से सुख पाऊं।

लैाकिकज्ञानी ने यह उत्तर दिया कि मैं तुम को एक मार्ग बतलाऊंगा जिस्से होके तुम इन बिपत्तों से छुटकारा पा सकते हो श्रोर इतना निष्फल कष्ट उठाना भी न होगा। देखो उस श्रोर के। जहां से मै अभी आया हूं एक बस्ती है उस का नाम नीतिबिद्यापुर वहां एक भला मनुष्य मेरा परममित्र रहता है उस का नाम स्वपुण्य-बिश्वासी वह एक बड़ा शिष्टाचारी श्रोर ज्ञानी श्रोर नीतिबिद्या का प्रकाश करनेवाला है तुम उस के पास जाश्रो वह बड़े आनन्द से तुम्हारा उपकार करेगा। यह कहके लैाकिकज्ञानी चला गया।

तब मै ने देखा कि संसारी बड़े दुबधे में था कि अब मैं क्या करूं यह मनुष्य तो बहुत भला देख पड़ता है श्रोर कहता है कि मै ने उस मार्ग की दशा को देख लिया है उस का क्या अभिप्राय हो सकता है कि जो मुझ बेबस को छल देवे।

इतने मे संसारी का मुख उस उजाले की श्रोर से फिर गया था श्रोर उस ने अपनी पुस्तक को भी नही खोला। थोड़े विलंब के पीछे वह बोल उठा कि यदि किसी प्रकार से इतने कष्ट से बच सकता हूं श्रोर शीघ्रता करके अपने बोझ श्रोर रोग से छुटकारा पा सकता हूं तो देरी करने श्रोर निष्फल कष्ट उठाने में क्या लाभ होगा। जो हो सो हो मै उस स्वपुण्यबिश्वासी के पास जाऊंगा देखा चाहिये कि इस मनुष्य की बात ठीक है कि नही।

तब मै ने देखा कि संसारी उस पगदण्डी को छोड़के उस श्रोर को जिसे लैाकिकज्ञानी ने बतलाया था चलने लगा श्रोर चलते २ अपने मन को इस आसरा से आनन्दित किया कि अब शीघ्र मुझ को छुटकारा मिलेगा। अन्त को वह एक स्थान पर पहुंचा जिस मे भूमि अत्यन्त असम

थी और चारों ओर बहुत रोड़े बिखड़ रहे थे और संसारी ठोकर खाके गिरता पड़ता चला जाता था। फिर वह एक पर्वत की जड़ पर पहुंचा जो ऐसा सरल था कि संसारी के सिर पर गिरने का सिद्ध दिखलाई दिया उस के ऊपर काली २ घटा छाय रही थी और बादल का गरजना और बिजली का कड़कना अत्यन्त भयानक था। यह दशा देख संसारी कांपने और अपने मन मे ध्यान करने लगा कि मै कैसा निर्बुद्धि और पापी था जो उस उजाले की ओर से फिर गया। इतने मे एक बड़ा डरावना शब्द उस पर्वत के मध्य मे से निकलके उस के सुन्ने मे आया कि जो कोई व्यवस्था की समस्त बातों पर निर्दोषी और निष्कलंक होके नही चलता है सो शापित है। फिर और बादल की गरज हुई इस के पीछे और बाणी हुई जो दश बार सुन्ने मे आई और एक २ बाणी के पीछे बादल की गरज हुई।

१ बाणी मुझ को छोड़ और किसी को परमेश्वर न मान्ना।
२ कोई प्रतिमा बनाके उस की पूजा न करना।
३ ईश्वर का नाम अकारथ न लेना।
४ बिश्राम का दिन पवित्र करके मान्ना।
५ माता पिता का आदर करना।
६ हत्या न करना।
७ परस्त्रीगमन न करना।
८ चोरी न करना।
९ झूठ न बोलना।
१० लोभ न करना।

इस के पीछे बादल की गरज औ बिजली की कड़क बहुत हुई और फिर यह बाणी निकली कि कोई मनुष्य

व्यवस्था के कर्मों से परमेश्वर के आगे धर्मी ठहर नहीं सकता क्योंकि व्यवस्था से पाप का ज्ञान होता है ।

इतने मे संसारी की अचंभे की दशा हो गई थी एक एक वाणी और गरज के पीछे उस का जी और डूबता गया और उस का बोझ अधिक भारी होता गया । निदान वह भूमि पर गिर पड़ा और ऐसा समझा कि अब यह पर्वत मुझ पर गिरके पीस डालेगा निःसन्देह मै नष्ट हो चुका । इतने मे मंगलोपदेशक फिर उस के पास आके और उस का वस्त्र खींचके उस्से कहने लगा कि हे मित्र तू यहां क्या करता है और किस लिये उस मार्ग को जो मैं ने बतलाया छोड़ आया है ।

संसारी उस का शब्द चीन्हके बड़ा लज्जित हुआ और उस के मुख पर देखने का साहस न पाया परन्तु हाथ से आंख छिपाके और बहुत थरथराके कहने लगा कि हे महाराज मै क्या कहूं मे तो एक बड़ा मूर्ख हूं एक लल्लो-पत्तो करनेवाले के फुसलाने से मैं ने अपने को नष्ट किया है । आगे से तो मै ने ज्ञान पाया था कि अपनी करणी से कुछ अच्छा फल पा नहीं सकता हूं फिर भी कष्ट और क्लेश के डर से मै ने आप की शिक्षा को और प्रभु के अनुग्रह को और अपनी मुक्ति के आसरा को तुच्छ जाना अब मेरे लिये नि.सन्देह बड़ा ही कठिन दण्ड होगा । हाय कि मै फिर उस उजाले को देख सकता और उस मार्ग को पा सकता तो निश्चय है कि फिर इस रीति से कभी भटक न जाता ।

तब मंगलोपदेशक उस का पश्चात्ताप और शोक को देख उस को भरोसा देने लगा कि निःसन्देह तुम ने तो बहुत बुरा किया है और उस का कुछ फल भी पाया । फिर भी निराश मत होओ । क्योकि प्रभु का अनुग्रह

उन के लिये जो पाप से पछताते हैं अनन्त है अपने अपराध की क्षमा उसी से मागो मैं तुम को फिर उसी मार्ग का चिन्ह दिखलाऊंगा तब आगे को सावधानी से चलके किसी भटकानेवाले की बात मत सुनो।

तब मै ने देखा कि मंगलोपदेशक ने संसारी के मुख को उस सत्य मार्ग की ओर फिराया और उस के संग चलके उस को बतलाया कि वह पर्वत जो तुम ने देखा है सीना पर्वत कहलाता है उस पर से परमेश्वर ने मूसा के द्वारा अपनी दश आज्ञाओ की व्यवस्था दिई। अब तुम उस पर जो देखा सुना है सीधे मन से ध्यान करो तो उस्से भी कुछ फल पाओगे क्योंकि उस पुस्तक मे जो मै ने तुम को दिया है यह लिखा है कि व्यवस्था हम सभों की गुरु ठहरी कि हम को प्रभु मसीह लो पहुंचावे जिस्तें हम बिश्वास से न कि करणो से धर्मी ठहरे। अर्थात् कि व्यवस्था का शब्द सुन्ने मे हम को ज्ञान होता है कि हम सर्वत्र पापी हैं और अपनी करणो से मुक्ति पा नही सकते हैं और हमारे लिये एक ऐसा निर्दोषी और सामर्थी मुक्तिदाता जैसा प्रभु ईसा मसीह है अवश्य है जो हम को पवित्र परमेश्वर से मिलावे। यह कहके मगलोपदेशक चला गया।

इतने मे संसारी उस उजाले को जो कुछ बिलंब से छिप रहा था फिर देखने लगा और उस की ज्योति से वह पगदण्डी भी जिस्से भटक गया था थोड़ी दूर से उस की दृष्टि मे आई। देखते ही वह अत्यन्त आनन्दित हुआ और प्रभु का धन्य मानके उस की ओर चलने मे बड़ा परिश्रम किया। चलते २ उस पगदण्डी मे फिर जा मिला और थोड़े बिलंब के पीछे उस फाटक को भी देखा जिस का वृत्तान्त मगलोपदेशक ने कहा था। जब उस के

समीप आया तब उस के ऊपर ये अक्षर खोदे हुए देखे अर्थात् प्रभु कहता है कि मार्ग सत्यता और जीवन मैं हूं । इस बात को पढ़के संसारी अपने मन मे ध्यान करने लगा कि यह फाटक मेरे लिये क्योंकर खुल जायगा क्या कोई उस के खोलने को आवेगा कि नही परन्तु कोई नहीं आया ।

यह दशा देख संसारी बड़े दुबधे में पड़ गया कि जितने श्रम मै ने उठाये हैं क्या जाने सब के सब निष्फल ठहरेंगे मेरे लिये यह फाटक कौन खोलेगा । इतने मे उस पुस्तक का जिस को मंगलोपदेशक ने उस को दिया था चेत उस के मन मे आया और उस्से परामर्श लेने के लिये उस ने उस को खोल लिया । खोलते ही उस ने यह बात लिखी हुई देखी कि मांगो तुम को दिया जायगा ढूंढ़ो तुम पाओगे खटखटाओ तुम्हारे लिये खोला जायगा । इन बातो से साहस पाके संसारी खटखटाने लगा फिर डरके मारे भूमि पर गिरके गिड़गिड़ाने लगा कि हे प्रभु मुझ दरिद्री पापी पर दया कर । इस रीति से दो एक बार खटखटाने और प्रार्थना करने के पीछे फाटक खुल गया और ससारी बड़ी शीघ्रता करके उस के अन्दर घुस गया ।

इति मुमुक्षुवृत्तान्तवर्णने त्रयोदशोऽध्यायः ।

चौदहवां अध्याय ।

इस अध्याय में संसारी फाटक के भीतर घुस जाके कुछ देखता है ।

तब मैं ने स्वप्ने मे देखा कि जब संसारी उस फाटक के अन्दर घुस गया था तो झट मूर्छित होके भूमि पर गिर पड़ा क्योंकि वह अत्यन्त निर्बल हो गया था और

उस का बोझ निपट भारी था और चलने में उस ने कठिन श्रम किया था और निरास के दलदल में फंस जाने से और नातेदारो और परोसियो की बरबस्ती से और सीना पर्वत की भयानक दशा से और अपने मन की लज्जा और चिन्ता से और अन्त को इस डर से कि क्या जाने यह फाटक मेरे लिये नही खुलेगा इन सब कारणों से माना कि उस को एक प्रकार का भूमिकम्प लग गया था जिस्से उस का जी चकनाचूर हो गया था। फिर उस ने जब अपने को उस फाटक के अन्दर कुशल से पाया तो आनन्द के मारे वह सह न सका। परन्तु जब वहां का वायु जो अत्यन्त सुगन्ध और जीवनदायक था मन्द २ उस पर बहने लगा तो वह फिर जी मे आया और क्या देखता है कि एक मनुष्य उस के पास खड़ा हो उस का क्षेम कुशल पूछता है। उस के पहिनाव और स्वरूप से पहिले संसारी को समझ थी कि यह ब्राह्मण होगा परन्तु उस के माथे पर तिलक न था न कन्धे पर जनेऊ और उस के मुंह मे कुछ ऐसा चिन्ह देख पड़ा कि यह अपने को ईश्वर का रूप संसार का स्वामी ज्ञान का भंडार नही जानता है। इस के विरुद्ध बड़ी अधीनता और सीधाई और साधुता उस के शिष्टाचार मे ऐसी प्रसिद्ध थी कि ससारी ने अपने मन मे समझा यदि यह ब्राह्मण है तो एक नया प्रकार का ब्राह्मण होगा। इस मनुष्य ने बडे प्रेम और दया के साथ संसारी को भूमि पर से उठाने के लिये अपना हाथ बढ़ाके उस्से कहा कि हे भाई प्रभु ईसा मसीह का अनुग्रह तुम पर होवे मैं प्रभु का जो एक दास हूं उस को धन्य मानता हूं कि तुम कुशल से यहा पहुंचे हो। परन्तु तुम्हारी दशा बहुत दुःखी देख पड़ती है बड़ा कष्ट उठाके यहा आये होगे

दो एक बार खटखटाने और प्रार्थना करने के पीछे फाटक खुल गया और मसीही बड़ी शीघ्रता करके उस के अन्दर घुस गया । देखो १३८ पृष्ठ ।

अब तो आसरा है कि कुछ चैन मिलेगा तनिक यहां विश्राम करना चाहिये । जब तुम्हारा जी चाहे तब बतलाओ कि किस के कहने से और किस इच्छा से तुम यहां आये हो आगे की यात्रा मे हम किस प्रकार से तुम्हारी सहायता करें क्योंकि सामर्थ्य भर उपकार करने मे हम बड़े आनन्दित होंगे ।

ऐसी बातों के सुन्ने से और चारों ओर की दशा देखने से संसारी का मन अत्यन्त आश्चर्य्यित हुआ क्योंकि वह उजाला अब बड़ा तेजोमय हो गया था और आगे को एक सुन्दर राजमार्ग सीधा चला गया था जो कोसों तक दिखलाई दिया और फाटक के परोस में मार्ग की दोनों ओर कितने २ छोटे घर पंक्ति मे बने थे जो अत्यन्त सुथरे और मनभावने देख पड़े क्योंकि उन के आगे और पीछे छोटी वाटिका लगी थीं और कहीं मैल कुछ दृष्टि न आया । इस गाव के मध्य में एक सुन्दर घर अलग बना था जिस के ऊपर एक छोटे छप्पर के आड़ मे एक घंटा लटका हुआ था इधर उधर कूए भी थे और कितने मनुष्य आया जाया करते और आपस में प्रेम और मिलाप की बात कर रहे थे । छोटे लड़केबाले भी खेलते थे। और एक ओर से ऐसा शब्द सुन्ने में आया कि पाठशाला का काम कहीं चलता है । निदान एक ऐसा गांव दिखलाई दिया जिस के समस्त निवासी बड़े प्रेम और सच्चाई और सुशीलता के साथ चलते सफल और योग्य काम करने मे तत्पर रहते हैं ।

यह दशा देख बड़ा आश्चर्य मान संसारी बोल उठा कि यह कैसा देश है जिस मे मैं आया हूं एक नया प्रकार का जगत देख पड़ता है और यह क्या ही अचंभा उजाला प्रकाश हो रहा है इस की ज्योति में सारी वस्तु और

समस्त मनुष्य बहुत भले देख पड़ते हैं परन्तु मैं आप आगे से भी अधिक घिनैाना और पोच दृष्टि आता हूं। ऐसा सूझ पड़ता है कि इस स्थान में अयोग्य और अपवित्र वस्तु केवल मै ही हूं। तब उस मनुष्य की ओर फिरके और हाथ जोड़के कहने लगा कि हे नाथ मुझ अज्ञान को कृपा करके बतलाइये कि यह क्या दशा है क्या मैं स्वप्न को देखता हूं और आप का नाम क्या है क्या आप ब्राह्मण हैं अथवा किस जाति के और किस देश के मनुष्य हैं।

तब उस मनुष्य ने उत्तर देके कहा कि जन्म से तो मैं ब्राह्मण था परन्तु कुछ देर से उस अहकार को मैं ने त्याग किया है। अब मैं प्रभु ईसा मसीह का एक दास हूं और उस प्रभु मे न तो ब्राह्मण न शूद्र न देशी न अन्यदेशी है क्योंकि उस में होके हम सब के सब भाईबन्धु हैं। और मेरा नाम प्रभुदास है और ये सब मनुष्य जिन्हे तुम देखते हो हमारे मसीही भाई हैं और नगर के लोग हम को क्रिस्तान भी कहते हैं। परन्तु तुम्हारे स्वरूप से प्रगट होता है कि पहिले तुम को कुछ बिश्राम करना चाहिये हमारे संग चले आओ और हम तुम्हारे लिये एक घर ठहरावेंगे और जो अन्न मसाला प्रभृति भोजन करने के लिये और जितनी बिश्राम की सामग्री अवश्य है तुम्हारे पास पहुंचावेंगे। अपने घर मे तो तुम को नहीं बुलाते हैं क्योंकि क्या जाने यह तुम को प्रसन्न नही होगा अपनी अगिली दशा से मैं जानता हूं कि विशेष वर्णा की चिन्ता हिन्दुओं के मन में अत्यन्त उपद्रवी होती हैं से तुम अलग रहो और जब भली भांति बिश्राम कर चुकोगे तो हम तुम दोनो परस्पर सत्सग करेंगे।

यह कहके प्रभुदास संसारी को अपने संग ले चला

और अपने घर के निकट उस के लिये एक घर ठहराया फिर अपने मसीही भाइयों के पास जाके उस के लिये जितना मसाला इत्यादि प्रयोजन था मंगाके उस के पास पहुंचाया और मैं ने देखा कि संसारी भोजन करके कुछ बेर लों विश्राम करता रहा ।

इस के पीछे जब यह भली भांति विश्राम कर चुका था तो प्रभुदास के घर पर आके उस को प्रणाम करके कहा कि आप की कृपा से मैं ने अच्छी रीति चैन किया है और अब आप के संग बातचीत करने मे अभिलाषी हूं । उस समय तो प्रभुदास कुछ लिखने के काम पर प्रवृत्त हुआ था परन्तु जब संसारी को देखा तब उस काम को छोड़के और संसारी को अपने घर की डेवढ़ी मे अपने पास बिठलाके उस के संग संवाद करने को बैठ गया।

पहिले संसारी ने उस्से पूछा । आप ने कहा था कि जन्म से हम ब्राह्मण हैं परन्तु आप की बातों से ज्ञान होता है कि अब मसीही अर्थात् क्रिस्तान हो गये हैं सो उस के विषय मे मैं आप से पूछता हूं कि यह किस रीति से हुआ और क्रिस्तान लोग कैसे हैं और प्रभु ईसा मसीह पर विश्वास लाने से और उस के शिष्य होने से क्या फल मिला है । क्या किसी समय तुम्हारी ऐसी दशा थी जैसी अब मेरी है और उस प्रभु के पुण्य प्रताप से तुम ने ऐसे बोझ और ऐसे रोग से छुटकारा पाया । क्योंकि मेरे मन में यही चिन्ता है और इसी कारण से मैं इस प्रभु की खोज में आया हूं सो यदि मुझ बेबस के लिये किसी प्रकार का सत्य आसरा है तो कृपा करके इस का वर्णन कीजिये ।

प्रभुदास ने यह उत्तर दिया कि बड़े आनन्द से मैं इस का वर्णन करूंगा । जैसा मै ने कहा था सो पूर्वकाल मे मैं

ब्राह्मण था और और ब्राह्मणों की रीति अपनी जाति पर बड़ा अभिमान करता था इस्से अधिक हिन्दूशास्त्रों पर दृढ बिश्वास लाता था कि ये सब के सब ईश्वर के बचन और देववाणी हैं। इसी आसरा से मैं काशी जी का निवासी हो सब से बड़े पण्डितों के पास शिक्षा पाने को गया और जितने वेद पुराण और शास्त्र खोज करने से मिल सकते थे भली भांति ध्यान करके मैं ने पढ़ लिये। इस दशा में तनिक भी सन्देह मेरे मन में न आया कि यह परमज्ञान और सत्य विद्या नहीं है क्योंकि अपने भाइयों में रहता था और उन मे से कोई धर्म की बात नहीं पूछता था कि इस का क्या प्रमाण है। जब कभी कोई बात असंभव अथवा कठिन देख पड़ी तो मैं ने समझा कि धर्म के विषय में बुद्धि का प्रमाण नहीं चलता है जो शास्त्र में लिखा है सो ठीक और यथार्थ है।

इस के पीछे सरकार कम्पनी की बड़ी पाठशाला में फिरंगियों की विद्या सीखने को मैं गया और उस विद्या से कितनी नई २ बातें मुझ पर प्रगट हुईं जो आगे मेरे सुने में भी न आई थीं। विशेष करके मैं ने यह देखा कि जितनी बातें उस बिद्या की हैं सब की सब परीक्षा की रीति से जानी जाती हैं अटकल और अनुमान की बात कुछ अधिकार नहीं रखती है इस हेतु से यह बिद्या अत्यन्त पक्की और प्रामाणिक है। तब मैं ने देखा कि इस विद्या की कितनी बातें हमारे शास्त्रों की विद्या से नहीं मिलती हैं विशेष करके ज्योतिषविद्या भूगोलविद्या और रसायनविद्या कि उन में ऐसी २ बातें हैं जिन से हमारे शास्त्रों की विद्या सर्बत्र खण्डन होती है।

तब बड़ा सन्देह मेरे मन मे आया कि इन मे कौन बात सत्य है कौन बात असत्य है परन्तु फिरंगियों की

विद्या ऐसी प्रामाणिक और स्थिर है कि उस मे भूलचूक का पता भी नहीं मिलता है। मै ने उस को बड़े यत्न से परख लिया और अपनी इन्द्रियों की साक्षी से मै जानता हूं कि सच है इस दशा मे मैं पूछने लगा कि हमारे शास्त्रों का कैसा प्रमाण है और जब उन की विद्या के विषय मे उस प्रश्न का यथार्थ उत्तर पा नही सका तो अपने मन में ठाना कि शास्त्र तो विद्या के लिये नहीं है धर्म के लिये है उन की बिद्या छोड़ दूंगा परन्तु उन के धर्म पर स्थिर रहूगा।

इस के पीछे मै धर्म की बातों पर ध्यान करने लगा क्योंकि मैं इससे लज्जित था कि मेरा धर्म ऐसा हो जिस पर ध्यान करना अथवा बुद्धि का प्रमाण लाना अनुचित है। मैं ने समझा कि धर्म सब से उत्तम विद्या है इस लिये ऐसा पदार्थ होना चाहिये जिस से मनुष्य का आत्मा और अन्तःकरण सुधर जावे परन्तु जब कि उस में बुद्धि का काम नही चलता यह किस रीति से हो सकता है फिर मैं ने सोचा कि परमेश्वर की सारी सृष्टि मे अनन्त बुद्धि देख पड़ती है तो निःसन्देह उस के धर्म मे भी जो सब से उत्तम बस्तु है बुद्धि के चिन्ह प्रत्यक्ष होगे।

यों ध्यान करते २ मुझ को एक बात का चेत आया जो आगे मै जानता तो था परन्तु उस पर भलो भांति ध्यान नही किया था अर्थात् कि वेद का धर्म और महाभारत और रामायण का धर्म और पुराणो का धर्म आपस मे भिन्न हैं और अठारह पुराणो के धर्म आपस मे भिन्न और बिरुद्ध है। इस बात पर ध्यान करने से जो चिन्ता मेरे मन मे आई इस का पूरा वृत्तान्त मै अब नही कह सकता हूं। परन्तु इस का अन्त यह था कि मै ने पुराणो के मत और देवताओ की पूजा को असत्य और

निष्प्रमाण देखके त्याग किया और वेदों के धर्म पर चलने लगा अर्थात् वेदान्ती होके मैं ने यह ठहराया कि साधारण लोगों के लिये मूर्त्तिपूजा और पुराणों के मत भले हैं और ज्ञानी को भी चाहिये कि बाहिरी चाल से उन पर चले परन्तु अपने मन में परब्रह्म के भजन को छोड़ और कोई बात माननी प्रयोजन नहीं है। उस समय मैं ने अच्छी रीति से नहीं समझा कि ऐसी चाल में बड़ा कपट और मिथ्यता है।

इतने मे किसी ने मुझ को एक संस्कृत पुस्तक दिई जिस का नाम मतपरीक्षा था उस पुस्तक मे एक फिरंगी ने हिन्दू मत की परीक्षा उस रीति से करी है जिस रीति से कि उन की विद्या की परीक्षा होती है और उस के संग मसीही धर्म का कुछ वर्णन था। परन्तु मै उन बातों से जो हिन्दू मत की परीक्षा में लिखी थीं ऐसा खेदित था कि उस समय मसीही धर्म का वर्णन छोड़ दिया। मै ने देखा कि इस रीति से हिन्दू धर्म जड़ ही से सर्वत्र कट जाता है और इस बात से मै ऐसा अप्रसन्न था कि उस पुस्तक का उत्तर लिखने की इच्छा मेरे मन मे आई मेरे मित्रों ने भी मुझ को बहुत उसकाया कि आप तो बड़े ज्ञानी है सब शास्त्रों को पढ़ लिया है यदि आप इस पुस्तक को खण्डन न करे तो कौन करेगा। इस पर मै ने उस का उत्तर लिखने मे बड़ा यत्न किया परन्तु लिखते २ मुझ को ज्ञान हो गया कि इस के प्रमाण सत्य और यथार्थ हैं निष्कपट और निष्पक्ष होके मै इस का उत्तर लिख नहीं सकता हूं।

तब पहिले बार मुझ को स्पष्ट ज्ञान हुआ कि मेरे बाप दादों का धर्म सर्वत्र मनमता है उस मे कितनी बातें सच होवे तो होवे परन्तु धर्म के लिये वह असत्य और

निरप्रमाण हैं। तब मेरे मन मे बड़ी चिन्ता और भय आ गया कि मेरी मुक्ति किस प्रकार से होगी मसीही धर्म को तो पक्ष के मारे मैं नही चाहता था। परन्तु जब कुछ बेर लों बिना धर्म और आसरा रहित रहा था तब मैं ने समझा क्या जाने यह धर्म सच होवे सो इस को भी मैं जांचने लगा और बड़ी परीक्षा और चिन्ता और परिश्रम के पीछे मुझे निश्चय हुआ कि यही परमेश्वर का सत्य धर्म है तब मै मसीही लोगो मे जा मिला।

तब मै ने देखा कि जब लों प्रभुदास इस रीति से अपना वृत्तान्त कह रहा था तब लों संसारी बड़ी अभिलाषा से सुनता रहा। पीछे इस के वह कहने लगा कि हे कृपानिधान अपने क्रिस्तान हो जाने का वृत्तान्त जो आप ने कहा है सो निःसन्देह अति मनोहर है परन्तु मेरी दशा आप की अगिली दशा से कितनी बातो में भिन्न है। ऐसा सूझ पड़ता है कि आप का मन बुद्धि की शिक्षा से मसीही धर्म की ओर फिर गया है और प्रमाण की परीक्षा से आप को निश्चय हुआ कि यह धर्म सत्य है और हिन्दू धर्म मिथ्या है। परन्तु मै ने अपने बापदादों का धर्म इस रीति से वृथा पाया है कि उस मे पापमोक्षण और मन की शुद्धता का कोई ऐसा ठीक और यथार्थ उपाय नही मिला जिस्से मेरी चिन्ता मिट जाय।

तब मै ने सुना कि ससारी ने प्रभुदास को अपनी पहिली दशा का सब वृत्तान्त कह सुनाया। इस के उपरान्त उस ने यह कहा कि आप तो बड़े ज्ञानी और विद्यावान हैं और इस भारी प्रकरण मे प्रमाण लाने की सामर्थ्य रखते हैं और आप के वृत्तान्त से मेरा भी बिश्वास और आसरा कि इस बड़े प्रभु के पुण्य प्रताप से मेरा निस्तार हो सकता है अधिक दृढ़ हो गया है। परन्तु मैं

बड़ा अज्ञानी और अविद्वान् हूं मैं इस प्रभु की खोज में इस लिये आया हूं कि मेरे अन्तःकरण और आत्मा के प्रयोजन और मेरे मन की चिन्ता ऐसी है कि जब लों एक सामर्थी दयावान् मुक्तिदाता न पाऊं तब लो मैं चैन नहीं पा सकता हूं। मेरा बोझ ऐसा भारी है और मेरा कोढ़ ऐसा कठिन है कि बिना औषध पाये मैं नष्ट हो जाता हूं। क्या अपनी अगली दशा मे आप को इस प्रकार की चिन्ता थी अथवा ऐसा बोझ और रोग आप को लगा था क्या आप ने प्रभु ईसा मसीह पर बिश्वास लाने से छुटकारा पाया है क्योंकि यही तो बात है।

प्रभुदास ने यह उत्तर दिया कि आरम्भ में जब मैं पहिले मसीही धर्म को जाचने लगा तो इस प्रकार की चिन्ता मेरे मन मे नही थी और अपने पाप के बोझ से और अपने कोढ़ के रोग से मैं भली भांति सज्ञान नही था बिद्यार्थी की रीति और सत्यता के खोजने के लिये मैं ने इस काम मे हाथ लगाया। अपने को तो साधारण लोगो के समान पापी जानता था परन्तु उसी धर्म की शिक्षा पर ध्यान करने से और पवित्रात्मा के अनुग्रह से मै अच्छी रीति समझने लगा कि पापी होना कैसा है और मैं कैसा पापी हू विशेष करके जब मै ने प्रभु के जीवन और मृत्यु और जी उठने के वृत्तान्त पर मन से ध्यान किया तब मुझ पर विदित होने लगा कि पाप कैसा बुरा है और मेरे समस्त स्वभाव मे उस का कैसा प्रवेश हुआ परन्तु प्रभु के अनुग्रह से उसी समय मै ने उस पर बिश्वास लाने की सामर्थ्य भी पाई और यो उस पर विश्वास की दृष्टि लगाने से मेरे पाप का बोझ तुरन्त खुल गया और मेरा रोग पावन होने लगा। इस हेतु से मै ने इतना शोक कष्ट और चिन्ता नही उठाई जैसी

तुम ने सही है और मै डरता हूं कि क्या जाने इस कारण से पाप की बुराई और कड़वाहट ऐसी भली भाति नहीं जानता हूं जैसा तुम जानते हो । परन्तु मेरा आसरा है कि होते २ पवित्रात्मा की शिक्षा से यह बात भी समझूंगा और अन्त को इस बुरे रोग से सर्वत्र पवित्र हो जाऊंगा ।

जब संसारी ने प्रभुदास की बातों से ज्ञान पाया कि एक समय इस को भी पाप का बोझ लगा था परन्तु प्रभु पर विश्वास की दृष्टि लगाने से वह आप से आप खुल गया तो अत्यन्त हर्षित हो बड़े ज्वलन से पूछने लगा । क्या मै भी जब उस पर विश्वास की दृष्टि लगाऊं तो अपने बोझ से छुटकारा पाऊं हाय कि मै जानता उस को कहा देख सकता तो झट उस के चरणों पर गिरता और अपने सारे मन और अन्तःकरण से उस को ताकता रहता ।

प्रभुदास ने यह उत्तर दिया कि तुम इसी राजमार्ग पर जो हमारे सन्मुख बना है प्रभु की आज्ञा के अनुसार चलते रहो तो यथार्थ समय पर जब उस की इच्छा हो अवश्य तुम को दर्शन देगा और मेरे समान तुम्हारे पाप का बोझ आप से आप खुल जायगा और तुम्हारा रोग पवित्र होने लगेगा ।

तब संसारी ने पूछा क्या इन सभों ने भी जो तुम्हारे भाई हैं और इस गाव में रहते हैं प्रभु से वही छुटकारा पाया है और उन की भली दशा जो देख पड़ती है क्या उसी प्रभु के अनुग्रह से हुई ।

प्रभुदास ने यह उत्तर दिया कि हां उन की दशा में जितनी भली बाते हैं सब की सब उसी प्रभु के अनुग्रह से हैं परन्तु एक एक की ठीक दशा मैं नहीं जानता हूं

इतना मैं जानता हूं कि जितनों ने सीधे मन से प्रभु पर विश्वास की दृष्टि लगाई उन के पाप का बोझ खुल गया है परन्तु किस का मन सीधा है अन्तर्यामी परमेश्वर जानता है। कितने मनुष्य हम लोगो में मिलने को आते हैं जिन के मन सीधे नही हैं और उन के कारण नगर निवासियो में हमारे प्रभु और हमारे धर्म का बड़ा अपमान होता है। फिर हम सभों में वह बुरा रोग यद्यपि पवित्र होता जाता है तथापि अब लों सर्वथा चंगा नहीं हुआ उस की औषध तो हमारे पास रहती है और जब हम उस को विश्वास से लगाते तो उस का लाभ भोग करते। परन्तु जब निश्चिन्त हो जाते तो फिर यह रोग बढ़ जाता है और कभी २ हम सभो को बड़ा दुःख देता है यद्यपि हम को प्रभु के वचन से निश्चय है कि अन्त मे सर्वथा मिट जायगा फिर भी जीवन भर यही औषध लगाते रहना होगा।

संसारी ने कहा कि इन सारे मनुष्यों में इस रोग के चिन्ह बहुत कम दिखलाई देते हैं पहिले हम ने समझा कि ये सब के सब पवित्र भले चंगे हैं।

प्रभुदास ने यह उत्तर दिया कि अब तो तुम पहिली दृष्टि से और तनिक दूर से भी देखते हो जब तुम और समीप आओ और कितने दिन हमारे बीच में रहो तब उस के चिन्ह अधिक दिखलाई देंगे क्योंकि इस जीवन मे यद्यपि कितने मनुष्य आगे से बहुत पवित्र हो जाते है तथापि किसी को पूरी चंगाई प्राप्त नही होती है।

तब संसारी ने यह पूछा कि इस गांव का क्या नाम है और उस बड़े घर का जो बीच मे बना है क्या काम है।

प्रभुदास ने कहा कि गांव का नाम मंगलपुर है और वह बड़ा घर परमेश्वर का भजनघर है जिस में हम

लोग बिश्राम के दिन अर्थात् रविवार के। एकट्ठे हो प्रभु का भजन और स्तुति करते है और उस के बचन से उपदेश पाते है। कल ते। बिश्राम का दिन होगा से। तुम आज रात उस घर में जो मैं ने बतलाया नीद करो और कल हमारे संग गिरजे में आओ। इस के पीछे हम फिर सत्संग करेंगे। इस पर संसारी अपने डेरे के। गया।

इति मुमुक्षुवृत्तान्तबर्णने चतुर्दशोऽध्यायः।

पंदरहवां अध्याय।

इस अध्याय में संसारी मंगलपुर के गिरजे में जाता है और उस के पीछे प्रभुदास के संग बातचीत करके अंत के। अपनी यात्रा के। चलता है।

तब मैं ने देखा कि दूसरे दिन जो रविवार था जब दिन भली भांति खुल गया था ते। वह घंटा जो भजन-घर के ऊपर लटक रहा था बजने लगा। इस पर जितने लोग उस गांव में रहते थे पुरुष और स्त्री और लड़के-बाले भी सुथरे बस्त्र पहिने हाथों में पुस्तक लिये हुए अपने २ घरों के। छोड़ उस भजनघर की ओर चलने लगे। और प्रभुदास ने ससारी के। बुलाके कहा कि आओ भाई अब परमेश्वर का भजन होगा हम एक संग होके गिरजे में जावें तब संसारी उस के सग हो लिया।

जब वे उस घर में पहुंचे ते। प्रभुदास संसारी के लिये एक बैठक दिखाके आप एक मंच पर जो तनिक ऊंचे पर लगा था और तीनों ओर कठहरे से घिरा था चढ़ गया। और संसारी ने देखा कि सब लोग चुपचाप हो पंक्ति में ऐसे बैठे हैं कि सब के सब प्रभुदास के। देख और उस का शब्द सुन सकते हैं। इस के पीछे प्रभुदास ने खड़ा हो

और यह कह कि हम परमेश्वर की स्तुति का गीत गावें एक गीत पढ़के सुनाया अर्थात्

१ आवे प्रभु तेरा राज
आवे सत और धर्म का राज
होवे तेरे आधीन सब
देश के देश फिर आवें अब
आवे प्रभु तेरा राज
आवे सत और धर्म का राज।

२ देख कि सब ही भटके हैं
धर्म से सुख से परे हैं
नहीं जानते वे मुक्ति को
दौड़े जाते मृत्यु को
आवे प्रभु तेरा राज
आवे सत और धर्म का राज।

३ प्रभु बचन तेरा है
सब को आसरा लेना है
खींच तू सब के मन को अब
तुझ मे लौलीन होवें सब
आवे प्रभु तेरा राज
आवे सत और धर्म का राज।

४ सब जाति ईश्वर प्राप्त हो अब
समीप होवें सब के सब
सब के पाप का मोक्षण हो
हृदय शुद्ध और मुक्ति हो
आवे प्रभु तेरा राज
होवे सिद्ध सब जग का काज।

तब जितने लोग उस भजनघर मे थे अपनी २ पुस्तक

मे यह गीत पाके खड़े हो स्वर मिलाय मिलायके एक शब्द हो गाने लगे। इस के पीछे प्रभुदास ने कहा कि हम अपनी शिक्षा के लिये परमेश्वर का वचन पढ़े तब उस ने मंगलसमाचार की पुस्तक को खोलके उस मे से एक अध्याय सुनाया जिस मे प्रभु ईसा मसीह का मृतको मे से जी उठने का वर्णन था और जब लो वह पढ़ता रहा तब लो और लोग अपनी पुस्तको को उसी स्थल पर देखते रहे। जब यह हो चुका प्रभुदास ने कहा कि हम प्रार्थना करेगे इस पर सब लोगो ने चुपचाप हो घुटने टेके और प्रभुदास ने पिता पुत्र और पवित्रात्मा का नाम लेके सभों के लिये परमेश्वर की स्तुति और धन्यबादी और बिन्ती का भजन किया इस के पीछे उन्हो ने एक और गीत गाया।

तब प्रभुदास ने अकेला खड़ा हो मंगलसमाचार का एक पद जिस में यह लिखा था सुनाया अर्थात् तब पतरस और प्रेरितो ने उत्तर देके कहा हमें उचित है कि परमेश्वर को मनुष्यो से अधिक माने हमारे पितरों के परमेश्वर ने ईसा को उठाया जिसे तुम सभों ने लकड़े पर लटकाके मार डाला है उस को परमेश्वर ने अगुवा मुक्तिदाता ठहरायके अपना दहिना हाथ बढ़ाया जिस्ते इसराएल से पश्चात्ताप कराके उन के पापों की क्षमा करे और इन बातों के हम साक्षी हैं और पवित्रात्मा भी जिसे परमेश्वर ने उन्हे दिया है जो उसे मानते हैं इति। ये बातें मंगलसमाचार के उस भाग मे लिखी हैं जो प्रेरितों की क्रिया कहलाती है पांचवा अध्याय उन्तीसवां पद। तब प्रभुदास यह कहके कि भाइयो हम इन बातों पर तनिक ध्यान करे उन का अर्थ खोलके यों बतलाने लगा।

१ पतरस और प्रेरित वे लोग थे जो मसीह के संगी और शिष्य थे और जिन को मसीह ने ठहराया था कि मेरे अन्तर्ध्यान होने के पीछे तुम सत्यधर्म के प्रचारक होओ और मेरे मरने और जी उठने के साक्षी समस्त लोगों को मुक्ति के लिये दो। जब वे यह काम करते थे तो उस देश के प्रधानों ने उन को पकड़ लिया और आज्ञा दिई कि यह काम मत करो और जब उन्हों ने न माना तो उन को बन्दीगृह मे डाला परन्तु परमेश्वर के एक दूत ने रात्रि के समय उन को छुटाके कहा कि समस्त लोगों को वही समाचार सुनाओ। तब प्रधानों ने फिर उन को बर्जित किया परन्तु उन्हों ने उत्तर देके कहा हम को उचित है कि परमेश्वर को मनुष्य से अधिक माने और तुरन्त वही समाचार प्रधानों को भी सुनाने लगे।

२ समाचार का तात्पर्य्य यह था कि तुम प्रधानों ने मसीह को लकड़े पर लटकायके मार डाला परन्तु परमेश्वर ने तीसरे दिन उस को मृतकों से जिलाके उठाया और स्वर्ग पर भी चढ़ाया है जिसते वही प्रभु तुम लोगों से और सारे मनुष्यों से पश्चात्ताप कराके तुम्हारे पापों की क्षमा करे। और हम लोगों ने इन आश्चर्यों को अपनी आंखों से देखा और हम को निश्चय है कि यह बात सत्य है नहीं तो हम किस इच्छा से इस का समाचार सुनावे सो तुम भी पश्चात्ताप करो और बिश्वास लाके मुक्ति पाओ।

३ प्रेरितों की ऐसी चाल में बड़ी बीरता और सीधाई देख पड़ती है क्योंकि सत्य बात कहने में और परमेश्वर की आज्ञा मान्ने मे प्रधानों से भी नहीं डरते थे। फिर यह भी प्रगट होता है कि प्रधान लोग और उस नगर के और निवासी भी जानते थे कि यह बात सत्य है

क्योंकि उन्हीं दिनों में और उसी नगर में मसीह मारा गया था और समाधि मे रक्खा गया था और इस समाचार का कोई झुठलानेवाला न मिला। इस के विरुद्ध एक दिन मे तीन सहस्त्र मनुष्य शिष्य हो गये और दिन प्रतिदिन यह बात फैलती गई।

४ यह समाचार बहुत भारी है क्योंकि प्राचीन भविष्यद्वक्ताओं ने आगे से कहा था कि ऐसा होगा और प्रभु ने कई एक बार कहा कि मैं मारा जाऊंगा संसार के पाप के प्रायश्चित्त के लिये और तीसरे दिन जी उठूंगा विश्वासियों की मुक्ति के लिये और इस के पीछे उस के आचार्य्य सदा सर्वदा इसी बात का समाचार और साक्षी देते रहे कि परमेश्वर का सत्य धर्म और मुक्ति की मूल बात समस्त जातिगणों के लिये यही है।

५ जिस रीति मसीह मृतकों से जी उठा उसी रीति उस की आज्ञा से सारे मनुष्य अन्त को जी उठेंगे और संसार के अन्त को मसीह न्याय करने के लिये फिर आवेगा तब उस के विश्वासी उस के हाथ से मुक्ति पावेंगे।

६ इस समाचार का एक आत्मिक अर्थ भी है कि मसीह के शिष्यों को उचित है उस पर विश्वास लाके और उस मे संयुक्त होके उस के समान पाप के विषय मे मर जाना और धर्म्म और शुद्धता के लिये जी उठना।

निदान प्रभुदास ने अपने भाइयों को स्मरण दिलाया कि एक एक रविवार को इस भारी समाचार मे ध्यान करना मसीहियो को चाहिये क्योंकि उसी दिन मसीह जी उठा। तब उन को बड़े उद्योग से उसकाके कि ऐसे महानुभाव दयावान् प्रभु की योग्य चाल चले और उस के नाम से आशीर्वाद देके उन को जाने दिया तब वे अपने अपने घर को चले।

तब मैं ने देखा कि संसारी प्रभुदास के घर पर जाके आगे की रीति उस्से बातचीत करने लगा और पहिले उस ने उस्से कहा। आप की इच्छा हो तो हम आप को गुरु कहेंगे क्योंकि मेरा अन्तःकरण आप की ओर लग गया है और उस भजन और उस उपदेश मे मुझ को कितनी बातों का ज्ञान हो गया है। क्या भजन करने की यही रीति समस्त क्रिस्तानों में प्रचलित है क्योंकि मैं ने सुना था कि क्रिस्तान लोग पूजा पाठ और किसी प्रकार का भजन नहीं करते हैं परन्तु अब उन का भजन उस प्रकार का सूझ पड़ता है जिस्से बुद्धि का ज्ञान और अन्तःकरण की शुद्धता दोनों बढ़ जायें।

प्रभुदास ने उत्तर दिया कि दो एक छोटी छोटी बातों में मसीहियों की भजन करने की रीति भिन्न भिन्न है कितने तो प्रार्थना करके पुस्तक का लिखा हुआ भजन पढ़ते हैं कितने अपने अन्तःकरण की शिक्षा से प्रार्थना करते हैं। परन्तु एक बात जान्ना बहुत अवश्य है कि कितने मनुष्य मसीही का नाम रखते हैं जो प्रभु के सच्चे शिष्य नहीं हैं केवल अधर्म्मी और संसारी हैं। फिर और भी उस पादरी के समान हैं जो साधारण लोगों को परमेश्वर का बचन पढ़ने नहीं देते हैं और प्रभु के धर्म्म मे बहुत सी मनमता मिलाते हैं। फिर और भी हैं जो अज्ञान और अशुद्ध हैं जिन की चाल से सत धर्म्म का अपमान होता है बरन कोई भी ऐसा नही है जो सर्वत्र निर्दोषी ठहरेगा। इस कारण जैसा मुक्ति के लिये मनुष्य पर बिश्वास लाना बुरा है तैसा सत धर्म्म का अभिप्राय जान्ने के लिये केवल किसी मनुष्य की चाल पर दृष्टि करना बुरा है। प्रभु ईसा मसीह का धर्म्म वह है जो मंगलसमाचार की पुस्तक मे लिखा है और जितने उस पुस्तक को सीधे मन से पढ़ते

हैं और उस की शिक्षा पर चलते हैं यद्यपि उन में छोटी छोटी बातों की भिन्न भिन्न समझ हो तथापि ऐसे मनुष्य सच्चे मसीही हैं क्योंकि लिखा है परमेश्वर का राज्य खाने अथवा पीने में नहीं है परन्तु पवित्रात्मा में धर्म्म और मेल और आनन्द है ।

संसारी ने कहा कि हे गुरु वह बात ठीक है कि धर्म्म के विषय में मनुष्य का पराक्रम चल नहीं सक्ता है क्योंकि हम को उचित है कि परमेश्वर को मनुष्य से अधिक मानें जैसा आप ने उपदेश किया है और इस दशा में निःसन्देह कितनी बातों की भिन्न भिन्न समझ कितने लोगों में होगी । परन्तु कितनी ऐसी बातें भी होंगी जिन की एक ही समझ समस्त सच्चे मसीही रखते हैं सो हम आप से पूछते हैं कि यह कौन सी बातें हैं जिन को साधारण मसीही मानते कि प्रभु की आज्ञा है ।

प्रभुदास ने उत्तर दिया कि तुम मंगलसमाचार को सीधे मन और बड़े ध्यान से पढ़ो तो तुम यह देखोगे कि प्रभु की विशेष आज्ञा यह है अर्थात् मुझ पर विश्वास लाओ इस में जितनी और बातें अवश्य हैं सब की सब समाप्त हैं । परन्तु यह ऐसा विश्वास नहीं है जैसा हिन्दू लोग विश्वास कहते हैं वे तो जब कहते हैं कि विश्वास से सब कुछ हो सक्ता है तो एक रीति से ठीक कहते हैं परन्तु वे एक रीति से बड़ी भूल भी करते हैं क्योंकि विश्वास के अर्थ ठीक नहीं जानते हैं । उन की समझ में विश्वास का अर्थ ऐसा है जैसा मन की भावना और यथार्थ दशा से मिलना विश्वास के लिये प्रयोजन नहीं । इस दशा में एक एक की मन की भावना और विश्वास उसी के स्वभाव और इच्छा के समान होगा और यथार्थ दशा से क्योंकर मिल सक्ता है । परन्तु वह विश्वास जो यथार्थ दशा से

नहीं मिलता है निष्प्रमाण और असत्य वृथा है और ऐसे बिश्वास की आज्ञा प्रभु नहीं देता है। पहिले प्रभु अपने बचन में बतलाता है कि मैं ने तुम्हारी मुक्ति के लिये ऐसे ऐसे कर्म किये हैं और ऐसे ऐसे कर्म अभी करता हूं और अन्त को ऐसा ऐसा करूंगा और मेरे गुण ऐसे हैं और मेरी शिक्षा ऐसी। फिर हमारी बुद्धि और हमारे मन से बिश्वास जन्माने के लिये इन सब बातों के प्रमाण भी बतलाता है और तब कहता है कि जैसे मैं अपने गुणों को और अपने कार्य्यों को और अपने को बतलाता हूं इस के अनुसार तुम मुझ पर बिश्वास लाओ तब मैं तुम्हारा निस्तार करूंगा। फिर जो अपने मन में प्रभु पर ऐसा बिश्वास लाता है तो अवश्य उस के मन में प्रभु का प्रेम उपजेगा क्योंकि उसी प्रभु के अनन्त दुःख और क्लेशों से उस की मुक्ति होती है और उस की मुक्ति के लिये प्रभु ने उस कष्ट को बड़ी प्रसन्नता से उठाया और यों अपनी अनन्त दया और प्रेम प्रगट किया। फिर जब प्रभु को प्यार करता है तो उस को प्रसन्न करने चाहता है और यों उस का आज्ञापालक हो जाता है जैसा प्रभु आप सर्वथा शुद्ध और पवित्र है तैसा उस का बिश्वासी भी शुद्ध और पवित्र होने का निपट अभिलाषी होगा। इस से अधिक वह जानता है कि जितना कष्ट और दुःख प्रभु ने उठाया सो सब का सब मनुष्य के पाप के कारण से हुआ इस रीति से पाप को एक अत्यन्त बुरी घिनौना नाशक वस्तु मानो एक प्रकार का विष जानता है और उस से अलग होना चाहता है इस प्रकार से सारी शुद्धता सुशीलता पवित्रता सच्चाई धर्म्म दया अधीनता कुशल प्रेम और जितनी अच्छी बातें हैं सब की सब सीधे मन से प्रभु पर बिश्वास लाने से क्रम क्रम उत्पन्न होती हैं।

तब संसारी ने उत्तर दिया कि हे गुरु आप की शिक्षा भली भांति मेरी समझ मे आ जाती है क्योंकि दृष्टान्त प्रसिद्ध है कि जैसा गुरु तैसा चेला जैसी संगति तैसी चाल जब प्रभु आप ऐसा शुद्ध और पवित्र है तो अवश्य उस के सच्चे शिष्य भी उस के तुल्य शुद्ध और पवित्र होते जायेंगे। परन्तु एक और बात भी पूछनी है अर्थात् कि प्रभु ने अपने शिष्यों के लिये धर्म्म की कोई रीति अथवा नियम ठहराया कि नहीं जो साधारण मसीही लोग मानते है कि इन पर चलना चाहिये। क्योंकि मैं ने जलसंस्कार और प्रभु के भोजन के नियमों का उस पादरी से कुछ समाचार पाया है सो आप से भी पूछने चाहता हू कि आप इन बातों का कैसा वर्णन करते हैं।

प्रभुदास ने उत्तर दिया कि तुम मंगलसमाचार की पुस्तक को जाचो तो तुम को ज्ञान होगा कि प्रभु ने दो नियमों को ठहराया है। परन्तु उस रीति से नहीं जिस रीति से उस पादरी ने तुम को बतलाया क्योंकि बाहिरी रीति से इन नियमों पर चलने से किसी की मुक्ति नहीं होगी और उन के निरे छोड़ देने से किसी का नाश नहीं होगा। ये दोनों नियम प्रभु की मूल शिक्षा और प्रसिद्ध कार्यों के स्मरणकारी और शिष्यों के लिये जो सीधे मन से उन पर चलते विशेष अनुग्रह पाने के कारण है और इस मे सन्देह नही है कि सारे शिष्यों को उन पर चलना उचित है। जलसंस्कार अर्थात् बपतिस्मा के नियम मान्ने से शिष्य प्रगट करता है कि अपने मन की अशुद्धता से सज्ञान हो पवित्रात्मा की सहायता की और नवीन आत्मिक जन्म को लालसा रखता हूं जिस से मेरा मन शुद्ध होवे जैसे देह जल से शुद्ध होती है और इन मूल बातो के प्राप्त करने के लिये प्रभु ईसा मसीह के प्रायश्चित्त पर

भरोसा रखता हूं। फिर प्रभु के भोजन से शिष्य अपने मन का विश्वास और प्रेम जो प्रभु पर है प्रगट करता है और उस की मृत्यु का स्मरण करता है कि जिस रीति रोटी तोड़ी जाती और मद्य उंडेला जाता है उसी रीति प्रभु का मांस तोड़ा गया और रुधिर बहाया गया और यह भी मान लेता है कि सारे मसीही भाई प्रभु मे एक ही हैं और वह अपने को प्रभु की सेवा मे संकलिपत करता है। जो शिष्य सीधे मन से इन नियमो को मानते हैं तो प्रभु का विशेष अनुग्रह उन को प्राप्त होता है जलसस्कार तो कवल एक बार अर्थात् शिष्य होने पर माना है परन्तु इस के पीछे जब ही अवकाश हो प्रभु का भोजन करना अच्छा है। फिर प्रार्थना करने की और एकट्ठे होके भजन करने की और परमेश्वर के वचन पढ़ने की और ऐसी ऐसी कितनी रीतों की आज्ञा मंगलसमाचार में मिलती है और इन सभो का अभिप्राय यह है कि सारे शिष्य शुद्धता पवित्रता और ज्ञान मे बढ़ती पावे।

तब ससारी ने कहा कि हे गुरु हम ने आप से बहुत सी बाते पूछी कितनी और पूछने को रह गई है जो हम बहुत दिनो तक आप के पास रहके शिक्षा पाते तो बहुत भला होता। परन्तु आप ने कहा था कि इस भारी बोझ से छुटकारा पाने के लिये उस राजमार्ग पर चलके आगे को बढ़ना अवश्य है इस कारण से मैं बहुत बेर लो यहा रह नहीं सकता हू। क्या उस मार्ग पर कोइ ऐसा मनुष्य मिलेगा जो ज्ञान की शिक्षा मेरे लिये करेगा।

प्रभुदास ने उत्तर दिया कि हा एक ऐसा मनुष्य तुम को मिलगा और मैं उस के नाम पर तुम्हारे लिये चिट्ठी दूंगा। वह मसीही धर्म का अध्यक्ष है और तुम को ऐसी उत्तम शिक्षा देगा जैसा बहुत थोड़े मनुष्य दे सकते

हैं। परन्तु यह बात भूलो मत कि सब से श्रेष्ठ शिक्षक वही पवित्रात्मा है जिस की सहायता की प्रतिज्ञा प्रभु ने हम सभों को दिई है वही पवित्रात्मा मंगलसमाचार की पुस्तक का लिखानेवाला है। इस दशा में सब से उत्तम शिक्षा तुम्हारे पास ही है सो तुम किसी मनुष्य की ओर विश्वास की दृष्टि से मत ताको क्योंकि इससे प्रभु पवित्रात्मा का अपमान होता है। इन्हीं की प्रार्थना करते रहो इन का वचन ध्यान के साथ पढ़ते रहो इस रीति से तुम्हारे लिये उजाला बढ़ता ही जायगा।

तब मैं ने सुना कि संसारी प्रभुदास से लौकिकज्ञानी और मंगलोपदेशक के विषय में पूछने लगा कि वे कौन थे। प्रभुदास ने बतलाया कि लौकिकज्ञानी एक मनुष्य है जो पहिले मसीही लोगों में मिलने को आया परन्तु उस का मन सीधा नहीं था उस की अभिलाषा केवल सांसारिक थी उस ने समझा कि फिरंगी लोग मसीही हैं और जो मैं उन का धर्म्म ग्रहण करूं तो वे मेरा उपकार करेंगे। परन्तु जब देखा कि इस मार्ग पर चलने में बड़ा दुःख और कष्ट होता है तो निपट अप्रसन्न होके पलट गया और उस समय से और लोगों के रोकने में बड़ा परिश्रम करता है। परन्तु ऐसी चाल से उस ने अपना यथार्थ फल पाया है क्योंकि जैसे पहिले उस ने अपने लोगों को पीछे मसीहियों को छोड़ दिया तैसा अब उन दोनों ने उस को छोड़ दिया है। इस दशा में वह अपना एक नया मत चलाने चाहता है परन्तु कोई उस की बात नहीं मानता है वह अपने शब्द से तो बड़ी आत्मस्तुति करता है परन्तु अपने मन में अपने को निपट तुच्छनीय जानता है। मंगलोपदेशक उससे एक दूसरे प्रकार का मनुष्य है वह तो बहुधा यहां रहता है जिस्ते नगर में जाके समस्त लोगों

को मंगलसमाचार सुनावे मैं भी कभी कभी उस के संग जाता हूं। इस काम करने में उस का अभिलाष केवल प्रभु की आज्ञा मान्ने का और सारे मनुष्यों से प्रभु का बिश्वास कराने का है। इसी इच्छा से उस ने अपने देश को और अपने घर के लोगों को त्यागा और इस देश में आया है और इसी अभिलाषा से कि कोई मेरे उद्यम से मुक्ति और अनन्त जीवन पावे अपना सब काम करता है। प्रभु के अनुग्रह और सहायता से कितने मनुष्य जो इस गांव में रहते हैं उसी के द्वारा मसीही शिष्य हुए। इसी समय वह इसी काम में लगा है और मैं जानता हूं कि जब लों वह जीता रहे तब लों इसी काम में लगा रहेगा।

तब संसारी ने कहा कि कितने और भी ऐसे मनुष्य होंगे क्योंकि मैं ने एक को जगन्नाथ मे देखा क्या हिन्दू लोगों में ऐसे मनुष्यों के परिश्रम से कुछ फल हुआ अथवा और स्थानो में भी इस प्रकार के गांव और गिर्जे बने हैं।

प्रभुदास ने उत्तर दिया कि हां सारे हिन्दुस्थान मे ऐसे मनुष्य फैल गये हैं और बहुतेरे स्थानों में ऐसे मसीही गांव बसे हैं। इन दिनों मे मसीहियो की गणना हो गई है और उस गणना से ज्ञान हुआ कि पांच लाख से अधिक मनुष्य ऐसे हैं जो हिन्दू और मुसलमानों में से मसीही हो गये हैं और प्रतिवर्ष नये शिष्यो की संख्या बढ़ती जाती है। इससे भी बहुत अधिक मनुष्य ऐसे हैं जो अपने मन में मानते और शब्द से भी कहते हैं कि हमारा धर्म्म असत्य है और मसीही धर्म्म सत्य है परन्तु सांसारिक कष्ट के डर से शिष्य नहीं होते हैं क्योंकि उन के मन में सत्य बिश्वास नहीं है। फिर भी हमारे मन का दृढ़ आसरा है कि कितने वर्ष के पीछे सहस्रों और लाखो हिन्दू और मुसलमान एक ही संग प्रभु के अधीन हो जायेंगे क्योंकि प्रभु

के बचन से हम को निश्चय है कि अन्त को सारे देशों के निवासी उस के शरणागत होंगे और इस बात के पूरे होने के लक्षण इन दिनों में बहुत दिखाई देते हैं ।

तब मैं ने देखा कि प्रभुदास ने संसारी के लिये मसीही धर्म के अर्थकारक के नाम पर एक चिट्ठी लिखके और उस को संसारी के हाथ में देके जिस मार्ग से उसे जाना अवश्य था बता दिया । देखो वह मार्ग सीधा साम्हने चला गया था ऐसा सीधा कि वह उस द्वार से कोसों तक देख पड़ता वह सड़क ईश्वर ने आप बनाई थी उस की दोनों ओर भीत थी जिस को मुक्ति की भीत कहते हैं । देखो यह मार्ग अत्यन्त सकरा था क्योंकि सकरा है वह द्वार और सकेत है वह मार्ग जो अमरत्व को पहुंचाता है और जो कि वह मार्ग कहीं २ गहिरी नीची भूमि में से और कहीं २ बड़े भयानक चट्टानों और चढ़ाई में से निकल गया है परन्तु सीधा चला गया न तो दहिनी ओर मुड़ा है न बाईं ओर और जहां तक आखें देख सकती सीधा देख पड़ता है। फिर भी कई एक स्थानों में भांति भांति की पगडंडियां इस मे से निकल गई थी जिन मे वे लोग जो बुराई की ओर तत्पर होते अथवा भले काम करने से थक जाते चले जाते थे। फिर उन्हीं में से कपटी लोग जो अपने स्वार्थ के लिये इस सड़क पर चलने की इच्छा करते चुपके से आ जाते जैसे कोई चोर किसी दूसरे मनुष्य की सीमा में घुस जाता है । परन्तु आगे वर्णन हो चुका कि राजमार्ग मे पहुंचने के लिये केवल एक ही सत्य द्वार है जिससे कोई मनुष्य भली भांति पहुंच सकता है और यह द्वार मसीह है जो इस द्वार से न पहुंचे उस का परिणाम भला न होगा ।

तब मैं ने स्वप्न में देखा कि प्रभुदास ने संसारी को

आज्ञा दिई कि इस मार्ग पर चलने मे ढील न कर और न तो दहिनी ओर मुड न बाईं ओर। फिर जब तक अर्थ-कारक के घर पर न पहुंचो तब लों मार्ग मे मत ठहरियो वहां निश्चय तुम्हारा शिष्टाचार करके कृपा के साथ तुम्हे अंगीकार करेंगे और तुम को इस यात्रा के प्रकरण मे बहुत सी बाते बतलावेगे। उस ने उस समय उसे यह भी जता दिया कि इसी सकरे मार्ग से जिस पर अब तुम चलने को हो सब ईश्वर की सन्तति गई है अर्थात् धर्मी हाबिल के समय से लेके अब तक सब पुण्यात्मा लोग उस पर चले आये हैं। फिर उसे साहस देने के लिये उस ने उन पुरातन पुण्यात्माओं के नाम का एक सूचीपत्र उसे दिखाया जो उससे आगे उसी मार्ग पर होके चले गये हैं और उसे समझाया कि उन्हों ने बिश्वास के बल से महाराजों को दबाया और सच्चाई के काम किये और प्रतिज्ञा को प्राप्त किया शार्दूल के मुख बन्द किये आग की ज्वलन को बुझाया खड्ग की धारों से बच निकले निर्बलता में बलवन्त हुए लड़ाई में सूरमा बने और शत्रु की सेना को हटा दिया कई एक उस परीक्षा में पड़ गये कि ठट्ठों में उड़ाये गये कोड़े खाये और रस्सियों से बांधे गये और कारागृह में फंसे और कई एक पत्थरों से मारे गये आरों से चीरे गये तीक्ष्ण लोहशलाका से छेदे गये खड्ग से काटे गये भेड़ों और बकरों की खाल ओढ़े हुए कठिन बिपत्ति और दुःख में मारे फिरे। फिर उस ने उसे बतलाया कि जो मुक्ति के मार्ग पर चला चाहते हैं उन लोगों को ऐसा चाहिये कि संसार से अलग होना और सदा यह स्मरण रक्खे कि ईसा मसीह का राज्य इस संसार का नहीं है और सर्वदा ईश्वर की उस आज्ञा मे तत्पर रहें अर्थात् प्रभु यह कहता है तुम उन के बीच मे से निकल आओ और भिन्न हो रहो

और अपवित्र को मत छूओ तब मैं तुम को अंगीकार करूंगा। तब प्रभुदास ने संसारी को यह कहके कि प्रभु का अनुग्रह तुम्हारे ऊपर रहे बिदा किया और संसारी अपनी यात्रा को सिधारा।

इति मुमुक्षुवृत्तान्तवर्णने पञ्चदशोऽध्यायः।

सोलहवां अध्याय।

इस अध्याय में संसारी यात्रा करते हुए परतोलगा नाम एक बूढे यात्री से भेट करके उस का वृत्तान्त सुनता। इस के पीछे राजमार्ग से भटक जाके अन्त को अर्थकारक के घर पहुंचता है।

अब यों हुआ कि मैं स्वप्न में बड़ी अभिलाषा के साथ उस यात्री को देखता रहा और देखा कि वह उस मार्ग पर सीधा चला गया न तो दहिने हाथ मुड़ा और न बायें मैं ने यह भी देखा कि प्रतिक्षण वह अपनी उस पुस्तक को जो मंगलोपदेशक ने उसे दिई थी खोलके पढ़ता और उस की बातों को उस मार्ग में चलते हुए जांचता जाता क्योंकि वह उस के पैरों के निमित्त दीपक और उस के मार्ग के लिये ज्योति थी।

अब ऐसा संयोग हुआ कि दोपहर दिन के लगभग वह यात्री एक बड़ी लंबी चौड़ी ऊसर भूमि पर पहुंचा जहां छाया का कहीं नाम वा चिन्ह भी न था। तब वह साम्हने देखने लगा कि कोई छाहवाला गृह बिश्राम करने के लिये पावे तो उसी समय उस ने अपने साम्हने आध कोस के लगभग एक धर्मशाला देखी जो यात्रियों के चैन के लिये सड़क के समीप पर बनी थी और उस के पास एक कूआ भी था उस कूए के समीप थोड़े से केले के पेड़ लगे थे परन्तु वह फल पकने की ऋतु न

थी । उस कूए के पास ही एक ओर सड़क राजपथ से आ मिली थी जो पत्थरो के रोड़ो से ऐसी भारी थी कि जो कोई मनुष्य उस मे होके चले तो विना ठोकर खाये चल न सके। तब संसारी उस धूयें से जो एक छत्त मे से निकल रहा था शीघ्र जान गया कि इस धर्म्मशाला मे कोई यात्री टिका है और इस आशा पर कि कदाचित् मेरे मेल के योग्य कोई वहा होगा शीघ्र आगे को बढ़ा क्योंकि वह इस बात का अत्यन्त अभिलाषी था कि इस यात्रा में मुझ को कोई मित्र मिले । जब वह धर्म्मशाला के साम्हने आया तो उस ने धर्म्मशाला के भीतर एक प्रसन्नमूर्त्ति बूढ़े यात्री को देखा उस की दाढ़ी शुभ्र थी उस बूढ़े ने थोड़े से तिनके और घास पात बटोरकर आग सुलगाई थी और एक लोटे मे पानी भरके भात की अदहन धरी थी। उस ने अपनी पगड़ी और अंगा उतारके एक ओर रख दिया था और धर्म्मपुस्तक भी उस के दुपट्टे मे लपेटी हुई एक ओर को बड़े आदर के साथ धरी थी और देखो जब वह बैठा हुआ मन्द मन्द आंच कर रहा था तो वह ईश्वर की प्रार्थना और स्तुति मे गीत गाने लगा ।

जब संसारी ने समीप जाके प्रणाम किया तो उस बूढ़े ने यह समझके कि यात्री भाई है शिष्टतापूर्वक कहा कि भीतर आके बैठिये और दोपहर की धूप यहीं गवाइये । तब संसारी भीतर गया और उस बूढ़े ईसाई के पास जा बैठा जो उस्से बड़े प्रेम के साथ बातचीत करने लगा और उस के बाप दादों की मूर्त्तियों को छोड़के यात्रा में आने के विषय मे प्रश्न किये । क्योंकि वह उस की बातचीत से जान गया कि वह ईश्वरीय क्रोधपुर से आता है और जब उस ने बेर बेर प्रश्न किये और उस के उत्तरो से अपनी

मनमानी कर चुका तो संसारी के प्रसन्न करने के लिये अपना भूत वृत्तान्त उस्से यों वर्णन करने लगा अर्थात्

एक गांव है जिस का नाम बेतिया है वहां बहुत वर्षों से मसीह के नाम पर एक मण्डली बनी है परन्तु वे सच्ची शिक्षा को नहीं मानते। उस मण्डली के लोग ईश्वर के वचन में मनुष्यों की ठहराई हुई चलन और अपनी ओर से बहुत सी बातें मिला देते हैं इस युक्ति से मानो कि वे अपने पुण्य कर्म पर ईसा मसीह के पुण्य से अधिक मन का भरोसा रखते हैं और उस मण्डली के पादरी अर्थात् शिक्षक अपने लोगों को धर्म्मपुस्तक पढ़ने को नहीं देते योंही अपने लोगों को पीढ़ी पीढ़ी तक अन्धत्व और मूर्खत्व में फंसा रहने देते हैं। इसी गांव में मैं उत्पन्न हुआ था मेरा नाम मेरे मूर्त्तिपूजक परोसियों के बीच गणेश था परन्तु जब मैं ने बपतिसमा पाया तो मेरा नाम बरतोलमा रक्खा गया। मेरे घराने में पहिला मनुष्य जिस ने ईसाई धर्म्म अङ्गीकार किया सो मेरा दादा था सो जाति का सुनार और बड़ा धनवान् था।

उस के शिष्य होने का वृत्तान्त मैं भली भांति नहीं जानता परन्तु वह एक मंगलोपदेशक के जो हमारी गली में आया करता शिक्षा करने और समझाने से ईसाई हो गया था। मेरा बाप भी उसी गली में जहां मेरा दादा रहता था व्यापार करता रहा और उस के मरने के पीछे उस द्रव्य में से चार सहस्र मुद्रा मेरे अंश में आये।

इतने समय से यद्यपि मैं नाम का मसीही था परन्तु उस पवित्र धर्म्म की व्यवस्था की बातों को कुछ भी जानता न था और संसार के कामकाज में प्रतापी हो मैं अपनी अवस्था भर ईश्वरीय क्रोधपुर के और निवासियों की नाईं अपनी उसी दशा में रहने को प्रसन्न था। और ऐसा

हुआ कि मुझ को धन की वृद्धि करने की इच्छा हुई तो मै ने अपने व्यापार में बहुत से मुद्रा लगाये तब मैं फिरंगियों के व्यापारगृह में जाके वहां से अच्छे अच्छे बहुमूल्य पदार्थ मोल लेके उस नगर के बड़ी दूर के एक टोले मे जहा एक राजा का सभागृह था ले जाता। वहा मैं अपने पदार्थ सभासद बड़े बड़े मनुष्यों के हाथ बड़े लाभ के साथ बेचता और सब काम मेरे कहे के अनुसार होते जाते यहां तक कि निदान को उस सभा के प्रधान कुलीनों मे से एक ने मुझ को आज्ञा दिई कि अमुक बहु-मूल्य पदार्थ फिरंगियो के यहां से लेके मेरे लिये लाओ और जब मै ले आया तो उस ने प्रतिज्ञा किई कि छः महीने के पीछे मै इस का मोल तुम्हे देऊंगा तब प्रतिज्ञा समय पर मै उस के पास फिर गया कि अपना लेना ले आऊं और वहा जाके क्या देखता हूं कि वह मनुष्य राजा के क्रोध मे पड़ा है उस ने उस की सब सम्पत्ति छीन लिई और उसे कारागृह मे डाल दिया है। इस वृत्तान्त से मेरा सांसारिक आसरा मिट गया क्योंकि मै ने उन बहुमूल्य पदार्थों के क्रय करने मे अपनी सारी पूंजी लगाय दिई थी कुछ देर तक तो मै उस टोले मे इस आशा पर देखता फिरा कि कदाचित् मेरा ऋणी फिर अपने प्रभु से अधिकार पावे तो मेरा ऋण भर देगा। परन्तु जब मै ने उस राजा के बुरे कर्मों का ठीक ज्ञान पाया कि वह अनधेर करके लोगों की सम्पत्ति को छीन लेता है तो मै निराश हो गया तौभी मैं उसी नगर में रहता रहा और उस राजा के सेवकों मे से एक को जो भयानक दण्ड मिला था न देखा होता तो नही जानता कि मै कब लो उसी दशा मे पड़ा रहता। ऐसा हुआ कि उस राजा के सेवकों मे से किसी से कोई तनिक सी चूक हो गई जिस के कारण

वह राजा अप्रसन्न हुआ और वह अपने स्वामी की भयं-
कर प्रकृति जानके मारे डर के राजगृह से भाग गया
परन्तु उस राजा के सेवकों में से किसी ने उस का पीछा
किया और उसे पकड़ लिया तब राजा ने आज्ञा दिई कि
उस के जीते जी खाल खींच लो । जब मैं ने इस दण्ड को
देखा तो मारे डर के उस स्थान से भागा और मैं ने
अपने तईं कुशली न समझा जब तक कि उस भयानक
स्वभाववाले राजा की सीमा से निकल नहीं आया ।

जब मैं अपनी गली में फिर आया तो जो टोटा मुझ
को पड़ा था शीघ्र मेरे पड़ोसियों मे प्रकाश हो गया तो
उन्हो ने मुझे भविष्यत् बिचारने में मूर्ख ठहराया और
जब उन्हों ने जाना कि इस के पास धन न रहा तब वे
जैसा पहिले मेरा आदर करते थे अब नहीं करते । अब
मेरा घर भी मुझे भला नहीं लगता और मेरे अगिले मित्र
भी मुझ पर कृपा नहीं करते तब मैं ने बिचार किया कि
फिर अपने कामकाज को नई रीति से प्रारभ करूं ।
इसी कारण मैं ने अपने घर की छोटी बड़ी सब बस्तु
बेचके व्यापार के लिये ऐसी बस्तु मोल लिई जिन से बड़ा
फल प्राप्त होगा । तब मैं ने अपनी बस्तु लेके उसी नदी
के मार्ग से यात्रा किई जिस के पानी से ब्राह्मण ने तुम
को अपने पापों से पवित्र होने को बताया था । मेरी
इच्छा पश्चिम की ओर जाने की थी और यह बर्षा की
ऋतु थी जब पानी की धारा का ऐसा तोड़ था कि
बिना पुरवाई हवा के पश्चिम को जाना कठिन था । कुछ
दिनों तक तो हम ने ऐसा अनुकूल वायु पाया कि हमारी
यात्रा में कुछ अटकाव नहीं हुआ निदान को एक दिन
किसी स्थान पर आये जहां पानी का बड़ा तोड़ था
और हवा का ऐसा झोका आया कि हम नाव को रोक न

सके और उसी झोंके मे नाव उलट गई। वड़ी कठिनता से मै ने एक रस्सा पकड़ लिया और उसे पकड़े हुए नाव के पेंदे पर आया ऐसी दशा में पड़के अपने जीवन भर मे मैं यह पहिली बार प्रभु ईसा मसीह का स्मरण अपनी सहायता और छुटकारा के लिये करने लगा। माझी तो उस बड़े प्रवाह मे पड़के डूब गये और मुझे तीर लों पहुंचने की कुछ आशा न थी। इस दशा मे मैं ने सहाय मांगा और प्रार्थना किई कि जो मैं बच जाऊं तो अपने को अपने मुक्तिदाता की सेवा में संकल्पित करूंगा तब ऐसा हुआ कि ईश्वर की कृपा से नाव थोड़ी देर पीछे तीर पर जा लगी।

इतने मे मैं ने अपनी सब संसारी वस्तु और पदार्थ खोय दिया मेरा मन उस जोखिम के भय से और परलोक की चिन्ता से भर गया और यों मैं अपनी जन्मभूमि की ओर फिर आया वहां आगे के सदृश मेरे परोसियों का प्रेम मेरी ओर और भी मन्द देख पड़ा परन्तु मैं ने अपने अगिले मित्रों से कुछ थोड़े से मुद्रा उधार लिये और कामकाज का फिर आरंभ किया। फिर भी मुझ को व्यापार मे फल न हुआ क्योंकि कई एक दिन पीछे भांति भांति की आपदों से जो कि मेरे कामकाज में होती गईं मै ऐसा ऋणी हो गया कि अपने महाजनों के मुद्रा देने न सका।

जब लों कि मैं इस आपत्ति की दशा मे पड़ा हुआ था ईश्वर ने अपनी कृपा से मेरे लिये यह युक्ति किई कि जहां मै रहता था उसी स्थान पर फिरंगियों के धर्म का एक पादरी था जिस के चित्त को ईश्वर ने उन लोगों के प्रेम की ओर मोहित किया था जो प्रभु ईसा मसीह से प्रेम रखते हैं।

ईश्वर के उस सेवक ने मेरी कष्ट की दशा सुनके मुझे ढूंढ़ा और जब मुझे पाया तो मेरी दुर्दशा दूर करने के लिये मेरी कुछ सहायता किई इस के पीछे मुझ से पूछा क्या तुम प्रभु ईसा मसीह की इनजील को जान्ने का अभिलाष रखते हो । यह बात सचमुच मेरे लिये कुशलदायक थी क्योंकि मुझ को बड़ा अभिलाष था कि किसी ओर से क्यों न हो मै इस आकाशवाणी की पुस्तक की बड़ी बड़ी बातों से सज्ञान हो जाऊं । यह बात सुन उस पादरी ने मुझ को इनजील की पुस्तक दे दिई और उस को कुछ समय लो प्रतिदिन बड़े बिचार के साथ पढ़ने के पीछे मेरे आत्मा को बहुत भरोसा होने लगा क्योंकि यद्यपि पहिले मैं ने प्रभु ईसा मसीह के जो अकेला हमारा मुक्तिदाता है आश्चर्य्य और महत्व की बातो को साधारण रीति से सुना था तथापि उस समय लो मैं ने उन निमंत्रण की बातो को जो थके और दबे मनुष्यो के लिये उस पुस्तक में लिखी थी आप न देखा और न पढ़ा । इन बचनो से मेरा मुरझाया हुआ चित्त हरा होने लगा और संपूर्ण दुःख की छाया उस मे से दूर हुई फिर जब मैं ने अनन्तजीवन के मार्ग के बिषय मे कुछ यथार्थ शिक्षा पाई थी तब अपने मसीही अगुवा के कहने से अपने भाइयो को शिक्षित करने और उस आशा के बिषय जो उन के आगे धरी गई थी समझाने लगा । मैं ने अपने चित्त मे भली भाति यह इच्छा किई कि आगे को इस संसार का और इस की बिनाशी संपत्ति और अधिकार का कुछ बिचार न करूं पर भूतबार्ता का बिस्मरण करके उस पारितोषिक के प्राप्त करने के लिये जो ईश्वर ने ईसा मसीह के सहाय से देने की प्रतिज्ञा किई है आगे को बढ़ा चला जाऊं । और यद्यपि मेरी प्रकृति संसारी पदार्थों की ओर अब तक भी

झुक जाती है परन्तु ईश्वर अपना महत्त्व मुझ पर प्रगट करता है और मैं उस बचन को स्मरण करता हूं कि तू उन की ओर न फिरना। तब अत्यन्त दुःख के साथ मैं ने यह मन किया कि केवल मुक्ति ही के मार्ग को पीछा किया चाहिये जिस को प्रभु ने आप मुझे भली भांति दिखा दिया है। और अनेक प्रकार की परीक्षाओं से छूटके और अत्यन्त कठिन बिपत्तियों से बचके ईश्वर की सहायता पाके मैं आज लों उसी मार्ग पर चला जाता हूं। और प्रभु ईसा मसीह के महत्त्व से मुझ को यह आशा है कि अन्त तक मैं दृढ़ता से इसी पर चला जाऊंगा।

इस समय में उस बूढ़े मसीही ने जाना कि भात पक चुका तब उस ने थोड़ा सा नोन जो पत्ते में लपेटा हुआ उस के दुपट्टे के एक कोने में बंधा था खोलके भात पर छिड़क दिया तब संसारी के साम्हने की भूमि को अपने हाथ से झाड़के उज्वल किया और शीघ्र जाके केले के दो पत्ते ले आया और जहां उज्वल किया था उस भूमि पर पत्तों को बिछाया और उन पर भात को दो बांट करके रक्खा जब यह सब कुछ कर चुका तब बड़े आदर से समयात्री को नेवता किया कि मेरे साथ भोजन करो।

यह सुनते ही संसारी अप्रसन्न होके यों बोला कि क्योंकर तू यह समझता है कि मेरे साथ यह भोजन करे क्या तू नहीं जानता है कि मैं तो अपने देश का एक कुलीन मनुष्य हूं और तू नीच जाति का मनुष्य है।

बूढ़े यात्री ने बड़ी अधीनी से उत्तर दिया हे भाई मैं ने आप को अप्रसन्न करने की इच्छा नहीं किई है बरन इस समझ पर कि हम सब मसीही धर्म में एक हैं मैं ने आप से यह कहा।

तब संसारी अप्रसन्न हुआ और शीघ्र उठ अपनी जूती

और लाठी ले उस धर्मशाला के बाहर निकला परन्तु क्रोध के मारे अपना मार्ग भूलके उस पगडंडी में चला गया जो राजपथ से आ मिली थी अर्थात् वही पगडंडी जो पत्थर के रोड़ों से भरी थी । और वह उस में ज्यों ज्यों आगे बढ़ता जाता था त्यों त्यों अपनी सीधी सड़क से दूर पड़ता चला जाता था । और जब वह लुढ़कता चला जाता था तो सन्ध्याकाल लों उस ने एक बार भी यह अनुमान न किया कि मैं सीधा मार्ग भूला जाता हूं जब कि सूर्य्य उस के मुख के साम्हने से अस्त होने लगा तब उसे चेत हुआ ।

जब उसे स्मरण आया कि राजपथ तो पूर्व की ओर को गया है और सीधी सड़क मैं ने पीछे छोड़ दिई है तब वह ठहर गया चारों ओर फिरके देखा तो वह धर्मशाला दूर दिखलाई दिई और यद्यपि उस ने धर्मशाला की ओर जाने में अत्यन्त शीघ्रता किई तथापि उजाला रहने तक पहुंच न सका और वहां से वह बूढ़ा यात्री चला गया था और वह स्थान अंधियारा और सुनसान हो रहा था । तब वह भीतर जाके पड़ रहा परन्तु रात भर उसे नींद न आई क्योंकि वह सीधी सड़क छोड़ देने के कारण अत्यन्त दुःखी और अपने से अप्रसन्न था ।

संपूर्ण रात वह दुःखित पड़ा रहा और झींगर उल्लू मेंढकों का शब्द सुनता रहा ज्योंही प्रातःकाल हुआ वह उठा और आगे को चला । कांधे के बोझ और रात की बेचैनी के कारण वह कठिन से चल सकता और जब चला जाता था तो उस ने अपनी आपत्ति की दशा के कारण ईश्वर से पुकार किई । और वह जिस ने इस संसार को ऐसा प्यार किया कि अपने एकलौते बेटे को दे दिया इस लिये कि जो कोई उस पर बिश्वास लावे नाश

न होवे बरन अनन्तजीवन पावे उस ने उस की पुकार सुनी उस बचन के अनुसार कि उन के पुकारने से पहिले मैं उत्तर दूंगा और वे जब लों कह न चुकेंगे मै सुन लूंगा। और देखो जब कि वह दुर्बल यात्री प्रार्थना कर रहा था उस ने अत्यन्त दूर पर जहां से सूर्य्य उदय होता है बहुत से पेड़ देखे और ज्यों ज्यों दिन उदय होता जाता त्यों त्यों एक बहुत सुन्दर फलवती भूमि देख पड़ती थी जिस के पटपर और पहाड़ों में से पानी के नाले और सोते और नदी निकलती थी।

तब वह बोझ से दबा हुआ यात्री इस अनुमान पर कि थोड़े काल मे अर्थकारक के घर पहुंचूंगा अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उस का अनुमान ठीक था क्योंकि अर्थकारक का घर समीप था और उसी ने चारों ओर उस भूमि को सुधार रक्खा था उसी ने पेड़ भी लगाये थे और उन्हे सींचा था। और वह यात्री ज्यों ज्यों आगे को जाता उस देश की सुन्दरता से अत्यन्त प्रसन्न होता। जब वह उपवन मे पहुंचा उस को पेड़ों की छांह में धूप से चैन मिला क्योंकि वहां बांस की पतली पतली टहनियां सड़क के ऊपर लटक रही थी और उन के चिकने चिकने पत्तों से ऐसा जानो कि उस के शिर पर एक हरा छत्त बना है। वहां पत्तों की घरघराहट और पानी के सोतों की झरझराहट से एक बहुत अच्छा शब्द सुनाई देता था और संसारी इन सुखदायक स्थानों से होके बड़ी प्रसन्नता से दो पहर दिन के लगभग अर्थकारक के घर के साम्हने पहुंचा।

इति मुमुक्षुवृत्तान्तवर्णने षोडशोऽध्यायः।

सत्तरहवां अध्याय ।

इस अध्याय मे ससारी अर्थकारक के घर पर पहुनके बहुत कुछ देखता है ।

तब मै स्वप्ने मे देखने लगा कि अर्थकारक किस प्रकार के घर में रहता है और देखो वह घर घास से छाया हुआ था और उस के साम्हने बांस का एक छप्पर बना हुआ था उस पर अनेक प्रकार के फूलों की बेल दौड़ गई थी जो देखने में अत्यन्त सुन्दर और उन के फूलों की सुगन्धि चारो ओर फैल रही थी । और वह गृह एक अति सुन्दर और सुहावनी वाटिका के बीच मे बना हुआ था जिस मे दाख और अनार सुपारी और भी सब प्रकार के नये और पुराने मनभावने फल लगे थे । और देखो कि वह बूढा अर्थकारक उस डेवढ़ी मे एक बिछाये हुए चित्रकंबल पर बैठा था उस के हाथ मे धर्म्मपुस्तक थी उस का अर्थ करके वह कई एक मनुष्यों और अपने शिष्यों को जो उसे चारों ओर से घेरे हुए बैठे थे बता रहा था । परन्तु जब उस ने यात्री को बोझ से लदा हुआ और धूल झाड़ से भरा हुआ समीप आते देखा तो शीघ्रता के साथ उस के अभ्युत्थान को निकला और उस के चरण धोने के लिये पानी मंगवाया और उसे अत्यन्त कृपा के साथ घर मे ले गया ।

अर्थकारक तो एक गोरा सा मनुष्य था और बड़े दूर देश से आया था और वह बहुत सी भाषाओं को जानता था इस कारण से उस यात्री के साथ उसी की भाषा में बातचीत कर सका । तब उस ने उस यात्री को अत्यन्त कृपा के साथ अंगीकार किया और पानी मंगाके उस के चरण धुलाये और उस के शरीर मे तेल मलवाया तब उस को

डेवढ़ी मे अपने समीप बिठलाया और कहा कि तुम को हमारे साथ कल तक रहना अवश्य होगा । तब अपने सेवकों को आज्ञा दिई कि खाना सिद्ध करो जब तक कि खाना सिद्ध होता था आप संसारी के साथ बातचीत करता रहा । पहिले अर्थकारक ने उस्से बहुत से प्रश्न किये अर्थात् वह कहां उत्पन्न हुआ था और उस के बापदादों का क्या धर्म्म था और किस ने उसे मसीही हो जाने की शिक्षा दिई थी । जब वह उन प्रश्नों का उत्तर पा चुका तो उस से पूछा कि तुम ने बपतिस्मा अर्थात् मसीही स्नान पाया है । संसारी ने कहा कि मैं ने अब तक बपतिस्मा नहीं पाया है परन्तु आशा रखता हूं कि आप की कृपा से शीघ्र पा जाऊंगा । अर्थकारक ने कहा जो तुम्हारी चाह है सो पूर्ण हो जायगी परन्तु पहिले मैं तुम्हे कुछ शिक्षा देऊंगा ।

तब मैं ने देखा कि अर्थकारक संसारी को एक कोठी मे ले गया जिस की भीतों पर अनेक प्रकार के चित्र लगे थे और पहिले उस ने उस को एक के पास पहुंचाया जिस में यह खींचा था कि कितने एक मनुष्य भोजन करने को आसनों पर लेटे हैं इन मे से एक के पीछे एक स्त्री घुटने टेकके और रो रोकर आंसुओ से उस के चरणों को धोती और अपने शिर के बालों से पोछके उस के चरणों को चूमती और सुगन्धी तेल लगाती है । यह दशा देख उस जेवनार का भण्डारी और उस के संगी निपट अप्रसन्न देख पड़ते और उस मनुष्य और उस स्त्री की ओर बड़े अभिमान और निन्दा के संग ताकते है ।

यह चित्र देखके संसारी ने कहा कि इस का क्या अर्थ है । अर्थकारक ने उत्तर दिया कि इस चित्र पर ध्यान करने से सच्चे पश्चात्ताप का गुण समझा जायेगा तुम उस स्त्री को देखते हो जो एक मनुष्य के चरणो को अपने

आंसुओ से धोती और अपने शिर के बालो से पोछती और तेल लगाती है। वह तो एक बड़ी पापिनी थी परन्तु प्रभु की शिक्षा और अनुग्रह से उस का मन फिर गया है और उस ने अपने पापो से सच्चा पश्चात्ताप किया है इस कारण से प्रभु का अत्यन्त बड़ा प्रेम उस के मन मे उपजा। और जब उस ने सुना कि प्रभु एक प्रधान के घर मे भोजन करता है तो बहुमूल्य सुगन्धी तल मोल लेके तुरन्त उस के पास आई और सब लोगो की निन्दा को तुच्छ जानके जिस रीति से तुम देखते हो अपना पश्चात्ताप और प्रेम सभो के सन्मुख प्रगट किया। क्योंकि जो कोई सचमुच पाप से पछताता है सो बिना पाप छोड़े और प्रभु का प्रेम जो उस के मन मे उपजा है बिना प्रगट किये चैन नही पाता है।

तब संसारी ने पूछा कि भण्डारी और उस के संगी किस लिये क्रोधित दख पड़ते है।

अर्थकारक ने उत्तर दिया कि ये ऐसे लोग थे जो अपने को बड़े धर्म्मी जानते थे और अपने पापों से सर्वत्र अज्ञान हो उन से क्योंकर पश्चात्ताप करे और भण्डारी ने प्रभु को जब जेवनार मे बुलाया तो ऐसा समझा कि उस पर बड़ी दया करता हू और उस देश की रीति उस का आदर भी न किया। फिर जब उस ने देखा कि प्रभु ऐसी पापिनी स्त्री को अपने पास आने देता तो अभि-मान करके अपने मन से समझा कि जो यह अन्तर्यामी होता तो जाने जाता कि यह कैसी स्त्री है और उस को ऐसा करने न देता। परन्तु प्रभु ने उस की चिन्ता को जानके उसे बतलाया कि मै पापियो को शुद्ध करने और मुक्ति देने को आया हू और यह स्त्री यद्यपि पापिनी थी तथापि तुझ से बहुत अधिक प्रेम प्रगट करती है मै

तेरे घर मे आया तू ने मेरे चरणों के लिये जल न दिया परन्तु उस ने मेरे चरणो को आंसुओ से धोया और अपने सिर के बालो से पोंछा । तू ने मेरा चूमा न लिया और जब से मै यहा आया यह मेरे चरणो को चूम रही है । तू ने मेरे शिर मे तेल न लगाया इस स्त्री ने मेरे चरणो पर सुगन्धी तेल लगाया इस लिये मै तुझ से कहता हूं कि उस के पाप जो बहुत हैं क्षमा किये गये क्योंकि उस का बड़ा प्रेम है । तब उस स्त्री की ओर फिरके उस्से कहा कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं कुशल से चली जा । यह अर्थ सुनते ही संसारी को स्मरण हुआ कि यह वृत्तान्त मगलसमाचार की पुस्तक मे लिखा है ।

तब अर्थकारक संसारी को एक दूसरे चित्र के पास ले गया जिस में यह खीचा था कि एक बाटिका में जो भीत से घेरी थी घर बना है और घर के पास एक मनुष्य और एक छोकरा खड़ा होके बाटिका के बाहर की ओर बड़े यत्न और व्याकुलता से ताक रहें है और क्या देखते हैं कि बाटिका के बाहर जंगल मे एक और छोकरा पत्थर के साम्हने झुकके बड़े भय के संग रक्षा के लिये उस पत्थर की बिन्ती कर रहा है और जंगल से एक सिंह उस पर झपटके उस को खा जाता है ।

यह चित्र देख संसारी का मन बड़ा दुःखी हुआ और वह बड़ा यत्न करके अर्थकारक से पूछने लगा कि इस का क्या अर्थ है ।

अर्थकारक ने उत्तर दिया कि इस चित्र पर ध्यान करने से सत्य बिश्वास और असत्य बिश्वास का भेद प्रगट होगा । ये दोनो छोकरे इस मनुष्य के पुत्र हैं इन के पिता ने इन से कहा था कि आज घर मे मेरा काम है तुम दोनों बाटिका में रहके उस काम मे जो मैं बतलाता

हूं तत्पर रहो किसी प्रकार से बाटिका के बाहर मत जाओ क्योंकि बाहर जाने में जंगली पशुओं की बड़ी डर है मेरे समीप रहो और जो कोई खटका आ जावे तो मेरे पास दौड़े आओ और मुझे पुकारो तो मैं आके तुम्हारी रक्षा करूंगा यह कहके पिता घर के अन्दर घुस गया । तब एक पुत्र ने अपने पिता पर बिश्वास लाके उस की आज्ञा मानी परन्तु दूसरे ने अपने मन मे समझा कि पिता किस लिये बाहर जाने नहीं देता बाहर जाना तो अच्छा होगा हम बाहर जायेंगे । तब बाटिका के बाहर जाके खेलने लगा और अपने लिये वह पत्थर ठहराया कि यह मेरा पिता होगा जो कोई खटका आ जावे तो यह मेरी रक्षा करेगा तब उस का नाम जपने और उस की सेवा करने लगा अन्त को उस के मन में बिश्वास हो गया कि यह सचमुच मेरा पिता है । इतने में जंगल से सिंह आया और पहिले पुत्र ने अपने पिता के पास दौड़के पुकारा कि हे पिता सिंह आता है पिता सुनते ही उस की रक्षा के लिये निकल आया दूसरा पुत्र उस पत्थर के पास भागके उस की बिन्ती करने लगा परन्तु यद्यपि वह उस पर बिश्वास लाया कि पिता है तथापि पत्थर ही पत्थर रहा और उस को किसी प्रकार से बचा न सका इस दशा मे सिंह उस पर झपटके उस को खा गया ।

तब संसारी ने कहा कि मैं जानता हूं इस चित्र का अभिप्राय मेरी समझ में आ गया है कि दूसरे पुत्र की दशा उन्हीं लोगो की है जो सच्चे परमेश्वर को छोड़के अपने लिये और ईश्वर और देवता कल्पते है । और यद्यपि वे उन पर बिश्वास भी लावें तथापि उन का बिश्वास असत्य और धोखा देनेवाला है और यथार्थ दशा से नहीं मिलता है क्योंकि सच्चे परमेश्वर को छोड़के

और कोई ईश्वर नहीं है इस लिये उन का कोई बचानेवाला नहीं है और उन का अन्त भयानक होगा।

अर्थकारक ने कहा कि सच ऐसे विश्वास से क्या अच्छा फल हो सकता है वह तो धोखा ही धोखा है। सत्य विश्वास के ये दो गुण प्रसिद्ध हैं पहिला वह यथार्थ दशा से मेल रखता है दूसरा आज्ञापालक है जिस विश्वास में यह गुण नहीं है यद्यपि मनभावना भी हो तथापि मिथ्या और धोखा और नाशक है।

इस के पीछे अर्थकारक ने संसारी को एक और चित्र दिखलाया जिस की यह दशा थी कि एक बड़े जंगल में मार्ग बना है और मार्ग के बीच एक ब्राह्मण भूमि पर पड़ा है घायल होने के कारण वह अधमुआ है और ऐसा देख पड़ता कि डांकुओं ने उस को मार पीटके उस की समस्त सम्पत्ति लूट लिई है। इस के पास एक फिरंगी खड़ा होके उस का उपकार करता है और उस के घावों को बांधके उस को अपने घोड़े पर चढ़ाता है उसी मार्ग पर थोड़ी दूर आगे को एक और ब्राह्मण शीघ्रता से चलते हुए अपनी पीठ दिखाता है और उस के पीछे एक पंडा भी उसी रीति चला जाता है।

तब संसारी ने यह चित्र देखके कहा कि मैं इस का अर्थ सर्वथा समझ नहीं सकता हूं।

अर्थकारक ने उत्तर दिया कि वह ब्राह्मण जो घायल होके भूमि पर पड़ा है एक नई रीति से शिक्षा पाता है कि मेरा भाई और परोसी कौन है। जब वह उस मार्ग पर यात्रा करता था तब डांकू उस को मार पीटके और उस की समस्त संपत्ति लूटके उसी दशा में जो तुम देखते हो छोड़ गये। इतने में वह ब्राह्मण जो मार्ग पर आगे बढ़ गया है इस के पास आया और इस ने समझा कि

यह मेरा भाईबन्धु होके मेरा उपकार करेगा परन्तु वह ब्राह्मण इस को देखते ही अपना मुख मोड़के और मार्ग की दूसरी ओर होके बिना कुशलक्षेम भी पूछे चला गया इस के पीछे वह पंडा भी आया वैसा ही चला गया। तब वह फिरंगी आया और ब्राह्मण ने यह समझा कि जब मेरे भाईबन्धु इस रीति से मुझ को छोड़ जाते हैं तो यह मेरी क्या सुध लेगा और जो लेवे भी तो मुझ से और उस जाति के मनुष्य से क्या संबन्ध हो सकता है वह तो म्लेच्छ और चाडाल है मै तो ब्राह्मण हूं। परन्तु वह फिरंगी उस के पास आके और बड़ी दया के साथ उस का वृत्तान्त पूछके उस्से शान्ति और समाधान की बाते कहने लगा और उस के घावो में औषध बांधके अपने घोड़े पर चढ़ाया और उस को एक धर्मशाला पर पहुंचाया और उस की रक्षा के लिये जितना व्यय हुआ बड़ी प्रसन्नता से दे दिया। तब अर्थकारक ने संसारी से पूछा कि इन तीन मनुष्यों मे से उस ब्राह्मण का भाई और परोसी कौन था।

संसारी ने उत्तर दिया कि निःसन्देह वह जिस ने उस पर दया किई उस का भाई ठहरा और अब मुझ को चेत हुआ कि मगलसमाचार की पुस्तक मे प्रभु का एक दृष्टान्त इसी प्रकार का लिखा है और अन्त को प्रभु ने उन लोगो से कहा कि तुम भी जाके वैसा ही करो।

इस समय मे जब सूर्य्य अस्त होने लगा तो अर्थकारक के सेवको ने पीपल के पेड़ तले एक चटाई बिछाई और कई प्रकार का खाना थालियों मे लाके उस पर रक्खा। जब सब उपस्थित हुआ सेवकों ने अर्थकारक को जताया तब वह अर्थकारक जो बड़ा दयालु और आदरकारी था उठा और उस यात्री को बिदेशी मनुष्य समझके नेवता किया और उसे सब से श्रेष्ठ स्थान मे ले जाके बिठाया

और कहा कि आप हमारे साथ खाना खाइये । तब मैं विचार करके संसारी को देखने लगा कि अब यह क्या किया चाहता है और देखो वह यह कहते हुए पीछे हट गया कि मै क्योंकर तुम्हारे साथ खाऊं क्योंकि मै ने कभी किसी विदेशी के साथ खाना नही खाया है । तिस पर मै ने देखा कि अर्थकारक के शिष्यों मे से कई एक मनुष्य क्रुद्ध होने लगे परन्तु वह महापुरुष केवल मुसकुराया और अपना हाथ उस के मुख पर जो बोलने मे बड़ा बली था रखके यात्री से यों कहने लगा ।

हे मेरे भाई यह कौन पुस्तक है जो तू अपने फेटे मे लपेटे हुए है ।

संसारी ने उत्तर दिया कि हे प्रभु यह वही पुस्तक है जो अभी आप लिये थे अर्थात् ईश्वरीय पुस्तक ।

अर्थकारक ने पूछा कि तू इस पुस्तक को इस यात्रा में क्यों लाया है ।

संसारी ने उत्तर दिया कि यह मुझ को इस लिये मिली कि इस मार्ग मे मेरी अगुवाई करे ।

अर्थकारक ने प्रश्न किया कि तू समझता है कि यह सच्चा मार्ग दिखानेवाला है ।

संसारी ने कहा मुझे तो निश्चय है कि यह पुस्तक उसी ने लिखी है जो मनुष्य के स्वभाव को जानता है और इस लोक में वही एक है जो मनुष्य के पाप और समस्त आपत्तियो को दूर करने के लिये एक यथार्थ विषौषधी के तुल्य है ।

अर्थकारक ने कहा जो तू उन बड़ी बातों के विषय जो अमरत्व और मृत्यु से सबन्ध रखती है इस पुस्तक पर विश्वास करता ह तो क्या तू छोटी छोटी बातो को इस धर्मपुस्तक के अनुसार नही मानेगा ।

संसारी बोला हे प्रभु निश्चय मैं मानूंगा ।

अर्थकारक ने कहा हे मित्र तो क्या हेतु है कि हमारे साथ खाना खाने मे दोष समझता है ।

संसारी बोला इस का कारण यह है कि मै ने लड़कपन ही से ऐसी शिक्षा पाई है कि अन्यजातीय के साथ खाना खाने मे बिचार करना क्योकि हम बिदेशी लोगो को और उन के खाने को भी अपवित्र समझते हैं ।

अर्थकारक ने कहा तेरा बिचार इस प्रकरण मे वैसा है जैसा हमारे प्रभु के प्रेरित पतरस का आरंभ मे था ।

तब मैं ने देखा कि अर्थकारक ने संसारी से कहा कि प्रेरितों के कर्म की पुस्तक का दसवा अध्याय निकालके देख । वहा लिखा है कि पतरस प्रभु ईसा मसीह का प्रेरित यहूदी था इस कारण से अन्यजातीय मनुष्यो के मेल से अत्यन्त घिन करता था परन्तु ईश्वर ने जब यह चाहा कि उस को सर्ब जनो के बीच मगलसमाचार सुनाने को भेजे इस लिये उस के चित्त से उन झूठे बिचारो को एक चमत्कार दिखलाके दूर किया । अर्थात् दो पहर के लगभग पतरस प्रेरित प्रार्थना करने को गया और उसे भूख लगी और चाहा कि कुछ खावे पर जब वे उपस्थित करते थे वह अचेत हो गया और देखो कि स्वर्ग खुल गया और एक वस्तु बड़े दुपट्टे के सदृश जिस के चारो कोने बंधे थे पृथिवी की ओर लटकी पतरस के पास आई उस मे भूमि के सब प्रकार के पशु और जंगली जीव और कीड़े मकोड़े और चिड़िया थी और उसे एक शब्द सुनाई दिया कि हे पतरस उठ छुरी से मार और खा । पतरस ने कहा हे प्रभु यह बात कभी न होगी क्योकि मै ने कभी कोई अपवित्र और बुरी वस्तु नही खाई दूसरी बार फिर उसे शब्द सुनाई दिया कि जिस को ईश्वर ने

पवित्र किया है तू अपवित्र मत कह। अर्थकारक ने कहा अब हे मेरे भाई जो हम तेरे भाई मनुष्य और मसीही भी हैं जो एक ही क्रूश के सहाय से बचाये गये और एक ही के अमूल्य लोहू से पवित्र किये गये अर्थात् ईसा मसीह के लोहू से जो सम्पूर्ण पापों से पवित्र करता है तो तू क्योंकर हम को अशुद्ध और अपवित्र कहता है अथवा क्योंकर तू उन के साथ खाने को अंगीकार नहीं कर सकता है जिन के लिये प्रभु ईसा आप मुआ।

संसारी ने कहा हे प्रभु मैं आप के बर्त्तनों में भांति २ का मांस देखता हूं जिस के खाने से मुझे घिन आती है।

अर्थकारक ने कहा हे मेरे भाई क्या तू अभी तक नहीं समझा कि जो बस्तु मनुष्य में बाहर से प्राप्त होती हैं उस को अपवित्र नहीं कर सकती क्योंकि वह चित्त में नहीं प्राप्त होतीं पर अभ्यन्तर में। परन्तु वही जो मनुष्य के भीतर से निकलती हैं उसे अपवित्र कर सकती हैं क्योंकि मनुष्य के चित्त ही से बुरे विचार व्यभिचार निषिद्ध कर्म हत्या चोरी लालच बुराई कपट लम्पटता बुरी दृष्टि नास्तिकत्व घमण्ड मूर्खता और सब प्रकार की बुराई निकलती और यही बातें उसे अपवित्र करती हैं। परन्तु खाने पीने से हम ईश्वर के समीप नहीं पहुंच सकते हैं क्योंकि जो हम खावें तो अधिक बुरे नहीं होते और जो न खावें तो अत्यन्त भले नहीं हो जाते तौभी हे मेरे भाई जो खाना तुझे ठोकर खिलावे तो मैं आज से जब तक कि संसार बना रहे मांस न खाऊंगा ऐसा न हो कि मैं अपने भाई के ठोकर का हेतु होऊं।

अर्थकारक की इन बातों के सुन्ने से संसारी थोड़ी देर तक मनमलिन रहा क्योंकि उस की बातें शीघ्र उस की समझ में न आई थीं। तब निदान को उस ने उत्तर

दिया कि जो आप ने कहा उसे मैं निश्चय करता हूं कि सच है और जो धर्मपुस्तक में लिखा उस के दूर अथवा दूषण करने का गर्व मैं न करूंगा । इस के पीछे वह चटाई पर जो पेड़ के तले बिछी थी जा बैठा और अर्थकारक के दहिने हाथ बैठके खाने लगा परन्तु मैं ने देखा कि पहिले वह घबरा गया और इधर उधर देखता हुआ यों खाने लगा जैसे कोई चोरी से खाता हो पर थोड़े काल के पीछे वह साहसी हो गया और प्रसन्नता से अर्थकारक की बातों को सुनता रहा ।

अब ऐसा हुआ कि जब वे खाना खाय रहे थे उस मण्डली में से एक ने पानी मांगा और जब वह पी चुका तो कहने लगा कि अहो ठंडा पानी प्यासे प्राणी को कैसा भला लगता है । तब अर्थकारक ने कहा देखो परमेश्वर के पवित्रात्मा के जीवनकारक और सुखदायक काम का जो मनुष्य के चित्त मे किया जाता है जल के गुण से जो पृथिवी पर होता है कैसा ठीक दृष्टान्त है कि जिस प्रकार ईश्वर ने इस पृथिवी को सींचने के लिये नदी और नाले उत्पन्न किये हैं और जिस प्रकार मेंह बरसता है और आकाश से ओस पड़ती है और फिर वहां नहीं लौट जाती पर पृथिवी को गीली करती जिसतें उस में बीज जमें और बालें लगे और प्राणियों के लिये अन्न और खाद्य वस्तु मिलें इस प्रकार आत्मिक बिषयों में भी वह अपने पवित्रात्मा को मनुष्य के चित्त पर जो ऊषर भूमि के तुल्य निष्फल हो रहा है भेजता है जिसतें उस के गुण से वह मुक्ति के फल बहुतायत से लावे ।

तब मैं ने सुना कि संसारी ने अर्थकारक से पवित्रात्मा के महत्व और कार्य्यों के बिषय में कई एक प्रश्न किये तिस पर अर्थकारक ने पूछा कि क्या तू त्रित्व

के विषय में मसीही शिक्षा को जानता है अर्थात् कि एक ईश्वर में तीन समान व्यक्तियों का एक पवित्र और निगूढ ऐक्यता है ।

संसारी ने उत्तर दिया कि मैं ने ईश्वर की प्रार्थना किई उस के अनुग्रह से मैं इस शिक्षा को ग्रहण कर सकूं और मुझे निश्चय है कि मेरी प्रार्थना अंगीकृत हुई ।

अर्थकारक ने कहा हे मेरे भाई तू ने क्या भला उत्तर दिया क्योंकि इन बातों की बिद्या बिना ईश्वर के मार्ग दिखाये प्राप्त नहीं हो सकती और तू ने क्या अच्छी बात के लिये ईश्वर से बिन्ती किई है ।

तब अर्थकारक ने यात्री से पवित्रात्मा के काम का जो मनुष्य के चित्त पर होता है वर्णन किया ।

उस ने कहा हे मेरे भाई यह जान रख कि ईश्वर के पुत्र अर्थात् ईश्वर के अवतार ने पहिले क्रूस पर अपनी मृत्यु से मनुष्यों के पाप का प्रायश्चित्त किया है जिसतें उस का जो उस पर बिश्वास लावे पापमोक्षण हो और दूसरे पवित्रात्मा का दान दिया है जिस्से मनुष्य की बुरी प्रकृति अधीन हो जाती है ।

अर्थकारक ने कहा कि यही पवित्रात्मा मनुष्य के चित्त मे भले बुरे के विवेक को अधिक प्रकाशित करता है और उस के अन्तःकरण को शिक्षित करता है कि बुरे को त्याग करना और भले का पीछा करना । फिर मनुष्य को उस के पापों से सचेत कर देता है और जब इस प्रकरण में उस की निर्बलता को भली भांति उस पर प्रगट किया है तब प्रभु ईसा मसीह के आश्चर्य्य कर्म्मों और गुणों को जो उस की मुक्ति के लिये उपस्थित और सिद्ध हैं बतलाता है और इस रीति से प्रभु पर बिश्वास लाने में उस की सहायता करता है । फिर जब बिश्वास

से यह सहायता अंगीकार किई जावे तो बिश्वासी के चित्त को अपने ईश्वरीय गुण से संपूर्ण बदल डालती है यहां तक कि जिस प्रकार इन्द्रियवाले मनुष्य के चित्त से कई प्रकार के घिनौने और अपवित्र काम निकलते हैं उसी प्रकार इस नये मनुष्य के चित्त के भण्डार से कई प्रकार के भले काम निकलते हैं। क्योंकि इन्द्रियवाले मनुष्य के काम ऐसे क्रूर और घिनौने हैं कि पुण्यात्मा लोगों के बीच उन का बर्णन भी नहीं होता पर पवित्रात्मा का फल जो है सो प्रेम प्रसन्नता कुशलता धैर्य्य सुकृता-भिलाषता भलाई बिश्वास संयम नम्रता इत्यादि और उन्हों ने जो मसीह के हैं शरीर को उस के बुरे स्वभावों और अभिलाषों समेत क्रूस पर खैंचा है। अर्थात् जिस रीति प्रभु ईसा मसीह लकड़े पर टांगा गया और अत्यन्त दुःख उठायके मर गया उसी रीति उस के सच्चे शिष्य आत्मिक प्रकार से अपने पापमय इन्द्रियवाले स्वभाव को प्रभु पर बिश्वास लाके पवित्रात्मा की सहायता से बड़ा दुःख देके मार डालते हैं।

इतने में भोजन हो चुका था और उस के लिये सभों ने प्रभु की स्तुति और धन्यबाद किया इस के पीछे सांझ का भजन करके सब के सब नींद करने को अपने अपने बिस्तरों पर लेट गये।

इति मुमुक्षुवृत्तान्तबर्णने सप्तदशोऽध्यायः।

अठारहवां अध्याय।

इस अध्याय में ससारी अर्थकारक से कुछ और शिक्षा पाता है और अन्त को बपतिस्मा अर्थात् मसीही जलसस्कार ग्रहण करके अपनी यात्रा को चलता है।

तब मैं ने देखा कि दूसरे दिन बड़े भोर को जब सब

लोग जाग उठे थे तब अर्थकारक ने अपने मित्रों से कहा कि उपवन का सुख भोग करने को चलो। अर्थकारक के उपवन अत्यन्त रमणीय और अनेक प्रकार के सुन्दर फलों और सुगन्धवाले फूलों से भरे थे और उन के चैागान भी अत्यन्त हरे थे और उन के खेत पककर काटने के योग्य हो रहे थे। और मैं अर्थकारक और उस के मित्रों को जब वे उपवन में भ्रमण कर रहे देखा किया और देखो कि वे भ्रमण करते करते एक खेत के पास आये जहां जलपाई के तीन वृक्ष लगे थे। उन मे से पहिला यद्यपि बड़ा मोटा और लम्बा और हरा था तथापि फलहीन था और दूसरे में कली निकलने लगी थीं और उस के देखने से आशा हुई कि अपने ऋतु मे भली भांति फलेगा और तीसरा फलों के बोझ के मारे भूमि पर झुक गया था।

तब मैं ने देखा कि अर्थकारक ने अपने भाइयों को सैन किई कि इन पेड़ों की ओर ध्यान करें और कहा देखो किस प्रकार ये एक दूसरे से भिन्न हैं। इस के पीछे उस ने उन से पूछा कि इन के भिन्नता होने का क्या कारण है क्योंकि हम देखते हैं कि वे तीनो एक ही खेत मे लगे हैं और ओस भी तीनों पर समान पड़ी और सूर्य्य का ताप और छांह भी तीनों पर समान पड़ती है।

अब मैं ने जाना कि मण्डली में से एक भी न था जो इस प्रश्न का उत्तर दे सके तब अर्थकारक मुसकुराया और उन्हें पेड़ों के समीप ले जाके दिखलाया कि उन दो पेड़ों की मूल डालियां काटी गईं और दूसरी डालियां अर्थात् फलयुक्त जलपाई की डालियां उन मे दो सीमा किई गई थी। परन्तु यह पेड़ जिस में फल नहीं लगा था अपनी पहिली ही दशा मे था अर्थात् जंगली जलपाइयों

का पेड़ और केवल इस के योग्य था कि काटके जलाया जावे । अर्थकारक बोला कि इसी प्रकार सब मनुष्य उत्पत्ति से निष्फल और केवल नरक की आग में पड़ने के योग्य है परन्तु जब ईश्वर की सामर्थ्य से मनुष्य की पहिली अर्थात् पापमय प्रकृति से एक नई अर्थात् ईश्वरीय प्रकृति आ जाती तब मनुष्य आत्मिक रीति से उत्पन्न हो हर एक प्रकार की भलाइयों का काम अधिक करके प्रगट करने लगता है ।

इतने मे एक उस के मित्रो मे से स्थलकमल का फूल और एक गुलाबपुष्प को तोड़के अर्थकारक के आगे लाया और देखो वे अत्यन्त सुन्दर और ससुगन्ध थे । उन को देखके अर्थकारक ने कहा कि जब हम अपने मुक्तिदाता के लोहू से अपने पापो के मैल से धोये जाते और शुद्धता का पाहनावा पहिन लेते तब हम स्थलकमल के तुल्य निष्कलंक और गुलाबपुष्प के सदृश ससुगन्ध हो जाते है और जब कोई अपनी विद्यावानी अथवा चतुराई से उन फूलो की सुगन्धि और सुन्दरता को अधिक कर सके तब अहंकारी अपने भले कर्म्मों से हमारे मुक्तिदाता की उस शुद्धता को जो पुण्यात्मा लोगो को विश्वास के द्वारा प्राप्त होती है बढ़ा सकेगा ।

तब वे एक सुन्दर दाख के पेड़ के पास गये जिस की डालिया अङ्गरो के गुच्छों से छिपी हुई थीं ऐसा कि उन्हो ने थोड़े से दाख तोड़के खाये उस के दाख निपट मीठे थे । तब अर्थकारक पेड़ के आस पास घूमा और क्या देखता है कि एक उस की डाली जड़ से चिर गई थी और देखो कि उस डाली के गुच्छे सूख गये थे और उस के पत्ते मुरझाय गये थे । तब अर्थकारक ने माली को बुलाया और उस के चीरे जाने का कारण पूछा तिस पर माली

ने उत्तर दिया कि एक शत्रु ने यह काम किया है और झटपट एक छुरी निकालके उस ने चाहा कि उस डाली को काटके फेंक देवे परन्तु अर्थकारक ने कहा नहीं नहीं पहिले इसे बाधो कदाचित् यह फिर जुड़के हरी हो जावे क्योंकि टूटे हुए को बाधना भला है इस पर उन्हो ने टूटी हुई डाली को बाधा। इस के पीछे अर्थकारक ने यह पूछा कि उस के साथियो की समझ दाख के पेड़ और उस की डालियों के विषय जो उन्हों ने देखी है कैसी है।

तिस पर संसारी यों बोला कि मैं इस दृष्टान्त की टीका इस पुस्तक से जो मेरे फेट मे बधी है कर सकता हू अर्थात् प्रभु ईसा मसीह ने अपने शिष्यो से कहा है कि दाख का पेड़ मै हू तुम डालिया हो वह जो मुझ मे मिला रहता है और मै उस मे वही बहुत फल लाता है क्योंकि मुझ से भिन्न तुम कुछ नही कर सकते जिस प्रकार डाली विना पेड़ के फल नहीं लाती इसी प्रकार तुम भी विना मेरे कुछ नहीं कर सकते। जो कोई मुझ मे मिला न हो तो वह डाली की भांति फेंक दिया जाता और सूख जाता है लोग उन्हे बटोरते हैं और आग मे झोकते हे और वे जलाये जाते हैं।

अर्थकारक ने कहा हे मेरे भाई तू ने ठीक उत्तर दिया कि प्रभु ही मे होके हम बलवन्त हैं अपनी जाति से हम बलहीन हैं उसी मे होके तो हम जीते हैं अपनी जाति से हम मृतक हैं।

तब अर्थकारक आगे चला और उस के साथी भी उस के पीछे पीछे खेत की ओर गये थोड़ी देर पीछे वे एक स्थान मे जा पहुचे जहा पानी का एक मूल बहके एक छोटे से कुंड के नीचे गिरता था और पहाड़ उस की

दोनों ओर घिरे थे। इस सोते के कीचड़ में एक सूअर पड़ा हुआ लोट रहा था और देखो इसी समय एक बहुत सुन्दर भेड़ी का बच्चा जो पहाड़ के समीप पर खेल कूद कर रहा था संयोग से फिसलके उसी कीचड़ में गिर पड़ा और उसी सूअर के सदृश कीचड़ मे धस गया तब अर्थकारक ने अपने साथियो से कहा कि इस पर थोड़ा ध्यान किया चाहिये।

अब ऐसा हुआ कि जब भेड़ी के बच्चे ने अपने को कीचड़ मे पड़ा हुआ देखा तो वह चिल्लाने लगा तब गड़रिया उस का शब्द सुनके आया और उसे कीचड़ से निकालके उसी सोते के पानी से धोया और उज्ज्वल स्थान मे खड़ा किया जब वह चला तो उस ने पुकारा और भेड़ी के बच्चे ने उस का शब्द पाहचाना और उस के बुलाने पर उस के पीछे पीछे चला गया और पहाड़ पर अपने चरने के स्थान मे जा पहुचा। इतने में सूअर का रक्षक भी अपनी झोपड़ी से जो उसी पहाड़ के नीचे थी निकलके आया और उस सूअर को खैंचके कीचड़ से निकाला और उसे धोया और अपनी ओर को चला गया और देखो ज्यो ही वह चला गया तो सूअर फिर घूमके कीचड़ मे जा गिरा और लोटने लगा और झटपट आगे से भी अधिक मैला हो गया तब अर्थकारक और उस के साथी हंसने लगे। उस समय अर्थकारक ने जैसा उस का चलन था उस वृत्तान्त से भी एक शिक्षा की बात निकाली अर्थात् उस ने कहा वह अपवित्र पशु जो धोये जाने के पीछे फिर कीचड़ मे लोटने लगा उस इन्द्रियवशीभूत मनुष्य के तुल्य है जो व्यवस्था को डर पाके पाप से हाथ उठाता है परन्तु फिर उस मे औसर पाके लौलीन हो जाता है। जो मनुष्य पवित्रात्मा के

महत्व से नया उत्पन्न हुआ अर्थात् आत्मिक रीति से द्विज हुआ यद्यपि अपनी निर्बलताई और अपवित्रता के कारण से कभी कभी परीक्षा मे पड़ जाता तौभी उस भेड़ी के बच्चे के तुल्य जिस की दशा अभी हम ने देखी है यह उस के स्वभाव से भिन्न है कि कीचड़ मे पड़ा हुआ लोटा करे। वह अपनी कष्ट की दशा से उस बड़े गड़रिया और प्राणो के रक्षक को पुकारता है जो उस की पुकार सुनता है और उसे छुटकारा देता है और जीते जल से उसे धोता है और सुथरे चराइयो की ओर जाने की उस की शिक्षा करता है।

फिर वहा से अर्थकारक उन को एक पहाड़ पर ले गया जिस पर ताड़ के बहुत से पेड़ लगे हुए थे उस ने कहा देखो इन ताड़ो के पेड़ो के कैसे सीधे प्रकाड हैं और कैसी वे अपनी सुन्दर चोटियो को आकाश की ओर ऊंची करते जाते है यह पेड़ उस विश्वासी मसीही के तुल्य है जो पृथिवी के पदार्थों की ओर नही झुकता पर सदा स्वर्ग के पदार्थों के प्राप्त करने के लिये यत्न करता है।

जब वे पहाड़ पर एक थोड़ी दूर तक चढ़ गये तब अर्थकारक ने उन्हे एक पेड़ की ओर जो और पेड़ो से ऊंचा था सैन करके कहा कि इस पर ध्यान करो। और देखो कि यह पेड़ मुरझाय रहा था वह बड़े बड़े पत्ते जिन से उस पेड़ के लिय एक रमणीय मुकुट बन गया था सूखके श्याम हो गये और लटक रहे थे और उस का सीधा प्रकाड कुम्हलाके सूख गया था। अर्थकारक ने कहा कि एक समय वह पेड़ इस उपवन के सब पेड़ों में रमणीय था बरन उसी से इस उपवन की शोभा थी परन्तु जिन्हों ने ताड़ी निकालने के लिये उस को छेदा है ऐसा गहिरा छेद लगाया है कि उस के कलेजे तक घाव पहुंच गया

जब वे पहाड़ पर एक थोड़ी दूर तक चढ़ गये तब अर्थकारक ने उन्हें एक पेड़ की ओर जो और पेड़ों से ऊंचा था सैन करके कहा कि इस पर ध्यान करो। देखो १९० पृष्ठ।

यह लोगों को अपना रस पिला पिला कर मर गया है उस की शोभा उतर गई उस का मुकुट सिर पर से गिर पड़ा चारों ओर से वह चकनाचूर हो गया अब उस की आशा टूट गई ।

अब मैं ने जाना कि अर्थकारक को अपने शिष्यों से इस दृष्टान्त की टीका करनी कुछ आवश्यक न थी क्योंकि जब वे उस पेड़ को देख रहे थे तो उन की आंखों मे आंसू भर आये । तब अर्थकारक ने कहा कि ईश्वर अनुग्रह और बिन्ती का आत्मा उंडेलेगा और वे उसे जिसे उन्हों ने छेदा है देखेंगे और वे उस के लिये बिलाप करेंगे जैसे कोई अपने एकलौते पुत्र के लिये बिलाप करता है और वे उस के लिये ऐसे दुःखी होंगे जैसे कोई अपने पहिलौठे के लिये दुःखी होता है ।

तब संसारी ने अर्थकारक से कहा कि जो बातें आप कहते हैं सो धर्म्मपुस्तक की बातें हैं कि नहीं क्योंकि मैं ने उन को मंगलसमाचार की पुस्तक मे नहीं पढ़ा है उन का अर्थ भी अच्छी रीति से नहीं समझता हूं परन्तु ऐसा सूझ पड़ता है कि वे प्रभु ईसा मसीह के बिषय मे होंगे ।

अर्थकारक ने उत्तर दिया कि इस मे सन्देह नहीं है कि ये बातें यद्यपि मंगलसमाचार की पुस्तक मे नहीं लिखी तथापि प्रभु ईसा मसीह के बिषय मे हैं प्रभु के अवतार लेने से पांच सौ बरस आगे ये बातें लिखी थीं और जकरिया नाम एक यहूदी भविष्यद्वक्ता के पुस्तक मे मिलती है । कितने एक ऐसे भविष्यद्वक्ता यहूदी लोगों मे सनातन से आये जिन की पुस्तकें पवित्र बैबिल अर्थात् धर्म्मपुस्तक मे संयुक्त हैं उन्हों ने पवित्रात्मा की शिक्षा से यहूदी लोगों की ओर और देशों और राजों की आनेवाली दशा अनेक प्रकार से बताई और विशेष करके प्रभु का

अवतार लेने का और मर जाने का और उठ जाने का समाचार और उस के धर्म्म के सारे संसार मे फैल जाने और प्रबल होने का समस्त वर्णन बहुत बरस आगे से किया । उस अध्याय मे जिस की दो एक बाते मैं ने अभी सुनाई है भविष्यद्वक्ता कहता है कि अन्त को यहूदी लोग जो इन दिनो मे अपने पाप और अविश्वास के कारण ससार के सारे देशो मे तितर बितर हो गये अपने देश मे लौट आवेंगे और तब परमेश्वर उन पर अनुग्रह और बिन्ती का आत्मा उडेलेगा और वे विश्वास की दृष्टि से उस पर जिसे उन्हों ने छेदा अर्थात् प्रभु पर देखेगे और पछताय पछतायके और रो रोके बिलाप करेगे । मै ने इस लिये इस समय ये बाते कहीं कि हमारे इन भाइयों ने जब इस ताड़ के पेड़ मे प्रभु का एक प्रसिद्ध दृष्टान्त देखा और उस पर दृष्टि किई तो बिलाप किया क्योंकि जिस रीति यह पेड़ ऐसा छिद गया कि अपना रस दे देके सूख गया है और यो मानो कि अपना प्राण अपने छेदने-वालो के सुख के लिये बहा दिया उसी रीति हमारे प्रभु ने भी अपने मारनेवालो अर्थात् पापी मनुष्यो की मुक्ति के लिये बड़ी प्रसन्नता से अपना प्राण दे दिया ।

तब संसारी ने कहा कि अब तो यह बातें भली भांति मेरी समझ में आ जाती हैं और इस दृष्टान्त से उस पुण्य प्रतापी प्रभु की अनन्त दया और प्रेम कैसा प्रकाशित देख पड़ता है अब लों मै ने सत्य प्रेम का भाव तनिक भी नहीं समझा था निःसन्देह प्रभु का प्रेम एक ऐसे सागर के तुल्य है जिस की न थाह है न सीमा । अब तो मेरा मन उस्से ऐसा लग गया है कि जब लों मै उस की आज्ञा न मानू और बपतिस्मा पाने से उस का शिष्य न होऊं तब लो मै सुख न पाऊंगा । आगे तो

विशेष बर्णो की चिन्ता के कारण मैं इस्से रुक गया था क्योंकि प्रभुदास ने हम से ठीक कहा कि यह चिन्ता हिन्दुओं के मन मे निपट उपद्रवी होती है परन्तु मै अब देखता हूं कि यह केवल एक अभिमानी और सांसारिक चिन्ता है और प्रभु के प्रेम के बल से यह अब अधीन हो गई । सो मैं अब आप से बिन्ती करता हूं कि जब हम आप के गृह पर लौटके पहुंचें तभी बिना देरी हमें बपतिस्मा दीजिये ।

अर्थकारक ने उत्तर दिया कि यदि तुम सारे भाइयों के सन्मुख प्रभु का स्वीकार करने पर सिद्ध हो और अपने सारे मन से इस बात की इच्छा करते हो तो हम बड़े आनन्द से तुम को बपतिस्मा देंगे ।

तब मैं ने देखा कि जब अर्थकारक और संसारी अपने साथियों के समेत घर की ओर चले जाते थे तब संसारी धर्म्मपुस्तक के उस वृत्तान्त के बिषय मे जो अर्थकारक ने उस से कहा था प्रश्न करने लगा कि मंगलसमाचार को छोड़ धर्म्मपुस्तक में कितनी और कैसी पुस्तकें संयुक्त हैं ।

अर्थकारक ने उत्तर दिया कि धर्म्मपुस्तक के दो बड़े भाग हैं एक जो प्रभु के अवतार लेने के आगे लिखा था दूसरा जो उस के पीछे लिखा था । पहिले का नाम प्राचीन नियमपत्र दूसरे का नाम नवीन नियमपत्र और इनजील अर्थात् मंगलसमाचार है । पहिले मे उन्तालीस अलग अलग पुस्तकें संयुक्त हैं जो तीस एक मनुष्यों के हाथ से एक सहस्त्र बरस के समय में लिखी गईं इन में से सब से पिछली पुस्तक प्रभु के अवतार लेने से चार सौ बरस आगे लिखी थी । नवीन नियमपत्र मे सत्ताईस अलग छोटी बड़ी पुस्तकें हैं जो नौ मनुष्यों के हाथ से और पचास एक बरस के समय मे लिखी थीं इन में से सब से

पिछली पुस्तक प्रभु के जन्म से पंचानवे बरस पीछे लिखी थी। प्राचीन नियमपत्र में इस का वर्णन है कि मनुष्य की उत्पत्ति से लेके प्रभु के अवतार लेने तक परमेश्वर ने मनुष्य की मुक्ति के लिये कैसे कैसे उपाय किये हैं पहिली पांच पुस्तकों का मूसा आचार्य्य से रचित होना प्रसिद्ध है इन में सृष्टि का आरम्भ मनुष्य का पापी और भ्रष्ट हो जाना संसार का जलप्रलय से नाश होना इब्राहीम सत्य पुरुष का परमेश्वर की आज्ञा से ठहराया जाना कि उस के सन्तान से मुक्तिदाता निकलेगा और इस के पीछे उस के सन्तान का जो यहूदी लोग हैं मूसा आचार्य्य के मरने तक संपूर्ण वृत्तान्त लिखा है। फिर बारह और पुस्तकें हैं जिन में यहूदी लोगों के इतिहास लिखे हैं इस के पीछे पांच पुस्तकें हैं जिन में सत्य ज्ञान और भजन और स्तुति का वर्णन है। फिर सत्रह भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें आती हैं ये सब के सब परमेश्वर की ओर से धर्मोपदेशक थे और भविष्यद्वाणी और आश्चर्य्य कर्मों के द्वारा अपने समाचार और शिक्षा को निश्चय और प्रमाणिक करते थे। नवीन नियमपत्र में चार पुस्तकें जो पहिली आती हैं विशेष करके मंगलसमाचार कहलाती हैं क्योंकि इन में चार मनुष्यों के हाथ से जो आप देखनेवाले अथवा देखनेवालों के संगी थे प्रभु ईसा मसीह के जन्म और जीवन और मृत्यु और जी उठने का वृत्तान्त लिखा है। फिर एक पुस्तक है जो प्रेरितों की क्रिया कहलाती है क्योंकि इस में मसीह के स्वर्गारोहण के पीछे उस के शिष्यों के इतिहास तेतीस बरस लों लिखा है। इस के पीछे एक्कीस पत्र हैं जो मसीही धर्म्म के आचार्य्यों के हाथ से शिष्यों के उपदेश के लिये लिखे थे और अन्त में एक भविष्यद्वाणी की पुस्तक है जिस में

मसीही धर्म्म और शिष्यों की मण्डली के इतिहास आगम-ज्ञानी की रीति इस संसार के अन्त लों जब प्रभु दोबारा न्याय करने के लिये आवेगा लिखी है। जब से यह पिछली पुस्तक लिखी थी इन दिनों लों सत्रह सौ बरस से अधिक हो गये और जितनी बातें उस में लिखी हैं कि इतने समय में होनेवाली हैं सब की सब सम्पूर्ण होती आई हैं। इस पुस्तक का नाम प्रकाशित है और इस के लिखने के कितने वरस पीछे प्राचीन और नवीन नियम-पत्रो की ये सब अलग अलग पुस्तके एकही पुस्तक मे जो वैबिल कहलाती है संयुक्त किई गई। इस संपूर्ण पुस्तक के लिखने मे सोलह सौ वरस बीत गये और चालीस मनुष्य भिन्न भिन्न देशों के निवासी भिन्न भिन्न भाषाओं के बोलनेवाले छोटे बड़े विद्वान और अविद्वान राजा प्रजा पण्डित सेनापति गड़रिये मछवे इत्यादि इस के लिखने-वाले थे। फिर भी यह सम्पूर्ण पुस्तक एकही दिखाई देती है और उस की समस्त बातें आपस मे मेल और समानता रखती हैं उस का अभिप्राय आरम्भ से अन्त लो एक सा है और ध्यान करने से बुद्धिमान को निश्चय होगा कि इस का एकही लिखनेवाला है अर्थात् परमे-श्वर क्योंकि और किसी द्वारा इस की रचना अनहोनी देख पड़ती है। इस की ऐसी दशा है जैसे किसी अत्यन्त बड़ा राजगृह अथवा मन्दिर का बनाना राज और बेलदार जब नेव खोदते और पत्थर धरते तो नहीं जानते कि यह कैसा घर होगा निर्माणकारक की आज्ञा के अनुसार अपना अपना काम करते हैं। परन्तु निर्माणकारक आगे से जानता है कि ऐसा होगा क्योंकि उस का चित्र अपने पास खींच रक्खा और इस के अनुसार आज्ञा देता है और जब घर बन चुका तो सब कोई देख सकता है कि

यद्यपि बहुतेरे मनुष्यों के हाथ इस में लगे थे तथापि एक ही मनुष्य की बुद्धि से इस का निर्माण हुआ। इसी रीति इस बड़ी पुस्तक के लिखनेवालो ने पवित्रात्मा की शिक्षा से ऐसी ऐसी बातें लिखी हैं जो अपने अपने समय के लिये ठीक और यथार्थ थीं परन्तु नही जानते थे कि इस का अन्त कैसा होगा। अब तो यह सम्पूर्ण पुस्तक समाप्त हुई और हम देख सकते हैं कि उस के अलग अलग भाग आपस में संबन्ध रखते हैं और सभों का अभिप्राय एकही है। परन्तु तुम अपने निश्चय के लिये जाचके देखो मैं तुम को प्राचीन नियमपत्र की एक पुस्तक दूंगा और इस के साथ एक छोटी पुस्तक भी दूंगा जिस का नाम ईश्वरोक्तशास्त्रधारा है उस में इन सब बातों का वर्णन अत्यन्त निर्मलता के साथ लिखा है।

इतने मे वे अर्थकारक के घर पर आ पहुचे और अर्थकारक ने सब लोगों को एकट्ठा करके और एक बरतन मे जल मगायके संसारी को सब लोगों के बीच मे खड़ा किया और उससे कहा कि हे भाई तू चाहता है कि प्रभु ईसा मसीह के नाम पर बपतिस्मा पावे सो अब मेरी बिन्ती यह है कि हम सभो के सन्मुख बतलाय दीजिये कि इस पवित्र नियम पर चलने और प्रभु की आज्ञा मान्ने की इच्छा किस लिये करते हो।

संसारी ने उत्तर दिया मैं इस लिये यह चाहता हूं कि मैं अपने को एक पापी मनुष्य जो नाश होने के योग्य है जानता हूं और मुझे निश्चय है कि पापी मनुष्य का अकेला मुक्तिदाता प्रभु ईसा मसीह है क्योंकि वही पूर्णब्रह्म का अकेला अवतार है जिस ने संसार के पाप के प्रायश्चित्त मे अपना प्राण दे दिया।

तब अर्थकारक ने उस्से पूछा कि क्या तुम ऐसा जानते

हो कि प्रभु के नाम पर बपतिस्मा पाने से हमारी मुक्ति निश्चय होगी ।

संसारी ने यह उत्तर दिया । मै ऐसा नही जानता हू क्योंकि निरे जल से मेरा मन शुद्ध नही हो सकता है अपनी मुक्ति के लिये केवल प्रभु ईसा मसीह के प्रायश्चित्त और मध्यस्थता पर विश्वास लाता हूं । परन्तु प्रभु की आज्ञा है कि जो मेरा शिष्य होने चाहता है सो बपतिस्मा पावे जिस्से अपना विश्वास औरो पर प्रगट करे और मैं भरोसा रखता हू कि प्रभु की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मै विश्वास से इस पवित्र नियम को मानू तो प्रभु का अनुग्रह मुझ को प्राप्त होगा और जिस रीत कि जल से मेरा देह शुद्ध होता है उस रीति पवित्रात्मा के गुण से मेरा मन भी शुद्ध होता जायगा ।

तब अर्थकारक ने उस्से पूछा कि क्या तुम्हारे अन्तःकरण का सीधा अभिलाप यह है कि सदा सर्वदा प्रभु का शिष्य रहूगा और मन वाचा काया से उस की आज्ञा मानूगा और निन्दा और विपत्ति के कारण उस्से लज्जित न होऊगा और सासारिक वस्तुओ के लोभ से उस की सेवा न छोड़ूगा और उस के सच्चे शिष्यो से सदा मिला रहूगा ।

ससारी ने यह उत्तर दिया कि मै जानता हू मेरा अन्तःकरण अत्यन्त कपटी और निर्बल है इस लिय उस पर आसरा नही रख सकता हू परन्तु मै प्रभु की बिन्ती करता हू कि उस के अनुग्रह और सहायता से वही चाल जो आंप बतलाते है मै सदा सर्वदा चलता रहूं ।

ससारी के इस उत्तर से अर्थकारक अत्यन्त प्रसन्न हुआ और यह न चाहा कि उस का बपतिस्मा देने मे कुछ ढील लगावे इस लिये भजन और प्रार्थना के पीछे उसे मसीही मण्डली मे पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के

नाम से बपतिस्मा दिया। उस के पीछे उस ने उसे एक प्यारे भाई के तुल्य हाथ पकड़के कहा अब से तू संसारी न कहलावेगा बरन तेरा नाम मसीहदास ख्रीष्टसेवक होगा।

तब मैं ने देखा कि सभा ने जो वहां उपस्थित थे भाई की पदवी देके उसे प्रणाम किया और पहिलौठों की मण्डली और सभा में जिन के नाम स्वर्ग पर लिखे हैं उस के साथी होने के कारण उसे धन्यवाद कहा। और देखो हर्ष के मारे उस मनुष्य का चित्त ऐसी चेष्टा में आया कि वह फूटके रोने लगा और अर्थकारक से उन सभों से जो उस के साथ थे कहने लगा कि मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि सदा मेरे लिये आशीर्बाद मांगो कि मेरा मुक्तिदाता अन्त तक मेरे साथ रहे।

तब मैं ने स्वप्न में देखा कि मसीहदास अपनी यात्रा में आगे जाने को अत्यन्त अभिलाष करता था जिस्से वह अपने पापों के बोझ से छुटकारा पावे और अपने शरीर के कोढ़ से पवित्र हो जावे। क्योंकि अर्थकारक ने उसे कहा था कि मेरी यह सामर्थ्य नहीं है कि पापों के कोढ़ से तुझे पवित्र करूं जैसा लिखा है ईश्वर को छोड़ कौन पाप का नाश कर सकता है। इस के पीछे जब अर्थकारक ने उसे कुछ खिला पिलाके उस की यात्रा के लिये अगुवाई किई और उस के लिये आशीर्बाद मांगा तब उस को प्राचीन नियमपत्र और ईश्वरोक्तशास्त्रधारा की पुस्तकें दे दिईं और उस को यात्रा की आज्ञा देके कहा ईश्वर तेरा रक्षक हो और अर्थकारक ने उसे सोने का एक लोटा दिया जिस्से उन कुओं से जो सड़क के छोर पर उसे मिले अर्थात् मुक्ति के कुओं से अपने लिये पानी भरे और इस रीति बिदा होके मसीहदास चला गया।

इति मुमुक्षुवृत्तान्तवर्णने ऽष्टादशोऽध्यायः।

उन्नीसवां अध्याय ।

इस अध्याय में मसीहदास यात्री चलते चलते एक स्थान पर पहुंचता जहां उस का बोझ गिर जाता है और इस के पीछे उसी मार्ग से होके पारतोनमा नाम बूढ़े यात्री से और दो मनुष्यों से भेंट करता है ।

तब मैं ने स्वप्न में देखा कि मसीहदास यात्री उसी राजमार्ग पर चलता रहा न तो दहिनी ओर फिरा न तो बाईं ओर और यद्यपि उस के मुख में मुक्ति पाने का आसरा दिखलाई देता था तथापि उस बोझ के कारण जो उस के कन्धे पर था और जिस्से उस ने अब लों छुटकारा नहीं पाया था वह धीले धीले और कराहता हुआ चला जाता था और कभी कभी उन पुस्तकों को जो उस को मिली थीं देखता था । अब ऐसा हुआ कि प्राचीन नियमपत्र के उस भाग में जो ऐयूब की पुस्तक कहलाती है पढ़ते पढ़ते उस ने उस स्थल को पाया जिस मे यह लिखा है कि हाय मै जानता कि उसे कहां पाऊं जिस्तें मैं उस के आसन लों जाता देख मैं आगे जाता परन्तु वह नहीं है और हट जाता परन्तु उसे देख नहीं सकता बाईं ओर जहा वह कार्य्य करता है परन्तु मैं उसे देख नहीं सकता वह आप को दहिनी ओर ऐसा छिपाता है कि मुझे सूझ नहीं पड़ता परन्तु वह मेरी चाल का मार्ग जानता है जब उस ने मुझे परखा है तब सोने की नाईं मैं निकलूंगा मेरे पांव ने उस के डग को धरा है और उस के पथ को मैं ने धारण किया है और न मुड़ा हूं । ये बातें पढ़ते ही मसीहदास ने कहा कि यही मेरी दशा है मैं भी इसी रीति प्रभु की खोज में हूं हाय कि मै जानता उसे कहां पा सकता । परन्तु ऐसा सूझ पड़ता है कि इस साधू ने जिस की यह पुस्तक है एक दृढ़ मन

किया कि मैं उस के मार्ग पर चलता रहूंगा सो मैं भी ऐसाही करूंगा और मुझे निश्चय है कि यथार्थ समय पर मेरा प्रभु मुझ को दर्शन देगा परन्तु जिस रीति इस पुस्तकवाले ने अपने मन की इच्छा पाने के लिये बिन्ती किई उसी रीति मैं भी प्रभु की बिन्ती करूंगा कि बिलम्ब न करे परन्तु शीघ्रता करके मुझ बेबस पर दया करे ।

तब मै ने देखा कि मसीहदास चलते चलते प्रभु का नाम लेके मन की बड़ी ज्वलन और उद्योग से प्रार्थना करने लगा और ऐसा हुआ कि जब वह अपने प्रभु से यों पुकार करता जाता था और गिड़गिड़ाके उस्से बिन्ती करता था कि हे प्रभु अपने को मुझ पर प्रगट करने को प्रसन्न हो तो अचानक उसे एक छोटा टीला दिखलाई दिया और उस की चोटी पर एक क्रूस था अर्थात् वह क्रूस जिस पर हमारा प्रभु टांगा गया था और उस के समीप पत्थर के चट्टान मे खोदी हुई एक समाधि थी । और मैं ने स्वप्ने मे देखा वह क्रूस बड़ी काली घटा के जो उस पर झूम रही थी छांह में था परन्तु उस के ऊपर का अकाश महत्व की ज्योति से प्रकाशमान था यहां तक कि यात्री की आंखें चैांधाय गईं तब उस ने तकतकी बांधके क्रूस पर दृष्टि किई और आनन्द में मग्न होके चिल्लाता और यह कहता हुआ उस की ओर दौड़ा कि अब मैं ने अपने सत्य मुक्तिदाता को पाया और धन्य हो उस प्रभु का जिस ने अपने को मुझ ऐसे अयोग्य पापी पर प्रगट किया है परन्तु जब वह समीप गया तो कांपने लगा क्योंकि ज्यों ज्यों क्रूस के समीप जाता था त्यों त्यों उस का कोढ़ उस के आंखों तले और भी घिनौना देख पड़ता तिस पर भी वह आगे को बेग करता हुआ दौड़ा गया और जब पहुंचा तो क्रूस के

सामने गिर पड़ा और दोनो हाथो से उसे पकड़के कहने लगा कि हे प्रभु ईसा मुझ पर दया कर क्योंकि मै पापी मनुष्य हूं ।

तब मै ने स्वप्न मे देखा कि जब तक वह क्रूस के आगे पड़ा हुआ बिलाप कर रहा था वे रस्सिया जिन से उस का बोझ उस के कांधे पर बंधा था टूट गईं और वह भारी बोझ तुरंत उस के कांधे में से गिर पड़ा और बड़े बल के साथ लुढ़कता हुआ टीले के नीचे जहा वह समाधि थी चला गया और उस समाधि ने उसे निगल लिया । अधिक यह कि उस के शरीर का कोढ़ अर्थात् पाप का वह अपवित्र कोढ़ जो उस के शरीर से लगा था उसी समय से दूर होने लगा और उस के शरीर पर नया चर्म छोटे बच्चे का सा दिखाई देने लगा । तब मसीहदास भूमि पर से जहा वह क्रूस के सामने पड़ा था उछल पड़ा और विश्वास लाके प्रसन्नता और कुशलता से भर गया और ईश्वर को स्तुति किई । तब मै उस यात्री को देखता रहा कि वह क्रूस के सामने कुछ देर तक ईश्वर की स्तुति करता हुआ यह कहता रहा कि ईश्वर न करे कि मै अपने प्रभु ईसा मसीह के क्रूस को छोड़ किसी और बात पर घमंड करूं बरन मै अपने प्रभु ईसा मसीह के पहचान के भलाई की अपेक्षा सब कुछ टोटा समझता हू मै ने उस के लिये समस्त बस्तुओ का टोटा उठाया और उन्हे कूड़े की नाई जानता हूं जिस्ते मै मसीह को फल मे पाऊं ।

जब वह क्रूस के सामने खड़ा था एक मनुष्य महानुभाव जिस का स्वरूप ईश्वर के पुत्र का सा था आया और उस ने मसीहदास के शरीर पर से उन मैले चीथड़ो को जो वह पहिने था उतारके अच्छे बस्त्र पहिनाये जो हिम

के तुल्य अत्यन्त शुभ्र थे उन से उस की अति शोभा हो गई।

तब यात्री धन्यबाद और प्रसन्नता से भर गया और यह जानके कि यहीं रहना बहुत भला है उस ने चाहा कि क्रूस के नीचे अपना डेरा करे। परन्तु जो कि उस ने ऊपर बुलाये जाने का प्रभु की ओर से अपना पारि-तोषिक नहीं पाया था इस लिये उसे बिना थक जाने अथवा बिश्राम करने के उस की ओर लिपट जाने पड़ा। बरन उसे आवश्यक था कि उस राजमार्ग में बड़े बड़े दुःख और कष्ट उठावे और दृढ़ता से अपनी मुक्ति के उस अगुवा का पीछा करे जो बहुत से पुत्रों को महत्व में लाने के लिये कष्ट उठाके कृत कृत्य हुआ था। यात्री ने इसी लिये अपनी बाट लिई और ईश्वर की प्रार्थना और बड़ाई करता हुआ चला और जब कि वह अपने पापों के बोझ से हलका हो गया था इस लिये सुखस्थान की ओर जाने में उस ने बड़ी फुरती और शीघ्रता के साथ पैर उठाये।

अब ऐसा हुआ कि जब संध्या होने लगी तो वह अपने टिकने के लिये चारों ओर स्थान देखने लगा और उस ने अपने साम्ने बड़ी दूर पर एक बाटिका देखी जो यात्रियों के सुख के लिय सड़क के छोर पर लगी थी और एक पक्का कुवा भी उस के पास बना था। तब उस ने उस स्थान पर जाने में शीघ्रता किई और सूर्य्य डूबते हुए वहां आ पहुंचा तो क्या देखता है कि वही बूढ़ा मसीही जो पहिले उसे मिला था पेड़ों के नीचे घुटने टेकके संध्याकाल का भजन कर रहा है। उस बूढ़े मनुष्य ने मसीहदास को न देखा जब तक कि वह उस के पास न आया परन्तु ज्योंही उस ने उसे देखा झटपट प्रार्थना

से औसर पाके उस की ओर दौड़ा और मै ने देखा कि दोनो आपस में भाइयों की भाति अंगमाल करके मिले। तब मसीहदास ने कहा हे मेरे भाई मेरे उस पापसंयुक्त क्रोध को कि जो थोड़े दिन हुए मै ने तुम्हें छोड़के दिखलाया क्षमा करो क्योंकि मैं न उस समय तक प्रभु को न पहिचाना था इस लिये मेरा चित्त अहंकार से भरा था।

बूढ़े यात्री ने उत्तर दिया। हे भाई इन बातों की चर्चा अब मत करो चाहिये कि हम उन पदार्थों को जो पीछे छूट गये हैं भूलके उन कामो का जो हमारे आगे हैं पीछा करें और जो कि हम ऐसी प्रसन्नता के साथ फिर मिले है तो आओ हम आपस में मैत्री करके मसीही भाइयो के तुल्य अपनी इस अवशिष्ट यात्रा को काटें क्योंकि जैसा हमारे एक शरीर मे बहुत से अंग हैं और एक एक अंग का एक ही काम नही ऐसे ही हम जो बहुत से हैं मिलके प्रभु ईसा का एक शरीर हुए हैं और आपस मे एक दूसरे का अंग।

तब मसीहदास और बूढ़े मसीही बारतोलमा ने अपना बिछौना पेड़ों के तले भूमि पर बिछाया और कूये से पानी निकालके बैठे और जो कुछ उन के पास खाने को था आपस मे बांट खाने लगे। और जब वे खा रहे थे आपस मे अपना अपना वृत्तान्त जब से वे धर्मशाला मे एक दूसरे से भिन्न हुए थे वर्णन करने लगे और उस शेष दिवस को प्रार्थना और भजन मे व्यतीत करके वे लेट रहे और सो गये जब तक कि तड़का हुआ और अंधियारा जाता रहा।

प्रातःकाल को दोनों यात्री उठ अपना मार्ग लिये और वे जब चले जाते थे आपस मे प्रसन्नतापूर्वक और फलदायक बाते करते जाते अब मै ने जाना कि भाइयो

के लिये क्या सुन्दर और प्रसन्नता की बात यह है कि आपस में प्रेम के साथ दिन काटें । और मसीहदास अपने मित्र की बातों से अत्यन्त प्रसन्न था क्योंकि बूढ़ा यात्री उस्से ईश्वर के कर्म्मों में अति प्रवीण था । अब मार्ग में जो वे बातचीत करते थे उस का प्रयोजन यह था कि प्रभु ईसा के क्रूस से पापियों को कौन सा फल प्राप्त होता है ।

पहिले मसीहदास ने कहा कि हे भाई क्याही आश्चर्य्य की बात है कि प्रभु पर बिश्वास की दृष्टि लगाने से पापी के मन में कैसा सुख और चैन आ जाता है । कल से मैं एक नया प्रकार का मनुष्य बन गया हूं मेरे पाप का बोझ तो अत्यन्त भारी था और उस के कारण मैं दबा हुआ चला जाता था परन्तु जब लों कि मैं ने उस्से छुटकारा न पाया तब लों मैं भली भांति नहीं जानता था कि कितना भारी है । अब मुझ को ऐसा सूझ पड़ता है कि मानो एक पहाड़ मेरे कान्धे पर से उतर गया और अब मैं हारण के तुल्य दौड़ने को अथवा पक्षी की नाई उड़ने को सिद्ध हूं क्याहा धन्यवाद और स्तुति आनन्द की बात है । उस महानुभाव प्रभु के कैसे गुण होंगे जिस के दर्शन पाने से ऐसा फल हुआ क्योंकि यद्यपि मेरे मन में अब दृढ़ आसरा है कि प्रभु के पुण्य प्रताप से मेरे समस्त पाप क्षमा किये गये हैं तथापि इस चैन के कारण मेरा मन पाप की बुराई के विषय में तनिक भी निश्चिन्त नहीं हो गया बरन आगे से भी मैं उस को एक अत्यन्त बुरी और घिनौनी वस्तु जानता हूं क्योंकि उस के कारण मेरे प्रभु को ऐसा अनन्त कष्ट उठाने पड़ा । परन्तु मैं भली भांति बतलाय नहीं सकता हूं कि जब प्रभु के क्रूस के समीप मैं पड़ा हुआ था तो मेरे मन में कैसा मीठा शोक

और प्रेम और आनन्द और स्तुति और लालसा एक संग अकस्मात् उत्पन्न हुईं मुझ को ऐसा ज्ञान हुआ कि अब लों मेरा अन्तःकरण पत्थर की नाईं ठंडा और कड़ा हो रहा है अब तो पिघलने लगता है और नम्र जाम और प्रेम से परिपूर्ण हो जाता है ।

वारतोलमा ने कहा कि सब भाई प्रभु की प्रायश्चित्तवाली मृत्यु से हम दो प्रकार का फल पाते हैं पहिला यह कि ईसा की मृत्यु से हम पापों का संपूर्ण और योग्य मोक्ष पाते हैं और दूसरा यह कि उस के लोहू बहाये जाने से हम को पवित्रात्मा का वह पारितोषिक मिलता है जो हम को सामर्थ्य देता है कि उस की सहायता से हम अपनी इन्द्रिय सम्बन्धी प्रकृति का साम्ना करें । और यद्यपि जब तक हम इस शरीर में हैं शरीरी दुर्बलता से हम संपूर्ण भिन्न नहीं हो सकते तौभी पवित्रात्मा के पाने से हम आगे की भांति पाप के बन्धन में नहीं रहते ।

मसीहदास ने उत्तर दिया । मैं जानता हूं कि यह घिनौना कोढ़ का रोग जो मेरे शरीर मे है मरने के दिन तक सर्वत्र चंगा नहीं हो जायगा फिर भी मैं भरोसा रखता हूं कि वह दिन प्रतिदिन कुछ भला चंगा होता जायगा क्योंकि मैं देखता हूं कि कल के दिन से मेरा कोढ़ कुछ थोड़ा कम हो गया और मेरा चमड़ा छोटे बच्चे की भांति स्वच्छ और कोमल होता जाता है ।

वारतोलमा ने कहा । हे मेरे मित्र यह मानो तेरे व्याह होने के दिन हैं तेरी प्रीति अभी नई और तात्कालिक है और अभी तक तू कष्ट पाने और सताये जाने से अथवा अपने प्रभु के अनुपस्थिति से परीक्षित नहीं हुआ है इसी से बहुतेरों के चित्त ठंडे पड़ गये है और वही फल तेरे चित्त मे भी हो सकता है । तू अभी तक अपने

मन के कपट से भली भांति सज्ञान नहीं हुआ है वह अपवित्र कोढ़ और पाप का कलंक जो हम ने अपने बाप दादों से पाया है और जिस ने हमारी आभ्यन्तरीय दशा में संपूर्ण शरीर को मलिन किया निश्चय है कि कभी कभी हमारी इस नई दशा में भी फूटा करे जब तक कि यह पापी शरीर समाधि में सड़ न जावे ।

मसीहदास बोला कि सच भाई और इस दशा में हमारी प्रसन्नता इस संसार में अत्यन्त असम्पूर्ण रहेगी ।

बारतोलमा ने कहा हे भाई इस में कुछ सन्देह नहीं है क्योंकि मसीही की अवस्था इस संसार में एक लड़ाई की भांति है जो उस की नई प्रकृति और पुरानी मनुष्यता के बीच नित्य लगी रहती है और यद्यपि कभी कभी उस के मन की दशा ऐसी प्रकाशमान और प्रसन्न होती कि उस मे कोई विदेशी प्रवेश नहीं कर सकता फिर भी कभी कभी उस की बुरी चेतना और रसिकाई के काम उसे अन्धकार और मृत्यु की छांह से छिपा लेते । परन्तु जब न्याय के दिन पापी लोग जिन्हों ने इस संसार में सुख और चैन के साथ निर्वाह किया है अपनी अधर्मता का दंड पाने के लिये उठेंगे तब मसीही अपनी निर्बलता से छुटकारा पाके और अपने मुक्तिदाता की समता पर जागके अनन्त समय तक प्रभु के संग प्रसन्न और सुख के साथ रहेंगे । क्योंकि धर्म्मपुस्तक से हम को यह निश्चय होता है कि उस बड़े पुनरुत्थान के दिन जब मसीह जो हमारा जीवन है प्रगट होगा तब हम भी उस के साथ महत्त्व की दशा में प्रगट होंगे वह हमारे अधम देह को बदल डालेगा कि उस के तेजस्वी शरीर के समान हो जायेंगे क्योंकि यह सड़नेहार असड़ाहट को पहिनेगा और यह मरनेहारा अमृत को पहिनेगा ।

मसीहदास ने कहा कि जब मैं ये बातें सुनता हूं तो मेरा चित्त मेरा अभ्यन्तर कैसा फूलता है हाय कि मेरे माता पिता मेरी स्त्री और मेरे भाइयों के चित्तों में भी ऐसा ही हर्ष होता जैसा इस काल मेरे चित्त में हो रहा है ।

बारतोलमा ने कहा । हे मेरे भाई तू आ हम उन सभों के लिये जो अन्धकार में घूमते हैं आशीष मांगें जिस्तें ईश्वर अपने मंगलसमाचार की ज्योति उन पर भी चमकावे ।

तब मै ने स्वप्न में देखा कि जब मसीहदास और बारतोलमा इस रीति आपस में बातचीत करते करते चले जाते थे तो उन्हों ने अपने सन्मुख दो मनुष्यों को देखा जो उसी ओर को जाते थे । परन्तु वे ऐसी रीति पर चलते थे कि उन को देखके दोनों यात्रियों ने बड़ा अचम्भा किया क्योंकि एक मनुष्य लंगड़ा होके बड़ी निर्बलता के साथ चलता था और दूसरा उस को चलने मे रोकता था कभी कभी उस का वस्त्र पकड़के खींचता था कभी कभी उस के आगे खड़ा होके उस को हटाने चाहता था । तिस पर भी उस लंगड़े मनुष्य ने आगे बढ़ने मे कुछ थोड़ा सा यत्न किया और यद्यपि वह एक समय बैठ गया और एक समय अपने साथी को फुसलाने के लिये खड़ा रहा और एक समय फूल तोड़ने को अथवा कोई नई बात देखने की इच्छा से राजमार्ग को छोड़के एक ओर को चला गया तथापि वह बहुत धीरे धीरे आगे बढ़ता तो गया ।

जब मसीहदास ने इन दो मनुष्यों को इस रीति पर चलते देखा तो अपने साथी से कहा कि ये मनुष्य जो हमारे आगे जाते हैं किस प्रकार के हैं क्योंकि मै ने कभी

ऐसे यात्रियों को नहीं देखा क्या उन की अभिलाषा है कि यात्रा के अन्त लों कुशल से पहुंचे मेरे मन मे सन्देह है कि कदाचित् ये सच्चे यात्री नहीं हैं ।

बारतोलमा ने उत्तर दिया कि यदि मैं धोखा नहीं खाता हू तो इन दो मनुष्यों को पहिचानता हूं ये दो भाई हैं और इन के नाम चंचलविश्वासी और अविश्वासी हैं ये हमारे नगर के एक टोला के जिस का नाम चंचलपुर है निवासी थे । मैं जानता हू कि चंचलविश्वासी सच्चा यात्री तो होगा परन्तु अत्यन्त निर्बल और अस्थिर है उस का भाई मेरी समझ मे सच्चा नहीं है अपने भाई के फुसलाने से वह यात्री हो गया परन्तु उस का मन इस यात्रा पर कभी नहीं लगा और अब उस के कारण उस के भाई को राजमार्ग पर चलने मे बड़ी रोक टोक होती है आओ भाई क्या जाने प्रभु के अनुग्रह से हम तुम इस यात्रा में उन की कुछ सहायता कर सकें ।

तब मै ने देखा कि जब बारतोलमा और मसीहदास उन दो मनुष्यों के समीप पहुचे तो उन को प्रणाम किया और बारतोलमा ने उन से कहा कि भला भाइयो इस यात्रा मे तुम्हारी कैसी दशा है आसरा है कि प्रभु में आनन्दित होके चले जाते हो ।

यात्रियों के प्रणाम से और बारतोलमा की इन बातों से अविश्वासी कुछ अप्रसन्न और लज्जित देख पड़ा और सिर झुकायके और मुख फिरायके चुपचाप हो रहा । चंचलविश्वासी ने उत्तर दिया कि ऐसा आनन्द तो थोड़ा बहुत जितना होवे परन्तु यात्रा तो बड़ी कठिन है और हम लगड़े भी हैं और हमारा इतना बल नहीं है कि यात्रा करके बड़े आनन्दित होवे ।

बारतोलमा ने कहा कि सच भाई अपने में होके हम

अत्यन्त निर्बल है परन्तु हमारी निर्बलता से प्रभु का बल संपूर्ण होता है हम को चाहिये कि प्रभु के बल पर विश्वास लाके उस को अपने काम में लावें तब पवित्र पूलुस की रीति हम कह सकेंगे कि जब ही हम अपने मे निर्बल होते हैं तभी हम प्रभु में बलवन्त हैं ।

चंचलबिश्वासी ने उत्तर दिया कि क्या जानें कितनें के लिये यह बात सच होवे अर्थात् ऐसें के लिये कि जिन की दशा भली है परन्तु जब से मै यात्री हो गया तब से मेरी दशा बहुत बुरी हो रही है । पहिले तो मैं लंगड़ा हूं दूसरे मै अति निर्बल हूं तीसरे प्रभु मुझ को बल नहीं देता है चौथे यात्रा बड़ी कठिन है चलते चलते थक जाते हैं और कभी कुछ चैन अथवा बिश्राम कहीं नहीं मिलता है दिन को गरमी है और रात को सरदी मैं ने तो समझा था कि इस राजमार्ग पर चलने में बड़ा सुख मिलेगा परन्तु दुःख को छोड़ मैं ने कुछ और नहीं पाया है ।

तब मसीहदास ने उस्से कहा कि हे मेरे मित्र मैं तो बहुत दिनो का यात्री नहीं हूं परन्तु जब से मैं इस राजमार्ग पर चला आया हूं तब से मै ने बड़ा सुख पाया है । एक बार तो मै ने भी दुःख उठाया अर्थात् जब राजमार्ग को छोड़ एक ओर को भटक गया क्या तुम मार्ग से होके सीधे चले जाते हो क्योंकि मुझ को तो ऐसा सूझ पड़ा कि फूल तोड़ने के लिये अथवा और किसी इच्छा से तुम अभी मार्ग को छोड़ गये थे ।

चंचलबिश्वासी ने उत्तर दिया कि कोई कोई समय तो अपने भाई को आनन्दित करने और अपने मन को बहलाने के लिये मैं ऐसा करता हूं क्योंकि इस रीति से यात्रा का क्लेश कुछ मिट जाता है और जो मैं ऐसा न करता तो मेरा भाई मुझ को सर्वथा छोड़ जाता ।

तब बारतोलमा ने यह बात सुनके उस्से कहा कि अरे भाई जो तुम ऐसा करते हो तो प्रभु तुम को किस रीति से बल देगा क्योंकि उस की आज्ञा है कि आगे बढ़के सीधा चला जाना किसी कारण से किसी ओर को न फिरना। और जो तुम ने कहा कि हम लगड़े और निर्बल हैं सो मैं जानता हूं कि यह तुम्हारी जन्म की बात है इस राजमार्ग पर चलने से नहीं हुआ और यह जो तुम्हारा भाई है कुछ दुर्बल देख नहीं पड़ता है सो किस लिये तुम्हारा उपकार नहीं करता है।

ये बातें कहके बारतोलमा अविश्वासी की ओर देखने लगा और उस्से कहा कि तुम अपने भाई की सहायता करने नहीं चाहते हो हम का ऐसा देख पड़ा है कि तुम उस को रोकते भी थे।

यह बात सुनते ही अविश्वासी बहुत अप्रसन्न हुआ और यात्रियों से कहने लगा कि मैं नहीं जानता हूं किस की आज्ञा से तुम हम पर दोष लगाते हो हम ने तो तुम से कुछ नहीं कहा था तुम जैसे चाहो तैसे चलो और हम को छोड़ दो कि जैसे चाहें तैसे चलने पावें।

तब चंचलविश्वासी अपने भाई के क्रोध और निरादर को देखके डरने लगा कि क्या जाने उस के कारण ये दो यात्री भी क्रोधित हो जायेंगे तब बड़ा बखेड़ा होगा फिर वह यह भी चाहता था कि इन के संग होके यात्रा करें क्योंकि अपने भाई से सहायता के बदले बड़ी रोक टोक पाता था। इस लिये बड़ी अधीनता के साथ कहने लगा कि हे मित्रो उस की बात से अप्रसन्न मत हूजियो इस यात्रा के क्लेश से उस का जी दुःखित हो गया परन्तु मेरी इच्छा है कि आप लोग हमारे संग संग चलिये तो इस यात्रा में हम दोनों का उपकार होगा।

बारतोलमा ने यह उत्तर दिया कि भला जो तुम्हारा जी चाहे तो हम तुम्हारे संग चलेंगे और अपनी सामर्थ्य भर तुम्हारा उपकार करेंगे सो अब तुम चलते चलते हम को बतलाओ कि तुम दोनों किस रीति से इस राजमार्ग पर यात्री हो गये ।

तब मैं ने सुना कि चंचलबिश्वासी ने चलते चलते बारतोलमा और मसीहदास को बतलाया कि हम दो भाई हैं हमारे मा बाप चंचलपुर मे रहते थे परन्तु जब हम छोटे बालक थे अकाल के मारे वे दोनो मर गये । उस समय बहुत और लोग भी अपने बालकों को छोड़के मर गये और फिरंगी लोगों ने उन बालकों को एकट्ठा करके पाला पोसा किया और उन की शिक्षा भी किई जिस्तें मसीही धर्म्म को ग्रहण करे । कितनों को जो बहुत छोटे थे और जिन का कोई नातेदार नही मिला बपतिस्मा भी दिया और इसी रीति से मेरे भाई ने बपतिस्मा पाया मैं ने जो उस्से कुछ बड़ा था इस लिये उस समय बपतिस्मा नही पाया क्योंकि उन लोगो ने समझा कि अब तो इस की कुछ बुद्धि अधिक है सो अपनी इच्छा से अंगीकार करे तो भला होगा । थोड़े बरस पीछे मुझे ज्ञान हुआ कि यह धर्म्म सत्य है सो मै ने बपतिस्मा चाहा उस समय मै ने अपने भाई से कहा कि तुम भी हमारे संग राजमार्ग से होके यात्री बनो इस ने इस अभिलाषा से कि इस मे अधिक सुख होगा मेरी बात को ग्रहण किया परन्तु जब से उस ने देखा कि इस यात्रा मे बड़ा दुःख और क्लेश मिलता है तब से यह चाहता है कि हम दोनो लौट जावे । मै जो लंगड़ा और अति निर्बल हूं इस लिये मसीही भाइयो ने मेरा चंचलबिश्वासी नाम रक्खा और भाई को अबिश्वासी कहा क्योंकि वे

जानते थे कि यह सच्चा यात्री नही है सच तो है कि उस का मन इस यात्रा पर नही लगता है और मुझ को चलने मे बहुत रोकता है परन्तु मैं क्या करूं मेरा सगा भाई तो है जब लों वह मुझ को नहीं छोड़ेगा तब लों मै उस को कैसे छोड़ जाऊं।

तब मै ने स्वप्न मे देखा कि जब बारतोलमा और मसीहदास और चंचलबिश्वासी इसी रीति आपस मे बातचीत करते करते चले जाते थे तब अविश्वासी अप्रसन्न और क्रोधित होके उन के पीछे पीछे चला आया और कभी कभी अपने व्यवहार पर अपने भाई को चलने मे रोकता था और उस का नाम पुकारके पीछे की ओर बुलाता था और अपने को दुःखी और घायल बतलायके चाहता था कि भाई मेरी रक्षा करे और इस प्रकार की बात भी कहता था कि अरे भाई इन लोगो के संग किस लिये चलते हो क्या अपने भाई को छोड़ोगे और इस यात्रा मे क्या सुख मिलेगा केवल धोखा की बात है यदि तुम इन मनुष्यो को छोड़के मेरे संग नही चलोगे तो मैं तुम को छोड़के अपने नगर को लौट जाऊंगा वहां तो बहुत अच्छा सुख बिलास मिलेगा।

ऐसी बात सुन्ने से चंचलबिश्वासी का मन बहुत घबरा गया और वह पीछे की ओर देखने लगा परन्तु मसीहदास ने उस को समझाया कि अरे भाई पीछे की ओर मत ताक ऐसा करके तुम सुखस्थान पर कभी नही पहुंचोगे अपना मन प्रभु पर स्थिर करो क्योंकि प्रभु के वचन में लिखा है कि चंचल मनुष्य अपने सारे मार्ग मे डगमगाता है और प्रभु ने भी कहा है कि जो कोई अपने भाई को मुझ से अधिक प्यार करता है सो मेरे योग्य नही है।

इस प्रकार की बात कहने से बारतोलमा और मसीह-

दास ने जब प्रयोजन था चंचलविश्वासी के मन को दृढ़ और बलवन्त किया जिस्तें राजमार्ग पर सीधे चलते रहें। और मैं ने देखा कि यद्यपि लंगडा और निर्बल होने के कारण वह उन से बहुत धीरे धीरे चलता था तथापि उन्हों ने आगे बढ़के उस को नहीं छोड़ा क्योंकि बारतोलमा ने मसीहदास से कहा था कि प्रभु की आज्ञा यह है तुम को जो बलवन्त हो उचित है कि निर्बलों का उपकार करना न कि अपने को प्रसन्न करना और मै ने यह भी देखा कि अविश्वासी उन के थोड़ी दूर पीछे चला आया।

इति मुमुक्षुवृत्तान्तवर्णने एकोनविंशोऽध्यायः।

बीसवां अध्याय।

इस अध्याय में यात्री आगे बढके दो हिन्दुओ से सम्वाद करते हैं और इस के पीछे स्वप्न के अन्त होने के कारण दृष्टि से छिप जाते हैं।

अब मैं ने स्वप्न मे देखा कि जब वे यात्री समान चले जाते थे तो उन्हो ने दो मनुष्यो को अपनी ओर आते देखा तब बारतोलमा ने कहा ये कौन हैं जो सैहून पहाड़ अर्थात् स्वर्गीय सुखस्थान की ओर अपनी पीठ फेरे हुए चले आते हैं।

जब कि वे दोनों मनुष्य कुछ समीप आये और यात्रियों से एक बाण के टप्पे पर दूर थे तब मसीहदास ने उन्हे पहिचाना कि ये दो मनुष्य हैं जिन के साथ मै पहिले अपने नगर में मैत्री रखता था। वे दोनों बड़ी जाति के हिन्दू थे और अपने धर्म्म के चलनों और रीतो के प्रचार करने मे बड़े चतुर थे और नगर के प्रधानों में से थे और जब वे यात्रियों के पास आये तो यात्रियों ने बड़े प्रेम के साथ उन्हे प्रणाम किया परन्तु उन्हों ने इन के

प्रणाम का कुछ आदर न किया केवल उन में से एक ने जिस का नाम हिन्दूमतसूर्मा था मसीहदास से यह बातें कही कि हम ने सुना है कि तू अपने बापदादों के धर्म से फिर गया है सो हम तुझ से सामना करने को आये हैं इस लिये कि क्या तू अपने बड़ों के धर्म्म और रीतों की ओर फिरने को तत्पर हो नहीं तो अपने बचाव की युक्ति कर।

तिस पर वह यात्री बोला हे मेरे पड़ोसियो तुम क्यों मुझ पर ऐसा चढ़ आये हो जैसा कोई शत्रु पर चढ़ाई करता है हे मेरे भाइयो तुम यह जान रक्खो कि मैं तुम से शरीरी हथियार लेके न लड़ूंगा क्योंकि हम यद्यपि शरीर मे चलते है पर शरीर के प्रकार पर नहीं लड़ते इस लिये कि हमारे लड़ाई के हथियार शरीरी नहीं पर ईश्वर के कारण ऐसी शक्ति रखते हैं कि शैतान की दृढ़ गढ़ियो को ढा दें।

इन मनुष्यो मे से उस बड़े प्रधान ने जिस का नाम हिन्दूमतसूर्मा था पूछा कि शैतान की दृढ गढ़ियों से तेरा क्या फलितार्थ है क्योंकि तेरी बाते टीका के योग्य हैं।

मसीहदास ने कहा कि जो कोई बात शीघ्रता के कारण मेरे मुख से ऐसी निकल गई हो कि जिस्से मेरे मित्र अप्रसन्न हुए होवे तो मै बिन्ती करता हूं कि मुझ पर क्षमा कीजिये क्योंकि मैं चाहता हूं कि प्रत्येक मनुष्यो से नम्रता और प्रेम के साथ वार्त्ता करूं कि वे भी मेरे तुल्य हो जावे। यदि तुम यह बात जान्ने चाहते हो कि हम किस कारण से अपने बाप दादों के धर्म्म को छोड़के इस यात्रा पर चले आये हैं तो हम बड़े आनन्द से तुम को बतलावेगे और ऐसा प्रमाण भी लावेगे कि क्या जाने प्रभु के अनुग्रह से तुम भी हमारे संग चलने को अंगीकार करोगे।

तिस पर हिन्दूमतसूर्मा ने ऐसा एक उत्तर दिया जो कठोर और कठिन बातों से भरा था ।

तब मसीहदास ने उत्तर दिया कि मैं ने उस धर्म्म को अंगीकार किया है जिस का कर्त्ता और प्रभु मन का दीन और धीमा था और मै चाहता हूं कि मै भी उसी के तुल्य धीमा हो जाऊं । यद्यपि कोई काल मेरे चित्त के प्रकृति सम्बन्धी अहंकार ऐसे काम करने और ऐसी बात बोलने के लिये जो मसीह के शिष्यों के योग्य नहीं हैं मुझे दुःखित करता है तथापि मैं क्रोध को प्रबल होने न दूंगा ।

उस ने पूछा यह मसीह जिस का बर्णन तुम करते हो कौन है और यह कौन सा धर्म्म है जिस के लिये तुम ने अपने बाप दादों के धर्म्म को छोड़ा है इस के विषय में तुम ने किस्से शिक्षा पाई क्या वे जो हमारी गलियों मे रहते हैं और क्रिस्तान कहलाते है क्या वे बहुधा बेधर्म्म नही हैं क्या उन की स्त्रियां सदा सब लोगो के साम्ने नहीं होती क्या उन के यहा कोई समय भजन का निश्चय है क्या वे सब प्रकार का मांस नहीं खाते और पवित्र और अपवित्र में कुछ बिवेक करते हे ।

मसीहदास ने उत्तर दिया कि जैसे हिन्दुओं में बहुत मनुष्य धर्म्म को बहुत छोटा जानते हैं इसी प्रकार पर मसीहियों में बहुत से है पर हे मेरे भाई मुझे उन से क्या प्रयोजन क्या मेरा न्याय औरों के कर्म्मों से होगा क्या मैं उन के पापों के लिये बांधा जाऊंगा । और मै ने मसीही धर्म्म इस लिये अंगीकार नही किया कि मसीहियों में कोई सुन्दरता वा भलाई है मुझ को तो उस समय इतना भी सुभीता न था कि उन के साथ मेल रखता परन्तु मुझ को ईश्वर के बचन ने इस बात पर शिक्षित

किया और निश्चय दिया। यह कहके उस ने अपनी पुस्तक कांख में से निकाली और चाहा कि हिन्दूमतसूमो के सामने कुछ पढ़ें परन्तु उस ने अपने सामने से हटाके कहा कि क्या हमारे पास भी धर्म्मपुस्तकें नहीं हैं जो प्राचीन-काल में लिखी गई थीं और कौन सा कारण है जिस से तू अनुमान करता है कि मसीहियों की पुस्तक हमारे पवित्र धर्म्म से बहुत भली हैं। तब वह फिर कठोर बचन कहने लगा तिस पर मसीहदास ने कहा हे मेरे भाई कठोर बचन बोलने से मुख बन्द कर स्मरण कर कि कठोर बचन कहने में कोई बात भलाई की नहीं है बरन जिस प्रकरण मे इस का उच्चारण किया जावे उस को हीन कर देता है क्योंकि यह वह हथियार है कि जिस की ओर निर्बल स्त्रियां और मूर्ख मनुष्य जब उन्हे कोई अच्छी युक्ति नहीं सूझती तो तत्पर होते हैं।

हिन्दूमतसूमो के साथी जिस का नाम सत्यबिचारी था कहा। जो यह मनुष्य कहता है सो सच है और इसी लिये हे मेरे भाई मेरी बुद्धि यह है कि इन मसीहियों से उस प्रकरण का निश्चय सावधानी से किया जावे और जो कुछ वे अपने बिषय में बर्णन करें हम बिचार से सुने जो कदाचित् निर्णय देर तक होगा तो आओ हम छायायुक्त स्थान पर चले जिस में इस दो पहर के धूप से सुख पावें।

तब मैं ने स्वप्न में देखा कि हिन्दूमतसूमो इस बात से भी अप्रसन्न हुआ परन्तु अपने मित्र का निहोरा धरने के लिये उस को ग्रहण किया सो वे सड़क के तीर पर ऐसे एक चैन के स्थान पर बैठ गये पर हिन्दूमतसूमो मसीहियों को अपवित्र समझके उन के पास बैठने को प्रसन्न नहीं था इस लिये वह और सत्यबिचारी एक ओर

को बैठ गये दूसरी ओर को धार्त्तोलमा मसीहदास और चंचलविश्वासी और मै ने देखा कि अविश्वासी भी आके अपने भाई के निकट में बैठा ।

तब मै बड़े यत्न से सुन्ने लगा कि ये लोग आपस मे किस प्रकार का सम्वाद करते हैं और पहिले हिन्दूमतसूर्मा ने कुछ अहंकार के साथ मसीहदास से कहा कि तुम तो प्रमाण लाने का गर्व करते हो परन्तु मै जानता हूं कि ऐसे कुकर्म्म के लिये जैसे अपने बाप दादों का धर्म्म छोड़ देना कोई प्रमाण नही हो सकता है और ऐसे पाखण्डी का प्रमाण सुनना भी मुझ को उचित नही है । फिर भी अपने मित्र के निश्चय के लिये मै तुम से पूछता हूं कि अपने धर्म्म को छोड़के इस नये मार्ग पर चलने से तुम किस प्रकार कल्याण का आसरा रखते हो अर्थात् अपने को भ्रष्ट करने मे तुम्हारा क्या लाभ होगा ।

मसीहदास ने उत्तर दिया कि इस राजमार्ग पर चलने से जो कल्याण मुझ को प्राप्त होगा यद्यपि मैं सम्पूर्ण वृत्तान्त कहूं तो इस में बहुत काल बीतेगा इस लिये मैं संक्षेप से कहता हूं कि इस जीवन का कल्याण है और परलोक का कल्याण भी होगा ।

तब हिन्दूमतसूर्मा उस की निन्दा करके और यह कहके हंसने लगा कि इस जीवन का कल्याण कैसा हो सकता है क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम्हारे भाईबन्धु और जान पहिचान जितने थे सब के सब तुम को धिक्कार करते और तुच्छ जानते हैं और तुम्हारी नातेदारी से लज्जित होते हैं ऐसी भली दशा से तुम्हारा बड़ा कल्याण होगा ।

मसीहदास ने उत्तर दिया कि मैं जानता हूं जो अगिले मेरे मित्र थे सो मेरी इस यात्रा के कारण मेरे बैरी बन

गये हैं और इस लिये मै बड़ा शोकित भी हूं परन्तु इस प्रकरण में उन की समझ एक बड़ी भूल है और यद्यपि समस्त संसार भी मुझे तुच्छ जाने और धिक्कार करे और मुझ से लज्जित होवे तथापि जब लों मेरा प्रभु मेरा मित्र रहे और मुझ से लज्जित न होवे तब लों मै हर्षित रहूंगा। क्योंकि उस ने कहा है कि धन्य हो तुम जब सारे मनुष्य तुम को सतावे और दुःख देवे और मेरे नाम के लिये तुम्हारी निन्दा करे क्योंकि स्वर्ग पर तुम्हारा बड़ा फल होगा।

तब हिन्दूमतसूर्मा ठट्ठा करके कहने लगा कि तुम ने तो अभी कहा था कि इस जीवन का कल्याण प्राप्त होगा परन्तु अब स्वर्ग की बात बोलते हो स्वर्ग की बात कौन जानता है और तुम जो अपने धर्म्म से भ्रष्ट हो गये हो स्वर्ग का रंग कब देखोगे पहिले तो हम को बतलाओ कि इस जीवन मे तुम्हारा क्या कल्याण है और जब इस वृत्तान्त से तुम्हारी मूर्खता प्रगट हो चुकी तो इस के पीछे स्वर्ग के विषय मे अपना ज्ञान प्रकाशित करो।

मसीहदास ने अधीनता के संग उत्तर दिया कि जो तुम ऐसे भारी प्रकरण मे संवाद करने चाहते हो तो इस प्रकार का ठट्ठा करना योग्य नही है। और सत्यविचारी ने भी उस को समझाया कि ऐसी कठिन बात करनी बुद्धिमान की चाल नही है इस पर वह उठके चले जाने लगा परन्तु सत्यविचारी ने उस को रोकके यह कहा कि हे मित्र ऐसा तुम को नही चाहिये इस रीति से हम जीतने के बदले हार जाते है हम ने तो इन मनुष्यों से दो एक बात पूछी है सो अब उन का उत्तर सुन्ना चाहिये।

तब वे फिर बैठ गये और मसीहदास बतलाने लगा कि इस जीवन मे जो कल्याण इस मार्ग पर चलने से हम

को प्राप्त होता है सो विशेष करके यह है कि प्रभु की पुण्य प्रतापी प्रायश्चित्तवाली मृत्यु से हम पापमोक्षण पाते हैं और उस की मध्यस्थता से परमेश्वर के संग मिलाप रखते हैं और पवित्रात्मा के गुण से परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदय मे परिपूर्ण होता है और उस के कारण हमारे मन मे बड़ा सुख होता है और इस दशा में पवित्रात्मा की सहायता से हम शुद्धता और पवित्रता में बढ़ते चले जाते हैं और इस जीवन के लिये जितनी सांसारिक वस्तुओं का प्रयोजन होवे इन सभों की प्रतिज्ञा प्रभु के मुख से हम को मिली है। फिर अपने प्रभु की सामर्थ्य से हम मृत्यु पर भी जय पाते हैं क्योंकि जिस रीति वह मरके जी उठा इसी रीति हम भी मरने के पीछे जी उठेंगे और तब ही हमारे सत्य आनन्द और अमूल्य कल्याण का आरम्भ होगा क्योंकि उस समय हम ऐसी दशा मे प्रवेश करेंगे जिस का वर्णन हमारे मुख से नहीं हो सकता है। परन्तु उस का कुछ वृत्तान्त इस पुस्तक में लिखा है और इस के आसरा से हम इस राजमार्ग पर चलते है क्योंकि इस मार्ग के अन्त पर वह अत्यन्त सुन्दर नगर का द्वार है जिस मे हमारा प्रभु अनवोल विभव और महत्त्व के संग राज करता है।

तब सत्यविचारी ने उस्से कहा कि हे मित्र तुम्हारा समाचार जो यथार्थ और प्रमाणिक होवे तो बहुत भला है परन्तु अब मै उस नगर का तनिक वृत्तान्त सुन्ने चाहता हूं जो इस मार्ग के अन्त पर हैं और जिस मे तुम कहते हो कि प्रभु ऐसा राज करता है वह कैसा नगर है।

मसीहदास ने उत्तर दिया कि उस का सम्पूर्ण वृत्तान्त इस पुस्तक में लिखा है और मैं ने उस को पढ़ लिया हैं और पढ़ते पढ़ते अत्यन्त आनन्दित हुआ। परन्तु मै तो थोड़े दिनो का यात्री हूं और इन बातों का स्मरण ऐसी

भली भांति मेरे चित्त में नहीं रहता है कि झट बिना पढ़े उन का ठीक वृत्तान्त कहूं मेरा भाई तो बहुत दिनों से इन बातों का ज्ञानी है वह तुम्हारे लिये अच्छी रीति से बतलावेगा।

तब बारतोलमा उस नगर का वर्णन जो मंगलसमाचार की पुस्तक मे लिखा है करने लगा कि उस में परमेश्वर का तेज है और उस का प्रकाश अति मोल मणि का सा है उस सूर्य्यकान्त के समान है जो स्फटिक का सा निर्मल हो और उस की भीत बड़ी ऊंची है और उस के बारह फाटक हैं और बारह फाटकों के ऊपर बारह दूत हैं और उस भीत की जोड़ाई सूर्य्यकान्त की है और वह नगर चोखे सोने का है निर्मल कांच के समान और उस नगर की भीत की नेवें अनेक प्रकार के मणियों से विभूषित हैं। पहिली नेव सूर्य्यकान्त की दूसरी नीलकान्त की तीसरी लालड़ी की चौथी हरित मणियों की पांचवीं वैदूर्य की छठवीं चन्द्रकान्त की सातवीं सुनहरे की आठवीं पिरोज की नवीं पुखराज की दसवीं गोदन्त की ग्यारहवीं मणिशंखल की बारहवीं मणिबैगनी की। बारह फाटक बारह मोती हैं हर फाटक एक एक मोती का और उस नगर की सड़क चोखे सोने की निर्मल कांच की समान है और वह नगर सूर्य्य और चन्द्रमा से कुछ प्रयोजन नहीं रखता है कि उन से प्रकाशित हो क्योंकि परमेश्वर के तेज ने उसे प्रकाशित कर रक्खा और प्रभु उस का प्रकाश है और जातिगण जिन्हों ने मुक्ति पाई है उस के प्रकाश मे फिरेंगे और पृथिवी के राजा अपनी महिमा और अपनी प्रतिष्ठा उस मे लाते हैं और उस के फाटक दिन को कभी बन्द न होंगे क्योंकि वहां रात नहीं होसी फिर कोई श्राप न होगा और परमेश्वर और प्रभु का सिंहासन उस में होगा

और उस के सेवक उस की सेवा करेंगे और वे उस का स्वरूप देखेंगे और परमेश्वर उन की आखें से आसू पोछेगा और फिर मृत्यु शोक रोना पीटना और पीड़ा न होगी क्योंकि अगिली वस्तु जाती रही वहां रात न होगी और उन को दीपक और सूर्य्य के प्रकाश का प्रयोजन नहीं क्योंकि प्रभु परमेश्वर उस को प्रकाशित करेगा और वे सर्वकाल के लिये राज करेंगे और प्रभु ने उन के लिये धर्म्म का मुकुट धरा है ।

तब सत्यबिचारी यह वृत्तान्त सुनके अत्यन्त अचम्भित हुआ और बारतोलमा से पूछने लगा कि इस सुन्दर नगर में किस प्रकार के लोग रहते हैं ।

बारतोलमा ने उत्तर दिया कि जिस रीति मै ने अभी मंगलसमाचार की पुस्तक की बाते कही हैं इस कारण कि ये प्रतीति के योग्य हैं इसी रीति फिर कहूंगा कि उस सिंहासन की चारों ओर से बहुत से दूतों का और जीवते प्राणियों का और प्राचीनो का शब्द सुना जाता है और उन की गिन्ती कोटिन पर कोटिन सहस्रों पर सहस्रो है और उन का शब्द ऐसा है जैसा बहुत पानी का शब्द जैसा महा गर्जन का शब्द और बीणा के बजानेवालो का शब्द और वे एक नया सा राग गा रहे हैं और कोई उन को छोड़ जो पृथिवी से मोल लिये गये है उस गीत को सीख नहीं सकता है और कोई अपवित्र घिन और झूठ कहनेहार उस नगर मे किसी रीति से प्रवेश न करेगा परन्तु केवल वे ही जो प्रभु के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं परन्तु धर्म्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य्य के तुल्य प्रकाशित होंगे ।

तब सत्यबिचारी फिर पूछने लगा कि तुम किस प्रकार से जानते हो कि कोई मनुष्य जो चाहे सो ऐसे स्वर्गीय सुख को अपने भाग में पा सकता है ।

बारतोलमा ने उत्तर दिया । यह तेजोमय अधिकार उन के लिये सिद्ध है जो उस को ग्रहण करने पर प्रसन्न हो क्योंकि मगलसमाचार में फिर लिखा है कि पवित्रात्मा और दुलहिन अर्थात् मसीहियों की मंडली कहते है कि आ और जो सुनता है कहे आ और जो प्यासा है आवे और जो कोई चाहे अमृतजल सेंत से लेवे । फिर प्रभु ने यह भी कहा है कि जो मेरे पास आता है मै उस को किसी भांति से निकाल न दूंगा । और यह भी कहा कि हे समस्त लोगो जो थके और बड़े बोझ से दबे हो मेरे पास आओ कि मैं तुम्हे सुख दूंगा मेरा जुआ अपने ऊपर लेओ और मुझ से सीखो क्योंकि मै कोमलमन और दीन हूं तो तुम अपने प्राण में सुख पाओगे । तब बारतोलमा ने कहा कि इसी लिये हम लोग इस राजमार्ग पर चलते हैं क्योंकि प्रभु ने इस मार्ग को इस अभिलाषा से बनवाया कि जो कोई इस सुन्दर राज मे अधिकार पाने चाहे सो इसी मार्ग से होके उसे पावे ।

तब हिन्दूमतसूर्मा बड़ी चेष्टा से कहने लगा कि यह वर्णन जो तुम करते हो मन बहलाने के लिये ठीक होवे तो होवे परन्तु हमारे शास्त्रो मे भी इस प्रकार का वृत्तान्त बहुत है हमारे यहा स्वर्ग के सात लोक हैं और उन मे समस्त प्रकार का सुखबिलास, और रागरंग उपस्थित है भला तो हिन्दू तुम्हारे स्वर्ग पाने की इच्छा से किस लिये अपने धर्म्म को छोड़के नये मार्ग पर चलने लगे । इस्से अधिक सात नरक भी है और इन मे से सब से भयंकर नरक उन लोगो के लिये सिद्ध है जो अपने बाप दादो के धर्म्म से भ्रष्ट हो जाते है ।

यह बात सुनते ही मसीहदास बोल उठा कि हे मेरे मित्र एक समय मैं उन नरकों के डर से अत्यन्त व्याकुल

हो रहा था क्योंकि मेरे गुरु ने मुझ को उन का वर्णन करके निपट डराया और मै ने समझा कि वह शास्त्र जिस में यह वृत्तान्त है सो परमेश्वर का बचन है परन्तु अब मुझ को ज्ञान हुआ कि यह शास्त्र परमेश्वर का बचन नहीं है और यह सब वृत्तान्त स्वर्ग का और नरक का सर्वथा बनावट और मनमता है इस लिये उस को छोड़ देना मेरी समझ में बहुत उचित और भला है । क्योंकि परलोक में बनावट की बात मेरे काम नहीं आवेगी और इस जीवन में भी बनावट और मिथ्या बात मन का भोजन नहीं हो सकती है ऐसी बात मन के लिये बिष ठहरती है और मन का भोजन केवल सत्य बात है । इस लिये मैं ने मसीही धर्म्म को ग्रहण किया और इस राज-मार्ग पर यात्रा करता हूं क्योंकि मुझे निश्चय है कि परम-गति का सत्य मार्ग केवल यही है ।

तब हिन्दूमतसूर्मा ने क्रोध की दृष्टि से मसीहदास को देखके उससे कहा कि तुम तो भले मनुष्य हो जो इस रीति से हमारे शास्त्रों को हलका करते । अब कृपा करके बत-लाओ कि तुम किस प्रकार से जानते हो कि हमारा शास्त्र बनावट और मिथ्या है और मसीही शास्त्र सत्य है ।

मसीहदास ने बड़ी नम्रता के साथ उत्तर दिया कि हे मेरे मित्र मेरी इस बात से अप्रसन्न मत हूजियो क्योंकि मैं तुम को दुःख देने नहीं चाहता हूं मै ने तो बड़ी अभि-लाषा से और बड़े यत्न करके और बड़ा कष्ट उठायके सत्य बात का खोज किया और अब मेरा आसरा निश्चय है कि परमेश्वर ने दया करके सत्य को मुझ पर प्रगट किया है सो अब मेरी इच्छा केवल यह है कि अपनी सामर्थ्य भर सत्य बात को प्रगट करूं । पहिले तो हिन्दू शास्त्रों के विषय मे अनेक प्रकार से बड़े बड़े सन्देह मेरे मन में

आ गये कि यह परमेश्वर का बचन नहीं है क्योंकि वे आपस में बिरुद्ध हैं और उन में बहुतेरी ऐसी बातें हैं जिन से किसी का मन नहीं सुधरेगा और उन की शिक्षा से पाप काटने का उपाय मुझ को नहीं मिला। परन्तु एक पुस्तक के पढ़ने से जिस का नाम सत्यमतनिरूपण है मुझ को निश्चय हुआ कि यह शास्त्र परमेश्वर का बचन नहीं है उस पुस्तक मे इस प्रकार का वर्णन लिखा है कि जिस शास्त्र मे परमेश्वर के प्रसिद्ध गुण नहीं मिलते हैं वह शास्त्र परमेश्वर का बचन नहीं होगा। अब थोड़ा ध्यान कीजिये कि परमेश्वर के प्रसिद्ध गुण कैसे हैं पहिले परमेश्वर सम्पूर्ण शुद्ध और निर्दोषी है क्योंकि समस्त शुद्धता जो सृष्टि में पाई जाती है निश्चय करके किसी आदि कारण से निकली होगी इस लिये अवश्य है कि समस्त शुद्धता ईश्वर ही मे जो आदि कारण है उपस्थित हो। फिर इस आदि कारण से यह शुद्धता भिन्न नहीं हो सकती है क्योंकि जो अनादि और स्वयंभू है किसी दूसरे जीवते के अधीन नहीं हो सकता है और न किसी काम से जो वे करते उस के गुणों का बिगाड़ हो सकता है। फिर अधिक उस के उस आदि ब्रह्म के सब ही गुण निःसीम हैं और समस्त सृष्टि के गुणो की सीमा है क्योंकि उस आदि कारण ने जिस्से सृष्टि के गुण निकलते हैं अपने सम्पूर्ण गुणो मे से केवल एक अंश ही सृष्टि को दिया है। परन्तु उस ईश्वर को जो स्वयंभू है किसी दूसरे के गुण प्राप्त नहीं हुए क्योंकि वह आप समस्त प्राणी और जीवों का मूल है इस लिये वह स्वयंभू परमेश्वर सर्वथा गुणवान् और निर्दोषी अनादि सर्वशक्तिमान सर्वज्ञानी और पवित्र दयावान् और भला होगा। फिर मसीहदास ने कहा यही वह ब्रह्म है जिस का हम बुद्धिद्वारा खोज करते हैं कि

उस का भजन करे इस लिये कि उस के गुण जो देखने में नही आते अर्थात् उस को अनादि शक्ति और ईश्वरता संसार की उत्पत्ति से उस के कामो पर विचार करने से ऐसे स्पष्ट जाने जाते है कि जिन्हों ने प्रत्यक्ष ईश्वर को छोड़ा वे निरुत्तर हैं । फिर भी यह कहा कि अब थोड़ा ध्यान कीजिये कि हिन्दू शास्त्रो मे परमेश्वर का कैसा वर्णन है पहिले ब्रह्म होके वह निर्गुण है अर्थात् उस का कोई गुण नही है परन्तु वह जिस का कोई गुण नहीं है सो अभाव होगा अथवा उस का होना अत्यन्त असम्भव होगा और यह बात किसी बुद्धिवाले की समझ मे नही आ सकती है कि वह जिस का कोई गुण नही है किस रीति से जीवता हो क्योंकि केवल अपने गुण से कोई वस्तु जानी जाती है । फिर जब सगुण हुआ तो माया के वश मे आ गया अर्थात् माया उस की स्वामिनी बन गई सो यह कैसा परमेश्वर है जो दूसरे के अधीन हो सकता है उस का स्वामी तो परमेश्वर ठहरा । फिर जब सगुण हुआ तो तीन गुणो का वर्णन है जो उस मे समा जाते हैं अर्थात् सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण अब ध्यान कीजिये कि रजोगुण और तमोगुण कैसे हैं क्या ऐसे गुण निर्दोषी पवित्र सर्वज्ञानी दयावान् परमेश्वर मे व्याप्त हो सकते हैं । इस के अनुसार त्रिदेव का वर्णन जो शास्त्रो मे लिखा है और अवतारों का सम्पूर्ण वृत्तान्त भी रज और तमोगुणो के कर्मों से परिपूर्ण हैं । मै तुम को दुःख देने नही चाहता हूं इस लिये उन अवतारो और उन देवताओं की कथाओं मे जो जो कर्मों का वर्णन लिखा है नही बतलाता हूं परन्तु तुम भली भांति जानते हो कि उन में ऐसी ऐसी बाते लिखी हैं जिन के सुन्ने से भी भला मनुष्य लज्जित होता है सो मै तुम से पूछता हूं कि ऐसी बाते किस रीति

से परमेश्वर की हो सकती है और वह शास्त्र जिस में परमेश्वर का ऐसा वर्णन मिलता है जो परमेश्वर का वचन क्योंकर हो सकता है। परन्तु मसीही धर्म्मपुस्तक में स्वयंभू परमेश्वर का ऐसा वर्णन मिलता है जिस की ढूंढ़ में हम बहुत काल से थे जो पिता और मुक्तिदाता पूर्ण प्रतापी कृपा से भरा हुआ और पापों से घिन करता है तौभी पापों को जो उस पर विश्वास लाता प्रेम करता है और अपनी अपार बुद्धि से कृपा और न्याय सच्चाई और कुशलता का आपस मे मिलानेवाला है।

तब सत्यविचारी बोला मैं तो बहुत काल से इस बात को जानता हूं कि मूर्त्ति जिन को हम लोग पूजते हैं कुछ नहीं हैं परन्तु जो हम उन्हे छोड़ देवे तो हमारी स्त्रियां और हमारे पण्डित हम को क्या कहेंगे हमारी अवस्था अपने लोगों के बीच काटनी मन्द भाग्य के साथ होगी।

तब मसीहदास ने कहा। हे मेरे भाई आयु अति अल्प है परन्तु परलोक बहुत लम्बा है और इस प्रकरण मे हमारी धर्म्मपुस्तक मे यों लिखा है कि मनुष्य को क्या लाभ होगा जो वह समस्त जगत को वश में लावे और अपने प्राण को गंवावे अथवा मनुष्य अपने प्राण की सन्ती क्या देगा। उन यात्रियों ने उस को शिक्षित करके कहा कि अपने आत्मा की अनन्त भलाई को केवल अपने संसारी मित्रों के प्रसन्न करने के लिये बिगाड़ मत डालो उस से पहिले तो यह विचारो कि मै क्या करता हूं क्योंकि वह मनुष्य जिस का मन सच्चे परमेश्वर से मिलाप नहीं रखता है उस की भयानक दशा है। और उन्हों ने उसे यह भी निश्चय दिलाया कि सम्पूर्ण पृथिवी पर केवल मसीही धर्म्म है जिस मे मुक्ति का यथार्थ उपाय

मिलता है वा मनुष्य के आत्मिक अभिलाष पूरा करनें के लिये सर्व प्रकार योग्य है ।

हिन्दूमतसूर्मा ने कहा हम यह सुनें चाहते हैं कि तुम और किन प्रमाणों से निश्चय करते हो कि हमारा धर्म्म सच्चा है क्या तुम्हारा धर्म्म हमारे धर्म्म से निश्चय करके नूतन नहीं है ।

धारतोलमा ने उत्तर दिया । हमारा धर्म्म अर्थात् मसीही धर्म्म हमारी धर्म्मपुस्तकों से जाना जाता है कि संसार की सृष्टि से है ।

तब हिन्दूमतसूर्मा ने कहा हम ने सुना है कि मसीहियों ने अपनी धर्म्मपुस्तकों को बिगाड़ डाला है ।

धारतोलमा ने उत्तर दिया कि तुम ने यह बात महम्मदियों से सुनी होगी और वे इस लिये यह कहते हैं कि उन की धर्म्मपुस्तक में शिक्षा है कि मसीही धर्म्मपुस्तक परमेश्वर का वचन है । फिर जब मसीही धर्म्मपुस्तक से महम्मदियों का धर्म्म सर्वथा खण्डित होता है तो कहते हैं कि मसीहियों ने अपनी पुस्तकों को बिगाड़ डाला है परन्तु यह हो नहीं सकता क्योंकि हमारी धर्म्मपुस्तकों का पहिला भाग यहूदियों के हाथ में है जो मसीहियों से शत्रुभाव रखने मे प्रसिद्ध हैं और तुम यह विचार नहीं करते कि जो मसीहियों ने उस पुस्तक को बिगाड़ डाला होता तो क्या यहूदी उस बात के बादी होके उन चूकों को सभों की समझ पर प्रगट नहीं करते । दूसरा भाग अर्थात् इंजील मसीहियों की भिन्न भिन्न मण्डलियों के हाथों मे है जो कई एक रीतियों के कारण आपस में मेल नहीं रखते हैं वे झटपट एक दूसरे की भूल को जो उन्हों ने मूल पुस्तक में किई होती पकड़ लेते फिर इस धर्म्मपुस्तक की लिखावटें जो पूर्वकाल से उपस्थित हैं

उन लिखावटो से जो अब हमारे पास हैं समान मिलती है ।

मसीहदास ने कहा । इन धर्म्मपुस्तको की सच्चाई पर एक दूसरा प्रमाण यह है कि उन प्राचीन रीतियो का जो मनुष्यजाति मे पूर्वकाल से प्रसिद्ध हैं समाचार इन्हीं पुस्तकों से मिलता है जैसा हम मूसा की पुस्तकों में पढ़ते हैं कि बलिदान करने की व्यवस्था ठहराई गई हैं । यह रीति एक एक जाति मे जो सूर्य्य के नीचे हैं ओर जो मसीही नही हैं आज तक प्रसिद्ध हैं इन बलिदानो का मूल प्रयोजन यह था कि उस बड़े बलिदान का जो मनुष्य के पापों के लिये एक बार होने को था अर्थात् ईसा के बलिदान होने का समाचार देवे । यद्यपि अब उस चलन को लोगों ने उलटा समझके बिगाड़ डाला है तोभी वह हमारे प्राचीन पुस्तकों की सच्चाई पर एक दृढ़ प्रमाण है ओर हमारे पवित्र धर्म्म की नित्यता पर एक साक्षी है ।

बारतोलमा ने चाहा कि बहुत सी भविष्यद्वाणियों का जो धर्म्मपुस्तक में लिखी गई हैं वर्णन करे वे बहुधा सहस्त्रों बरस पहिले से लिखी गई ओर अब तक पूरी होती जाती हैं ओर उस के साथ यह भी कहा कि उन बातों से प्रगट होता है कि निदान को संपूर्ण मनुष्यजाति एकही मण्डली मे मिलेगी ओर उस मण्डली का प्रभु एकही होगा । परन्तु हिन्दूमतसूर्मा ने ओर सुन्ने न चाहा इस लिये शीघ्र उठ खड़ा हुआ ओर सत्यबिचारी को बुलायके कहा कि आओ मित्र हम इन पाखण्डियों को जाने देवें निःसंशय नरकों का भाग इन को लिखा होगा हम इन से अलग होवें नही तो इन की बात सुन्ने से हम भी भ्रष्ट हो जायेंगे ।

इस पर सत्यबिचारी ने कहा कि हे मित्र मेरी समझ में हम ने इन की बातों का यथार्थ उत्तर नही दिया है

और जो मैं सच कहूं तो यथार्थ उत्तर देना ऐसा सहज काम नही होगा और यह ऐसी बात है जो क्रोध और क्रूरता से बन्द नही होगी इस को खण्डित करने के लिये ठीक और प्रमाणिक बात अवश्य है इस के बिना निःसन्देह यह फैल जायगी क्योंकि सत्यता का बल और परमेश्वर की सामर्थ्य इस में देख पड़ती है ।

हिन्दूमतसूर्मा अपने मित्र की ये बातें सुनके अत्यन्त बिस्मित हुआ और सत्यबिचारी से कहने लगा कि अरे क्या तुम भ्रष्ट हो गये क्या जाने तुम इन के संग इस यात्रा पर चलने चाहते हो ।

सत्यबिचारी ने यह उत्तर दिया कि नही मैं इन के संग नही जाता मैं तुम्हारे संग आऊंगा परन्तु इस बात को थोड़ा और जांचूंगा और बिचार करूंगा । तब हिन्दूमतसूर्मा चला गया और सत्यबिचारी ने यात्रियों से पूछा कि इस नये समाचार का कुछ और बृत्तान्त कहां से पाऊं ।

मसीहदास ने उस को बतलाया कि इस राजमार्ग के सिरे पर मंगलपुर गांव मे प्रभुदास के पास जाओ तो वहां इस का पूरा बृत्तान्त मिलेगा । और यह भी कहा कि विशेष करके परमात्मा से विन्ती और प्रार्थना करते रहो कि वह निश्चय तुम्हारी अगुवाई करेगा । तब सत्यबिचारी अपने मित्र के पीछे चला गया ।

तब मै ने स्वप्न मे देखा कि जब सत्यबिचारी अपने मित्र के पीछे दौड़ा जाता था तो अविश्वासी जो अपने भाई के पास मे बैठ रहा था उठके भाई से कहने लगा कि अब भाई तुम कहो कि क्या इन मूर्खों के संग चलते रहोगे अथवा मेरी सगति मे रहोगे ।

चंचलविश्वासी ने यह उत्तर दिया कि हे मेरे भाई ये

तो मूर्ख नहीं हैं ये बड़े ज्ञानी बलवन्त और सत्य पुरुष हैं और इन की बातें सुन्ने से मेरा बिश्वास आगे से बहुत दृढ़ हो गया है हम दोनों के लिये बहुत भला होगा कि इन की संगति मे रहें।

तब अविश्वासी ने कहा कि तुम इन के संग मे रहो मै नही रहूंगा मैं उस मनुष्य के पीछे जाऊंगा जो अभी चला गया है क्योंकि वह बड़ा मनुष्य और प्रधान है। यह कहके अविश्वासी हिन्दूमतसूर्मा के पीछे दौड़ गया।

तब मै ने स्वप्न मे देखा कि अपने भाई के भाग जाने से चंचलबिश्वासी अत्यन्त दुःखित होके रोने लगा परन्तु मसीहदास और बारतोलमा ने उस्से ढाढ़स की बाते कहके समझाया कि हे भाई ऐसा शोकित मत होओ अब तो इस मे यात्रा के लिये तुम्हारा लाभ होगा प्रभु पर विश्वास रक्खो वह तो हम सभों का बड़ा भाई है और वह तुम को कभी नही छोड़ेगा। तब चंचलविश्वासी तनिक धीरजमान होके उन के संग चलने लगा और मै ने देखा कि वह आगे से अधिक दृढ़ता के साथ चलता था।

तब मै अविश्वासी की ओर देखने लगा कि उस को क्या होगा और देखो तो हिन्दूमतसूर्मा क्रोध के मारे बड़ी शीघ्रता करके चला गया था ऐसा कि जब सत्यविचारी उस का पीछा करने लगा वह बहुत दूर तक पहुंच गया था और उस्से मिलने के लिये सत्यविचारी को दौड़ने पड़ा। फिर इस के पीछे जब अविश्वासी अपने भाई से बात करता था तो वे दोनों और भी दूर तक चले गये थे और जब अविश्वासी उन का पीछा करने लगा तो इस डर से कि क्या जाने मैं उन के साथ नही पहुंचूंगा बड़े बल से दौड़ने लगा और असावधान होके थोड़ी दूर पर ठोकर खाके गिर पड़ा और गिरते समय उस का सिर

उस पत्थर की भीत पर जो मार्ग की दोनों ओर बनी थी जा लगा और धक्का के मारे फट गया और वह कुभागी अत्यन्त बड़े दुःख के साथ निराले मे मर गया । परन्तु मैं अपने स्वप्न मे बहुत बेर लों ध्यान करते करते उस की लोथ को देखता रहा और यह समझा कि जो यात्री इस मार्ग से होके आवे वे देखेगे कि इस का मुख स्वर्गीय सुख-स्थान की ओर से फिरा है और उन को ज्ञान होगा कि यह अविश्वासी था । जब मै ने इस बात पर बड़े शोक के साथ भली भांति ध्यान किया था तो उन तीन यात्रियों का स्मरण जो राजमार्ग से होके आगे बढ़ गये थे मेरे चित्त में आया और मै ने चाहा कि इन को फिर देखूं परन्तु वे ऐसी दूर आगे बढ़ गये थे कि मै उन को देख न सका और देखते देखते मेरे स्वप्न का अन्त हुआ और मैं नींद से जागा । तब मै ने अपने स्वप्न का वृत्तान्त इस पुस्तक मे लिख लिया क्योंकि मेरी यह समझ थी कि यद्यपि यह एक स्वप्न तो है तथापि दृष्टान्त की रीति इस मे सत्य और यथार्थ बाते वर्णित होती है और जो बुद्धिमान हिन्दू इस को पढ़ेंगे तो निःसन्देह इस का अभिप्राय समझेंगे । इति ॥

इति मुमुक्षुवृत्तान्तः समाप्तः ।

PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS